विषय सूची

आलेख संख्या		विषय	पृष्ठ संख्या
1	1.	महाश्वेता देवी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	2
	2.	‘जंगल के दावेदार’ उपन्यास का कथानक	12
	3.	‘जंगल के दावेदार’ उपन्यास में सामाजिक चेतना	20
	4.	‘जंगल के दावेदार’ के प्रमुख पात्र	32
2	5.	तकषी शिवशंकर पिल्लै का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	46
	6.	‘चेम्मीन’ उपन्यास का परिवेशगत अध्ययन	55
	7.	‘चेम्मीन’ में अभिव्यक्त मिथ एवं भाषा	66
	8.	‘चेम्मीन’ उपन्यास के प्रमुख चरित्र	74
3	9.	भारतीयता की अवधारणा और ’गाइड’	86
	10.	’गाइड’ उपन्यास का वस्तु–विन्यास	97
	11.	’गाइड’ उपन्यास की सोद्देश्यता	120
	12.	’गाइड’ उपन्यास का शिल्प विधान	127

M.A Hindi
Course Code : Hin- 403
UNIT - I
Lesson No. 1
Semester - IV

महाश्वेता देवी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.0 रूपरेखा

1.1 उद्देश्य
1.2 प्रस्तावना
1.3 महाश्वेता देवी का व्यक्तित्व
1.4 महाश्वेता देवी का कृतित्व
1.5 सारांश
1.6 कठिन शब्द
1.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

1.1 उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययनोपरान्त आप–

– लेखिका के जीवन के विविध पहलुओं से परिचित हो सकेंगे।
– लेखिका के जीवन को प्रभावित करने वाले तत्वों को जान सकेंगे।
– लेखिका के रचना कौशल का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना

किसी भी रचना को पूर्ण रूप से समझने के लिए सर्वप्रथम उस रचना के सृजनकर्ता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानना व समझना आवश्यक होता है क्योंकि सृजनकर्ता का व्यक्तित्व उसकी कृति में झलकता है। वह अपने जीवन की घटनाओं व परिस्थितियों से प्रभावित होकर ही रचना की सृष्टि करता है। इसी उद्देश्य

से महाश्वेता देवी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की परख भी उनके द्वारा रचित उपन्यास 'जंगल के दावेदार' को समझने में सहायक सिद्ध होगी।

महाश्वेता देवी से पहले बांगला उपन्यास साहित्य में वस्तुवादी दृष्टि प्रखर रूप से नहीं मिलती। उपन्यासकर प्रायः उच्च मध्यवर्ग व शहरी परिवारों के पात्रों से कथासूत्र का निर्माण करते दिखते थे किन्तु लेखिका ने उपेक्षित, हाशिये पर स्थित जनजातियों को केंद्र में रखकर साहित्य रचना कर, नवीन स्वर का सूत्रपात किया। इन्होंने परम्परा से विपरीत अपने लिए नए मार्ग की स्थापना किस प्रकार की, उसका बोध इनके जीवन अनुभवों से मिल जाता है। इनके पिता स्वयं लेखक थे जिन्होंने अपनी लेखनी में निम्न तबके के पात्रों को स्थान दिया। इनके अतिरिक्त लेखिका के मामा, मौसी, चाचा भी कलाओं में सक्रिय तथा नाना जी आंदोलनकारियों के मुकदमें लड़ते थे। शांति निकेतन में शिक्षा ग्रहण करते हुए भी इन्होंने स्वाधीन इच्छा दायित्व बोध एवं सौंदर्य बोध की शिक्षा प्राप्त की। आरम्भ में यह रोमांस और प्रेम से परिपूर्ण आख्यान ही लिखती थीं किन्तु 1969 के बाद, आसपास के साम्यवादी रुझान तथा आदिवासी जीवन का प्रत्यक्ष दर्शन करने के उपरान्त इनकी लेखनी का लक्ष्य परिवर्तित हो गया।

1.3 महाश्वेता देवी का व्यक्तित्व

अविभाजित बांगलादेश के 'ढाका' जिले के 'नये भरेंगा' गाँव में एक मध्यमवर्गीय परिवार में महाश्वेता देवी का जन्म सोमवार 14 जनवरी 1926 ई. को हुआ। यह मनीष घटक एवं धरित्री देवी की प्रधान संतान थीं। उस समय इनके पिता मनीष घटक 25 वर्ष के और धरित्री देवी 18 वर्ष की थीं। महाश्वेता के पश्चात् उन्होंने आठ और सन्तानों को जन्म दिया। जिनके नाम हैं– शाश्वती, अनीश, आलोकितेश्वर, अपाला, शमीश, मैत्रेय, सोमा और सारी। बहु सन्तानों में पालित होने के उपरान्त भी लेखिका को माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी आदि का प्रेम मिला। बड़ी लड़की होने के कारण इन्होंने अपने छोटे–भाई बहनों की देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है किन्तु माता–पिता द्वारा एक के बाद एक संतान को जन्म देने के कारण इनके मन में गुप्त रूप से वेदना का संचार भी हो रहा था।

बीसवीं सदी के आरम्भिक काल में गाँव में रहने वाले शिक्षित बंगाली समाज के परिवेश में अपनी आमदनी को सुस्थिर किए बिना ही बच्चों की शादी कर देना, संयुक्त परिवार में रहना तथा विवाह पश्चात् लगातार मातृत्व के बोझ को ढोते रहना आम बात थी। लेखिका के माता–पिता मध्यवर्गीय सभ्य–शिक्षित समाज में रहने के उपरान्त भी उपरोक्त बंगाली समाज के परिवेश से बाहर नहीं थे। इनके पिता एक कवि और उपन्यासकार थे और माता भी लेखिका के साथ–साथ एक सामाजिक कार्यकर्ता थी। पिता का व्यक्तित्व खुशमिजाज और फक्कड़पन का मिला–जुला रूप था। वह अपने परिवार के सदस्यों को स्वरचित नाटकों में अभिन्य कराते, बहनों को गाने एवं चित्र बनाने हेतु प्रोत्साहित करते। माँ के साथ तो उनका बहुत ही मित्रतापूर्ण संबंध था। लेखिका के पिता ने बच्चों का पालन–पोषण तो पूर्ण स्नेह से किया किन्तु शिक्षा के महत्व में उनकी उदासीनता साफ दिखाई देती है। अपनी आत्मजीवनी में लेखिका ने इस सत्य को स्वीकारा है– ''तुतुल (पिता मनीश) कौन क्या पढ़ता है या पढ़ेगा या वह पढ़ता भी है या नहीं– ये सब चिन्ता करने का दायित्व अपने पूरे

जीवनकाल में कभी स्वीकार नहीं किया। यदि करते तो हमारा जीवन इस तरह ऊबड़–खाबड़ नहीं होता।'' इसके अतिरिक्त मनीष घटक शराब के भी बहुत आदी थे किन्तु इनके व्यक्तित्व के सारे अवगुणों को इनकी साहित्य लेखन की प्रतिभा ने छिपा लिया। वह बांगला साहित्य के इतिहास में पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने निम्न स्तर पर जीवन यापन करने वाले चोर, पाकेटमार, बस्ती में रहने वाले लोगों के जीवन को पूरी दक्षता एवं समग्रता से चित्रित किया। लेखिका के पितृवंश व मातृवंश दोनों तरफ के पुरखों में कोई भी आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं था। किन्तु बौद्धिकता और मानवीयता उनकी उपलब्धि रही है। इनके दादा सुरेश चन्द्र घटक चाहे गरीब पर विद्वान ब्राह्मण के पुत्र थे। शिक्षा के बल पर बंगाल सिविल सर्विस में एस.डी.ओ. हुए तथा एफ.ए. पास करने के बाद 18 वर्ष की आयु में विवाह हो गया किन्तु नये भरेंगा का घर उन्होंने अपनी नौकरी के पैसों से बनवाया। घर में अलग से पूजाघर था जहाँ देवी–देवताओं की पूजा की जाती थी। वहीं नाना नरेन्द्रनारायण चौधरी पेशे से वकील थे किन्तु स्वदेशी आंदोलनकारियों के विशेष समर्थक रहे इसलिए अमीरों के मुकदमे न लेकर स्वदेशी आंदोलनकारियों के मुकदमें ही लड़ते थे। नाना–नानी की प्रेरणा एवं निजी जातीयता बोध के चलते लेखिका स्वदेश प्रेमी कवि गोविन्ददास की सहायता करती तथा 'जयश्री' नामक स्वेदशी समाचार पत्र, दीपांलि संघ, नारी शिक्षा संघ जैसे स्वदेशी प्रतिष्ठानों के साथ भी उनका प्रत्यक्ष और घनिष्ठ संबंध था।

शिक्षा :–

इनकी स्कूली शिक्षा ढाका जिले के 'इड़ेन मांटेसरी स्कूल' से हुई । 1936 में इन्हें पाँचवी कक्षा में रविन्द्रनाथ के शांतिनिकेतन स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा गया। लेखिका को शांतिनिकेतन के असीम प्राकृतिक सौन्दर्य के मध्य स्वाधीनता और मुक्ति के उल्लास के साथ विकसित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसने इनके जीवन एवं व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डाला। शांतिनिकेतन के संदर्भ में बताते हुए ये कहती हैं कि स्वाधीन इच्छा और स्वभाव प्रणवता में अभिव्यक्ति की आज़ादी, सख्त एवं दायित्वपूर्ण मनुष्य होने की शिक्षा तथा व्यक्ति के भीतर निहित सौन्दर्य बोध को जागृत करना यहाँ की मूल विशेषताएँ थीं। यहाँ इन्होंने क्षितीशचन्द्र राय, हजारीप्रसाद द्विवेदी, सुधीर गुप्ता, कृष्णा कृपलानी, सुधीर राय के सान्निध्य में शिक्षा ग्रहण की। सन् 1938 के अन्त में माँ की बीमारी और परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ने के कारण इन्हें शांतिनिकेतन से वापिस बुलाकर 1939 में कलकत्ता में 'वेलतल्ला बालिका विद्यालय में भर्ती करवाया। इसी स्कूल से इन्होंने 1942 में मैट्रिक पास की। इसके बाद 1944 में 'आशुतोष कालेज' से इन्टरमीडिएट, 1945–46 में शांतिनिकेतन से अंग्रेजी भाषा में बी.ए. और फिर कोलकत्ता विश्वविद्यालय से सन् 1946 में अंग्रेजी साहित्य में मास्टर की उपाधि हेतु दाखिला लिया किन्तु हिन्दु–मुस्लिम दंगों एवं लूट–पाट के चलते विश्वविद्यालय बंद हो गया जिस कारण लेखिका की शिक्षा में बाधा उपस्थित हो गई। शिक्षा के प्रति इनकी रूचि ने इन्हें हार नहीं मानने दी। विवाह हो जाने के पश्चात् पारिवारिक दायित्व के चलते चाहे इनकी शिक्षा में कुछ वर्षों का अन्तराल आ गया लेकिन फिर भी इन्होंने 1963 में कोलकत्ता विश्वविद्यालय से प्राईवेट परीक्षार्थी के रूप में एम.ए. अंग्रेजी की उपाधि प्राप्त की।

वैवाहिक जीवन :–

10 फरवरी 1947 में बांगलादेश के विख्यात जननाट्य (गणनाट्य) आंदोलन के प्रसिद्ध नाट्यकार

विजन भट्टाचार्य (बिजोन) से महाश्वेता देवी की शादी हो गई। डेढ़ साल के भीतर ही इन्होंने 23 जून 1948 में बेटे नवारुण भट्टाचार्य को जन्म दिया। 1948 के ही मार्च महीने में भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के अवैध घोषित होने के कारण सांस्कृतिक मोर्चे पर क्या करें क्या न करें, स्थिति से सारा माहौल हतभ्रमित था। इसी वर्ष गांधी की हत्या से भी यह दम्पत्ति व्यथित होता है। यहाँ तक कि गांधी के शोक में निकाली गई मौन पदयात्रा में भी विजन–महाश्वेता भाग लेते हैं। नये सांसारिक जीवन को उत्कंठा ने ग्रस लिया था। सम्पूर्ण देश के लोगों की भाँति इस दम्पत्ति की मनःस्थिति खराब थी। विवाह पश्चात् लेखिका को आर्थिक विपन्नता का सामना भी करना पड़ा जो इनके दाम्पत्य जीवन को प्रभावित कर रहा था किन्तु इस आर्थिक विपन्नता के मध्य भी आनंदमय जीवन यापन और स्वप्निल आशावाद के परिपोषण से जीवन प्राणवन्त हो जाता, जो इनके जीवन की उपलब्धि मानी जा सकती है। सन् 1962 में इनका विवाह–विच्छेद हो गया जिसका महाश्वेता देवी ने कोई स्पष्ट कारण नहीं बतलाया है किन्तु 27.07.1997 में पश्चिम बंगाल के विख्यात दैनिक 'आनंद बाजार पत्रिका' में एक अज्ञात प्रतिवेदन में लेखिका के विवाह–विच्छेद के संदर्भ में लिखा गया कि ''विशाल परिवार, रुग्ण सास–ससुर, पाँच भाई– तीन बहनों का यह संसार, बाहर फुट के तीन कमरों में रहता था। इसी के बीच खाना–पकाना, कपड़े धोना, बच्चे की देखभाल करना तथा इसी के साथ अतिव्यस्त महाश्वेता को यहाँ–वहाँ नौकरी खोजना।... पहली बार जब पति का घर त्यागकर महाश्वेता आई, तो लड़के के लिए मन बहुत रोया था। विजन भट्टाचार्य के ऊपर किसी तरह का कोई क्षोभ नहीं था। ...महाश्वेता के लिए वे संकट से विदीर्ण दिन थे। उस सुप्रतिष्ठित परिवार की उस सुकन्दा को जीवन असहनीय लगा था क्या?''

इनका दूसरा विवाह असित गुप्त से हुआ था। कहा जाता है कि 1953–54 में 'झाँसी की रानी' के लिए इतिहास अध्ययन के दौरान इनका असित गुप्त के साथ घनिष्ठ संबंध रहा था किन्तु यह विवाह भी सफल नहीं रहा और 1976 में असित से भी उनका विवाह–विच्छेद हो गया।

कार्यस्थलीय जीवन :–

महाश्वेता देवी का कार्यस्थलीय जीवन भी अत्यन्त संघर्षपूर्ण रहा था क्योंकि आर्थिक रूप से सबल होने के लिए इन्होंने समय अनुरूप अनेक नौकरियाँ परिवर्तित की। 1948 में इन्होंने दक्षिण कलकत्ता के भवानीपुर में स्थित 'पद्मपुकूर इंस्टिट्यूशन' के प्रातः विभाग में शिक्षिका की नौकरी अर्जित की। इस समय यह श्यामबाज़ार के मोहनलाल स्ट्रीट में किराए के मकान में रह रही थीं। परिवार की सुनिश्चित आय न होने के कारण यह स्कूल मास्टरी में कम वेतन होने के बावजूद किसी सम्मानजनक सुनिश्चित आय की तलाश में लगी थीं। 1949 में यह केन्द्रीय सरकार के डेपुटी एकाउंटेंट जनरल, पोस्ट एवं टेलीग्राफ विभाग में अपर डिवीजन क्लर्क के पद पर नियुक्त हुईं। अपने पारिवारिक वातावरण में इन्होंने कम्युनिस्टों पर प्रशासनिक अत्याचार बहुत देखे हैं और यह स्वयं भी इस दंश को झेल चुकी हैं। क्योंकि 1950 में इन्हें मात्र कम्युनिस्ट होने के संदेह पर नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। 1957 में इन्होंने 'रमेश मित्र बालिका विद्यालय' में शिक्षिका के रूप में कार्य कर पूणः नौकरी के क्षेत्र में पांव रखा किन्तु यहाँ भी यह मात्र एक वर्ष ही कार्य कर सकीं। 1963 में अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् 1964 में इनकी यादवपुर के 'विजयगढ़ ज्योतिषराय

कॉलेज' में अंग्रेजी व्याख्याता (लेक्चरार) के पद पर नियुक्ति हुई। इस नौकरी में वेतन (सेवातृत्ति) बहुत ही कम और अस्थिर (अनिश्चित) था। 1984 में इन्होंने लेखन पर ध्यान केंद्रित करने हेतु सेवानिवृत्ति ले ली।

समाजसेविका :–

अधिकांशतः लेखक या कलाकार स्वयं को राजनीतिक विवादों से विलग ही रखते हैं। राजनीतिक समझ रखने के उपरान्त भी राजनीतिक बयानबाजी से दूर रहते हैं किन्तु महाश्वेता देवी रचनाकार से पहले एक सामाजिक कार्यकर्ता थीं जिस समय पश्चिम बंगाल में वामपंथी पार्टियों की सरकार थीं और लंबे समय तक सत्ता की बागडोर उनके हाथ रहने के उपरान्त भी लेखिका को लगा कि वे अच्छा काम नहीं कर रहे हैं तो यह विपक्ष के मंच पर जा चढ़ीं। सत्ता के विपरीत खड़े होकर इन्होंने इस सरकार को यह एहसास दिलाने का प्रयत्न किया कि लोकतंत्र में लोक सर्वेपरि होता है और सरकारें आनी–जानी।

महाश्वेता देवी अधिसूचित, जनजातियाँ, आदिवासी, दलित, वंचित समुदाय की सहायता हेतु सदैव तत्पर रही हैं। वर्गभेद की भावना तो बचपन से ही इनके मन में नहीं मिलती। 1938–44 की काल–अवधि में इनका परिवार कलकत्ता के बालीगंज भवानीपुर इलाके के अभिजात मुहल्ले में किराये पर रहता था। इसी समयावधि में एक बार इन्होंने भ्रांतिवश अपना नाम तपशिली जाति–उपजाति (Scheduled castes, Scheduled Tribe) की छात्राओं की सूची में लिखवा दिया। जिसके लिए इन्हें परिवार से फटकार भी मिली। 1941 में बंगाल के श्रेष्ठ साहित्यकार रविन्द्रनाथ की मृत्यु ने इन्हें विचलित कर दिया। विश्वभारती के लिए कुछ करने की इच्छा से इन्होंने अपने स्कूल के विद्यार्थियों से चंदा इक्ट्ठा करके 32 रुपये विश्वभारती के आचार्य कृष्ण कृपलानी को मनिआर्डर किया। 1942 में यह 'दक्षिण कलकत्ता किशोर बाहिनी संगठन की सदस्य बनी जिसके अधिष्ठाता सुकांत भट्टाचार्य कम्युनिस्ट पार्टी के आदर्शों पर चलने वाले किशोर कवि थे। 1942 में ही यह मैट्रिक पास करके आशुतोष कॉलेज में भर्ती हुई यहाँ इनका छात्र फेडरेशन (S.F) द्वारा परिचालित छात्री संसद के कार्यकर्ताओं में गीता राजचौधरी, अलका मजुमदार और सुजाता बसु प्रमुख थीं। 1943 में जब बंगाल में खाद्याभाव के चलते अकाल की स्थिति पनप गई तो इस स्थिति ने लेखिका को विचलित कर दिया। वह स्वयं भी घर में दाल–भात के अतिरिक्त कुछ नहीं खाती थीं। इसी समय वह 'पीपल्स रिलीफ कमेटी' संगठन की सदस्य बनी और अनेक स्वेच्छासेवी कार्य किए। इस दौरान वह अलसुबह रेडक्रास के रसोईघर से खिचड़ी खरीदकर हाजरा पार्क पहुँचाती और भूख से विलख रहे लोगों में वितरण करती, छोटे बच्चों को दूध देती आदि कार्य इनके समाजसेवी होने के ही परिचायक है। अकाल का कारण साहुकारों द्वारा समस्त खादय पदार्थों को खरीदकर गोदामों में एकत्रित करना तथा अंग्रेजों का उत्तर–पूर्व भरत के रणक्षेत्रों में भोजन हेतु बड़ी मात्रा में खाद्यसामग्री इकट्ठी करना था। इसलिए लेखिका की सहानुभूति निम्न वर्ग के प्रति थी जो इन शोषकों के कारण मरण स्थिति में पहुँच चुका था। इसी का परिणाम है कि 1944 से लेखिका के व्यवहार में एक स्वाधीन युवती के लक्षण नज़र आए। राहतकार्य से वह कम्युनिस्ट पार्टी के भारी संगठनों की सदस्य के रूप में सामने आई। धीरे–धीरे कम्युनिस्टों के साथ इनकी घनिष्ठता और बढ़ती गई।

1965 में यह पलामू घूमने गईं। यहाँ आदिवासी जीवन से इनका साक्षात्कार हुआ। भारत के विभिन्न

प्रांतों में बसे आदिवासी जनजाति के लोगों के साथ आत्मीय होना इनके क्षत–विक्षत जीवन में सांत्वना का काम करता था। हमेशा दूसरों की समस्याओं के समाधान खोजने में व्यस्त दिखती थी।

1.4 महाश्वेता देवी का कृतित्व

महाश्वेता देवी वैसे तो बंगाल की थीं और उनकी मूल भाषा बांगला थी किन्तु अपनी लेखनी के कारण यह हर भाषा और समाज में एक सम्मानित हस्ती रही हैं। इन्होंने कम उम्र में ही लेखन कार्य आरम्भ कर दिया। विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं के लिए लघु कथाएँ लिखकर भी इन्होंने साहित्य क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'झाँसी की रानी' इनकी प्रथम गद्य रचना है जो 1955 में असीत गुप्त के सहयोग से विख्यात बांगला साप्ताहिक पत्रिका 'देश' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुई और 1956 में इसका प्रकाशन पुस्तक रूप में हुआ। यह इनकी श्रमसाद्धय रचना थी जिसके कारण इनकी विशेष प्रशंसा हुई। इस रचना की पृष्ठभूमि की तरफ देखा जाए तो ज्ञात होगा कि लेखिका ने इसके लिए कितना परिश्रम किया है। लेखिका के मझले मामा हितेन चौधरी बम्बई के फिल्म उद्योग से जुड़े थे। लेखिका के पति विजन भी उन्हीं के प्रयास से बम्बई गए। बम्बई में विजन की नियुक्ति 'नागिन' फिल्म के चित्रनाट्य लेखक के रूप में हुई। इसी दौरान महाश्वेता भी बेटे नवारुण को लेकर बम्बई आ गईं। यहाँ आकर इन्होंने बड़े मामा सचिन चौधरी की लाइब्रेरी से पुस्तकें पढ़ना आरम्भ किया। सिपाही विद्रोह पर अनेक पुस्तकें पढ़ते हुए उन्हें झाँसी की रानी के जीवन ने विशेष प्रभावित किया। वेतन कम होने के कारण विजन सपरिवार कलकत्ता लौट आए। यहाँ आकर लेखिका ने असित गुप्त की व्यक्तिगत लाइब्रेरी व राष्ट्रीय लाइब्रेरी से उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय इतिहास से सम्बन्धित ऐतिहासिक ग्रन्थ पढ़े। थोड़े समय में ही मराठी भाषा सीखी और 'पारासमिस' द्वारा मराठी में 'झाँसी की रानी' पर लिखी जीवनी का बंगला में अनुवाद किया। 1953 में झाँसी की रानी के भतीजे चिंतामणि तासे के साथ साक्षात्कार करके उस समय के अनेक तथ्य संग्रह किए। इसके बाद झाँसी के हर अभिज्ञता को ग्रहण करने हेतु झाँसी से ग्वालियर तक की पद यात्रा और बुंदेलखण्डी भाषा में रानी की वीरता सम्बन्धित लोकगीतों का संग्रह किया। वह कहती है, ''इसको लिखने के बाद मैं समझ पाई कि मैं एक कथाकार बनूँगी।''

1957 में इनका प्रथम उपन्यास 'नटी' हुमायूँ कबीर द्वारा सम्पादित 'चतुरंग' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। 1965 में वह पलामू घूमने गईं । यहाँ यह आदिवासी जीवन के सम्पर्क में आईं। आदिवासी जीवन और उनकी समस्याएँ लेखिका को सोचने पर बाध्य कर रही थीं। सम्भवतः 'जंगल के दावेदार' उपन्यास लिखने का बीज भी उनके अवचेतन में यहीं रोपित हुआ होगा। इससे पहले वह बंगाल के उच्च एवं मध्यवर्ग के शौकीन साहित्य प्रेमियों के लिए आत्ममुग्ध प्रेम पूर्ण आख्यान और उपन्यास लिख रही थीं जिनके नाम हैं– 'मधुरे–मधुर' (1958), 'युमना के तीर' (1958), 'एईटुकु आशा' (1959), 'तिमिर लगन' (1959), 'तारार आधार' (1960), 'रूपरेखा' (1960), 'बाइस्कोपेर बाक्स' (1960), 'लायलि आसमाने आयना' (1961), 'तीर्थशेसर संध्या' (1963), 'अमृत संचय' (1962), 'दिनेर पाराबारे' (1963), 'विपन्न आयना' (1961), 'बासस्टपे बर्सा' (1966), 'आधार मानिक' (1966) इत्यादि। इस समय तक पश्चिम बंगाल की सामाजिक और राजनैतिक दोनों स्थितियों में थोड़ा परिवर्तन आ चुका था। राजनीति में अनेक विभाजन हो चुके थे और वर्ग संघर्ष को देखते हुए लेखिका भी अपना मार्ग

खोज रही थीं उसमें 1969 में सफल हुईं। 1964 में कम्यूनिष्ट पार्टी सी.पी.आई. परिवर्तित होकर सी.पी.आई.(एम) हो गई। 1967–69 के सामाजिक–राजनैतिक संकट के परिणामस्वरूप उदित 'नक्सल' पंथ ने लेखिका को आकृष्ट किया। भ्रष्ट राजनीतिक तंत्र ने युवाओं के भीतर जो आवेग उत्पन्न किया था उसी के वशीभूत होकर उन्होंने अपनी लेखनी में नक्सलवादियों के चैतन्य एवं निरीक्षण को लाना आरम्भ कर दिया। गांव भारत के हृदयस्पंदन का केन्द्र था और इसी गांव के हतभाग्य, निर्वासित, अवमानित एवं अवहेलित समाज को उन्होंने अपनी लेखनी का विषय बनाया। आदिवासी डोमे, चंडाल आदि के बीच सहानुभूतिपूर्ण हृदय लेकर जो कहानियाँ वह इनके जीवन से संग्रहित कर पाई उसे ही लेखनी में उतार दिया। इनके जीवन को गहराई से समझने के लिए यह पुरुलिया बाकुड़ा, मेदनीपुर, बीरभूम से लेकर सिंहभूम, हजारीबाग, रांची तक के प्रत्येक ग्राम आदिवासी से परिचित हुईं। इन आदिवासियों के मध्य रहकर उनके समान जीवन व्यतीत किया और फिर व्यक्तिगत प्रयास से उनकी समस्याओं को समाज के सामने लाने का प्रयत्न भी किया। बांगला साहित्य के श्रेष्ठ कवि व समालोचक अध्यापक शंख घोष लेखिका के विषय में कहते हैं कि ''...भद्र समाज की रीति–नीति न मानने वाली, वही एकमात्र बोल सकती हैं कि– 'वर्ण, धर्म, जाति सब कुछ छोड़कर मैं भारत के निपीड़ित, दुःखी, संग्रामी मनुष्यों के साथ हूँ।' महाश्वेता दीदी सब समय ही सोचती हैं कि लेखकीय जीवन छोड़कर भी उनका इस शहर से बाहर एक और जीवन है, जो कभी पलामौ, कभी पुरुलिया तो कभी मेदनीपुर में है। हमेशा वे लेखकीय जीवन से बाहर बेगारों के पास, खेड़ियों (आदिवासी जाति) के पास और लोधों के पास अपने को खड़ी पाती हैं। ...अनेक आदिवासी उनके घर को अपना घर मानते हैं और महाश्वेता दीदी भी मानती हैं कि उनके हाथ–पैरों के छुवन मात्र से ही उनका घर अधिकतम प्रसार पा जाता है। हमारे साहित्य समाज में यही एक विभूति हैं, जिन्हें सच्चे अर्थों में सर्वभारतीय माना जा सकता है, जनजीवन के समस्त स्तरों में जिनका संचार है।''

वह स्वयं कहती हैं कि साधारण मानव जीवन के प्रति मेरा जुकाव आरम्भ से रहा है इसलिए मेरी लेखनी में भी उन्हें स्थान मिलता रहा। वह जनसाधारण की दृष्टि से ही इतिहास को देखने का प्रयत्न करती है। उनके अनुसार– ''मैं अन्तिम वाक्य तक मनुष्यों के लिए बोलना चाहती हूँ। उन मनुष्यों की बात, जिनके सीने की हड्डी उभरी है, जो दुःखी हैं, मेहनती हैं। बंगाल के गाँव में अभी भी वे मनुष्य रहते हैं, जो खाली देह, सिर्फ लंगोटा पहने आज भी अपने कंधे पर हल उठाये खेत जोत रहे हैं, आदिकाल से हमारे सामने यही एक चित्र हैं। ...इसलिए मेरे उपन्यासों में बार–बार घूम–फिरकर नाना आकृतियों, जातियों और भाषाओं के मनुष्यों की बातें चली आती हैं।'' पहले वह उन ऐतिहासिक चरित्रों को लेकर लिखती थी जिनका साहसिक व्यक्तित्व इन्हें 'इम्प्रेस' करता था किन्तु 1968–69 के बाद इनकी लेखनी में संग्रामी मनुष्यों का समावेश हुआ। जिन मनुष्यों को दैनिक जीवन के आवश्यक साधन भी उपलब्ध नहीं होते लेखिका उनके लिए कुछ प्रयास करने में विश्वास करती हैं। इनके द्वारा लिखी गई रचनाओं की तालिका इस प्रकार है– 'कवि बन्दय्घटि गयजीकर जीवन और मृत्यु' (1966), 'मध्यरातेर गान' (1967), 'दुस्तर' (1975), 'हजार चौरासी की माँ' (1976), 'धानेर शियेर शिसिर' (1976), 'अग्निगर्भ' (1976), 'अरण्ये अधिकार (जंगल के दावेदार)' (1977), 'स्वाह' (1977), 'मोहन पुरेर रूपकथा' (1978), 'मास्टर साब' (1979), 'मूर्ति' (1979), 'सुभागा बसन्त' (1980), 'अकलांत कौरव' (1980),

‘शालीगरार डाके’ (1980), ‘श्री श्री गणेश महिमा’ (1981), ‘सूरज गागराई’ (1982), ‘उलसाहा’ (1982), ‘चोटि मुडा और उसका तीर’ (1982), ‘पलातक’ (1982), ‘विवेक विदाय पाला’ (1983), ‘स्वेच्छा सैनिक’ (1984), ‘सनातनी’ (1984), ‘आश्रय’ (1985), ‘वर्णमाला’ (1985), ‘शृंखलित’ (1985), ‘बिश–एक्किश’ (1986), ‘तितूमीर’ (1986), ‘नीलछवि’ (1986), ‘सत्य–असत्य’ (1986), ‘वेसृचनेर सेना’ (1987), ‘टेरोडाकटिकल, पुरन सहाय और बिरसा’ (1987), ‘ग्रामबांगला’ (1989), ‘बंदोबस्ती’ (1989), ‘कुडानि’ (1989), ‘अज्ञात परिचय’ (1989), ‘सती’ (1990), ‘संवाद’ (1992), ‘375 आई.पी.सी.’ (1992), ‘क्षुधा’ (1992), ‘मार्डरेर माँ’ (1992), ‘ब्याधखण्ड’ (1993), ‘प्रति चौवन मिनट’ (1993), ‘6 दिसम्बरेर परे’ (1993), ‘हिरों एकटि ब्लु प्रिंट’ (1993), ‘फिरे आसा’ (1994), ‘मिलुर जनये’ (1994), ‘मृत्यु संवाद’ (1994), ‘सोरानो सिड़’ (1995), ‘म्रु’ (1995), ‘विनीता मित्र’ (1995), ‘हाइराईज’ (1996), ‘जटायु’ (1996), ‘रेजिष्टर नं. 1034’ (1996), ‘फलकी भंडार गल्प’ (1996), ‘वेदनावालार आत्मकथा’ (1997), ‘रात कहानी’ (1997), ‘संध्यार कुहासा’, ‘सुभाग बसन्त’, ‘घरेफेरा’, ‘हरिराम महतो’, ‘धर्मघट और कान्ना’, ‘तारार आधार’, ‘बायस्कोपेर बाक्स’, ‘आधार मानिक’, ‘रुयाली’।

इनमें से ‘अक्लांत कौरव’, ‘अग्निगर्भ’ (नक्सलबाड़ी आदिवासी विद्रोह की पृष्ठभूमि में लिखी गई चार लंबी कहानियाँ हैं), ‘आरोपी’, ‘उम्रकैद’, ‘कृष्ण द्वादशी’, ‘ग्राम बांग्ला’, ‘धहराती घटाएँ’, ‘चोट्टि मुंडा और उसका तीर’, ‘जंगल के दावेदार’, ‘जकड़न’, ‘जली थी अग्निशिखा’, ‘झाँसी की रानी’, ‘टेरोडैक्टिल’, ‘दौलति’, ‘नटी’, ‘बनिया बहू’, ‘मर्डरर की माँ’, ‘मातृछवि’, ‘मास्टर साब’, ‘मीलू के लिए’, ‘रिपोर्टर’, ‘श्री श्री गणेश महिमा’, ‘स्त्री पर्व’, ‘स्वाहा’ और ‘हीरो– एक ब्लू प्रिंट’ आदि कृतियाँ बंगला का हिन्दी रूपांतरण हैं।

लेखक की सबसे बड़ी कसौटी और सफलता यह है कि उसके द्वारा रचित कृतियाँ दुनिया की विभिन्न भाषाओं में अनुवादित हों। महाश्वेता देवी की रचनाएँ, ‘हजार–चौरासी की माँ’, ‘अग्निगर्भ’ और ‘जंगल के दावेदार’ को कल्ट कृतियों के तौर पर जाना व पढ़ा जाता है। इनके उपन्यास ‘रुदाली’ पर कल्पना लाज़मी ने ‘रुदाली’ तथा ‘हजार चौरासी की माँ’ पर इसी नाम से 1998 में फिल्मकार गोविन्द निहलानी ने फिल्म भी बनाई है।

साहित्य में इनके योगदान को देखते हुए इन्हें 1979 में ‘जंगल के दावेदार’ उपन्यास पर साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। देश के आदिवासियों के साथ उनके बीच रहकर, उनके लिए किए गए कार्यों की स्वीकृति के तौर पर भारतीय सरकार ने इन्हें 1986 में ‘पद्म श्री’ की उपाधि से विभूषित किया। 1997 में फिलिपिन्स द्वीपसमूह के मनिला द्वीप से नियंत्रित ‘मैगसेसे’ पुरस्कार तथा इसी वर्ष नेल्सन मंडेला के हाथों ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। इस पुरस्कार से प्राप्त 5 लाख रुपये इन्होंने बंगाल के पुरुलिया आदिवासी समिति को दे दिए।

28 जुलाई 2016 को बीमारी के चलते दो महीने अस्पताल रहने के पश्चात् कोलकता में इनका निधन हो गया। 14 जनवरी 2018 में इनके 92वें जन्मदिवस पर गूगल ने इन्हें सम्मान देते हुए इनका गूगल डूडल बनाया।

1.5 सारांश

1926 में एक अभिजात मध्य वर्गीय प्रतिभा सम्पन्न परिवार में महाश्वेता देवी का जन्म हुआ। इनके परिवार में लेखक, कलाकार, फिल्म निर्देशक आदि रहे जिनसे इन्हें प्रेरणा मिलती रही। प्रारम्भिक शिक्षा शांति निकेतन में और एम.ए. अंग्रेजी कोलकता विश्वविद्यालय से की। दायित्व, कर्तव्यबोध, सौन्दर्य बोध आदि मूल्य जो उनमें व्याप्त हैं उनका मूल स्रोत शांति निकेतन रहा है। उस समय संरक्षणशील समाज था तथा लड़कियों को अधिक स्वतंत्रता नहीं मिलती थी किन्तु लेखिका इन बंधनों को न मानकर परस्पर अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व हेतु गतिशील रहीं। इनका मूल ध्यान गरीब शोषित मानव जीवन की तरफ रहा जो अभिशिप्त जीवन जीने पर विवश था। उनके जीवन के प्रत्यक्ष दर्शन से ही इनकी दृष्टि में परिवर्तन आया जो इनकी रचनाओं में प्रत्यक्षता देखा जा सकता है। इनकी लगभग 64 रचनाएँ हैं जिनमें से प्रारम्भिक कृत्तियों को छोड़कर शेष में सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का ही समावेश हुआ है। जिसके लिए इन्हें पुरस्कृति भी किया गया।

1.6 कठिन शब्द

1. सृजनकर्ता
2. हाशिये
3. साम्यवादी
4. सुस्थिर
5. सान्निध्य
6. अभिज्ञता
7. स्वप्निल
8. सेवानिवृत्ति
9. अभिजात
10. कम्युनिस्ट

1.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) महाश्वेता देवी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।

____

____

____

——

——

——

——

——

प्र2) महाश्वेता देवी का साहित्यिक परिचय दीजिए।

——

——

——

——

——

——

——

——

प्र3) महाश्वेता देवी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।

——

——

——

——

——

——

——

——

M.A Hindi **UNIT - I** **Lesson No. 2**
Course Code : Hin- 403 **Semester - IV**

'जंगल के दावेदार' उपन्यास का कथानक

2.0 रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 'जंगल के दावेदार' उपन्यास का कथानक

2.4 सारांश

2.5 कठिन शब्द

2.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

2.7 पठनीय पुस्तकें

2.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ के अध्ययनोपरान्त आप–

– मुण्डा विद्रोह को समझ सकेंगे।

– मुण्डा आंदोलन के तत्कालीन परिवेश से अवगत होंगे।

– 'उलगुलान आंदोलन' में बीरसा की भूमिका को समझ सकेंगे।

2.2 प्रस्तावना

महाश्वेता देवी द्वारा लिखित 'जंगल के दावेदार' एक जीवनी परक उपन्यास है जिसे चरित काव्य भी कहा जा सकता है। इसका कथासूत्र इतिहास में 1895 से 1900 ई. तक जो बीरसा मुण्डा द्वारा 'उलगुलान आंदोलन' चलाया गया, वहां से लिया गया है। इसलिए कथासूत्र के निर्माण तथा कथा नायक का काल्पनिक

वर्णन करने की कोई गुंजाइश नहीं है। इस उपन्यास का कथानायक लेखिका ने शोषण और दमन के प्रति संघर्ष का प्रतीक बनकर उभरते बीरसा मुण्डा को लिया है जो स्वयं ही अपनी शक्ति को पहचान कर मुण्डा जाति का भगवान बनना स्वीकार करता है। एक तरफ यहाँ बीरसा की अपनी जाति के प्रति प्रेम भावना दिखाई है वहीं बीरसा और अमूल्य (दिकू) में मानवीय संबंधों की प्रगाढ़ता का वर्णन भी मिलता है, जो देश की एकता का संदेश देता है।

2.3 'जंगल के दावेदार' उपन्यास का कथानक

महाश्वेता देवी द्वारा लिखित 'जंगल के दावेदार' उपन्यास 1895 से 1900ई. तक के मुण्डा विद्रोह के नायक बीरसा मुण्डा पर आधारित है। यह उपन्यास परोक्ष उपादान की नींव पर खड़ा है क्योंकि इस उपन्यास का मूल उत्स सुरेशसिंह रचित **'Dust Storm and Hanging Mist'** पुस्तक है जिसका उल्लेख लेखका ने उपन्यास की भूमिका में ही कर दिया है। परोक्ष उपादान की नींव का आधार लेकर महाश्वेता देवी ने समग्र उपन्यास को अपने अनुसार लिखा है। सम्पूर्ण उपन्यास प्रायः कथोपकथन शैली में रचित है। मुण्डाओं का विद्रोह समकालीन सामंतवादी व्यवस्था के विरुद्ध था इसलिए लेखिका 'जंगल के दावेदार' उपन्यास की भूमिका में ही पाठक का ध्यान इस ओर केन्द्रित करती हैं।

'जंगल के दावेदार' उपन्यास का आरम्भ बीरसा मुण्डा की मृत्यु के वर्णन से हुआ है और उसके मृत शरीर के क्रिया–कर्म के समाप्त होने के पश्चात् ही उपन्यास में उसके जीवित समय में किए गए संघर्ष की कथा आरम्भ होती है। 1895 से 1900 ई. के काल खण्ड की कथा में बीरसा की जेल में मृत्यु, उसका क्रिया–कर्म, जेल में बीरसा को अकेली कोठरी में रखना, अमुल्य के साथ बीरसा का मिशन में शिक्षा प्राप्त करना, कनु मुण्डा का बीरसा को शैशव से देखना, धानी मुण्डा का आक्षेप, बीरसा का भगवान बनना इत्यादि सन्दर्भ एक पारस्परिक क्रम के अनुच्छेदों में वर्णित न होने के उपरान्त भी इनमें एक संलग्नता दिखाई देती है और इस संलग्नता का मूल केन्द्र है बीरसा का जीवन संघर्ष।

उपन्यास का आरम्भ बीरसा की मृत्यु वर्णन से इस प्रकार हुआ है– ''9 जून, साल 1900। राँची की जेल। सवेरे आठ बजे बीरसा खून की उलटी कर, अचेत हो गया। बीरसा मुण्डा–सुगाना मुण्डा का बेटा; उम्र पच्चीस वर्ष– विचाराधीन बन्दी।'' बीरसा मुण्डा, मुण्डा जाति को संगठित कर 'उलगुलान' आंदोलन चला रहा था क्योंकि उसका सपना मुण्डाओं को भात उपलब्ध करवाने का है इसी भात के कारण बीरसा पकड़ा गया था जिसका उल्लेख करते हुए लेखिका कहती है– ''अधिकतर समय बीरसा की जोरें की शिकायत रहती है– 'मुण्डा केवल घाटो ही क्यों खाएँ ? दिकू लोगों की तरह वे भात क्यों न खाएँ ?' और भात राँधा था, इसलिए तीसरी फरवरी को बीरसा पकड़ा गया। बीरसा सो रहा था। औरत भात पाक रही थी। नीले आकाश में धुआँ उठ रहा था, बीरसा नींद की गोद में था; तभी लोगों ने उठता हुआ धुआँ देख लिया।'' पुलिस द्वारा बीरसा के पकड़वाए जाने पर पाँच सौ रुपए का ईनाम रखा गया था जिस कारण किसी मुण्डा ने बीरसा को पकड़वा दिया किन्तु बीरसा उससे खफा नहीं होता। वह जानता है कि मुण्डा गरीब है और पाँच सौ रुपए बहुत ज्यादा

हैं किसी मुण्डा के लिए। उपन्यास के पहले 18 पृष्ठों में बीरसा की मृत्यु के कारणों एवं मृतदेह के दहन का वर्णन हुआ है।

बीरसा की मृत्यु से शुरू हुआ उपन्यास पीछे की घटनाओं की तरफ बढ़ने लगता है। जिससे स्पष्ट होता है कि लेखिका इतिहास पुरुष बीरसा का चित्रण कर रही है इसलिए इतिहास की दलील को उद्घाटित कर इसमें विश्वसनीयता उत्पन्न कर रही हैं। बीरसा मुण्डाओं का भगवान था इसलिए उसकी मृत्यु के पश्चात् साधारण लोगों और मुण्डाओं में व्याप्त इस गणनायक के प्रति भगवान के विश्वास को खंडित करने के उद्देश्य से जेल सुपरिटेन्डेन्ट ऐंडरसन ने अन्य कैदियों को बीरसा की शिनाख्त करने के लिए उसकी लाश की बगल से होकर गुजरने का आदेश दिया, सभी कैदियों के हाथ–पाँवों में जंजीरें थीं। किसी ने बीरसा को नहीं पहचाना, किसी ने नहीं कहा कि यही हमारा बीरसा भगवान है किन्तु भरमी मुण्डा भाव–विह्वल होकर करुण गीत गाने लगा जिससे ऐंडरसन क्रोधित होता है। बीरसा के लिए भगवान सम्बोधन सुनकर ऐंडरसन क्रोध से भर जाता है इसलिए वह लोगों में व्याप्त इस धारणा को समाप्त करने के लिए ऐसा आदेश देता है। वह बताना चाहता था कि बीरसा भगवान नहीं क्योंकि वह मर चुका है और भगवान की मृत्यु नहीं होती। लेकिन अपने इस उद्देश्य में सफल नहीं होता क्योंकि बीरसा ने सभी को पहले ही कहा था कि वह उसे पहचानने से इनकार कर दें और वह स्वयं भी इन लोगों को कभी नहीं पहचानेगा।

बीरसा का क्रिया–कर्म भी उनके परिवार के द्वारा नहीं होता क्योंकि सुपरिटेंडेण्ट ने कहा था कि उसका संस्कार जेल के मेहत्तर (सफाई वाले) करेंगे। किसी भी बीरसाइत को बीरसा का संस्कार देखने की अनुमति नहीं दी गई। अमूल्य बाबू जो चाईबासा के जर्मन मिशन में बीरसा का सहपाठी और मित्र था और अब इसी जेल में डिप्टी–सुपरिटेंडेण्ट होता है उसे भी बीरसा के संस्कार में जाने की अनुमति नहीं दी गई। अमुल्य, ऐंडरसन को बताता है कि मुण्डाओं में जलाने का नहीं समाधि देने का रिवाज़ है लेकिन ऐंडरसन नहीं मानता और रात के अंधेरे में जेले के मेहतर शिब्बन और धरमू द्वारा उसका दाह संस्कार कर दिया गया। शिब्बन भी बीरसा से प्रभावित था इसलिए वह कहता है– ''यह कैसा हो गया है रे? जात का आदमी, धरम का आदमी कन्धा देगा, कबर देगा। यह क्या हो रहा है।'' लेकिन अन्य सिपाही द्वारा शिब्बन को साहब का भय दिखाकर चुप करवा दिया गया। धरमू बीरसा के शरीर को जलाते हुए कहता है– ''उलगुलान में बहुत आग जलाई थी– आग उसे पहचानती है। देख कैसी तो जल रही है ?'' बीरसा को जलाने के लिए लकड़ी भी नहीं दी गई थी सिर्फ सूखे गोबर के कण्डे थे फिर भी आग ने आग को पहचाना और बीरसा को खुद में समेट लिया। जब चिता बुझी उस समय सिर्फ शिब्बन वहाँ था बाकी सभी सिपाही मेहतर चले गए थे। तभी बीरसा के उलगुलान का साथी मित्र आया उसने मुट्ठी–भर राख आँचल में बाँध ली और शिब्बन से कहा कि– ''जंगल में राख उड़ा देने से जंगल को पता चलेगा कि बीरसा उसे भूला नहीं। राख धरती पर गिरेगी; धरती पर पेड़ उगेंगे। वही पेड़ बड़े होंगे, साथी।'' और उसने भी शिब्बन से कहा कि ''उलगुलान का अन्त नहीं है। भगवान का अन्त नहीं होता।'' इस बात ने शिब्बन को भीतर तक हिला दिया और वह वहाँ से भागता हुआ जेल पहुँचा लेकिन उसके मुख से एक ही वाक्य उचरित हो रहा था कि ''उलगुलान का अन्त नहीं है। भगवान का मरण नहीं होता।''

किन्तु सिपाहियों द्वारा चाबुक चलाने पर उसकी आवाज़ धीमी पड़ी और फिर पूर्ण शांति। अर्थात् उसे मारा गया। बीरसा के मर जाने पर भी उसके साथियों द्वारा उलगुलान का अन्त न मानना और शिब्बन आदि का भी बीरसा पर इस भाँति विश्वास होना, बीरसा के संघर्ष का समापन न होने का सकेंत देता है।

जेल में धानी मुण्डा भी अन्य मुण्डाओं को मुण्डा जाति के साथ हुए शोषण की कथाएँ सुना रहा था। वह बताता है कि बीरसा के वंश के आदि–पुरुषों ने छोटा नागपुर की नींव डाली पर पहले वहाँ राजा आए फिर चारों ओर से लोग आए जिन्हें 'दिकू' कहा गया है उन्होंने मुण्डा लोगों को उखाड़कर उनकी ज़मीन–जायदाद पर अपना अधिकार कर लिया। ये लोग– महाजन, जमींदार, मिशनरी, जेल–कचहरी, पक्की सड़कें, रेलगाड़ी, बेनट (किरच, जो सैनिक–रायफल के आगे लगाई जाती है), बन्दूक, गरमी की तपन, सूखा, दुर्भिक्ष, मजदूर भरती करने वाले, बेगारी आदि इन सब ने मिलकर मुण्डाओं का शोषण किया। अब इनसे ही मुण्डा मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे हैं और इस संघर्ष का नेतृत्व किया सुगाना और करमी के बेटे बीरसा मुण्डा ने। 1895 में बीरसा ने अंग्रेज़ों की लागू की गई जमींदारी प्रथा और राजस्व–व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई के साथ–साथ जंगल–ज़मीन की लड़ाई छेड़ी थी। बीरसा ने सूदखोर महाजनों के खिलाफ भी जंग का ऐलान किया। ये महाजन, जिन्हें वे दिकू कहते थे, कर्ज़ के बदले उनकी ज़मीन पर कब्जा कर लेते थे। यह मात्र विद्रोह नहीं था। यह आदिवासी अस्मिता, स्वायतत्ता और संस्कृति को बचाने के लिए किया गया संग्राम था।

सवताल और मुण्डा इन दो आदिम जातियों का जीवनसत्य एक ही ज़मीन पर पोषित है और यह सत्य है जंगल व जंगल के ऊपर निर्भरशील जीवन। इसी के चलते शोषण और उत्सादन का शिकार बना आदिवासी जीवन। इसलिए 1855 का सवताल विद्रोह 'दामिन–ई–कोह' एवं 1895–1900 का मुण्डा जातियों का 'उलगुलान' ये दोनों संग्राम वर्णन में एकाकार हो गए हैं। घटनाकाल, नेतृत्व एवं पद्धति में अलग होने के उपरान्त भी ये दोनों संग्राम शोषण और अत्याचार के विरुद्ध लड़ाई के अन्तर्गत ही है। 1855 के 'हुल' और 1895–1900 के 'उलगुलान' की विद्रोही परम्परा के मध्य और विद्रोह 'मुल्क की लड़ाई' का नाम भी आता है। मुण्डा सरदार एवं ईसाई मिशनरियों के मुण्डाओं के नेतृत्व में यह लड़ाई दस वर्ष तक चलती रही थी। यह लड़ाई बीरसा की बाल्यावस्था में हो गई थी लेकिन धानी मुण्डा जिसने हुल, सवताल तथा मुलकई लड़ाई में सहयोग किया था उसने शिशु बीरसा में भविष्य के नेता के लक्षण देख लिए थे। इसलिए वह बीरसा का बचपन से ही पीछा कर रहा था। वह सरदारों को भी कहता है कि– ''अब दुख किस बात का? बीस बरस का हो जाने दो, भगवान को पाओगे। यह भगवान मानुस को भुलाता नहीं, गोदी में झूलता नहीं, इसके हाथों में बलोया रहेगा, तीर–धनुक रहेंगे।''

बीरसा को उसके पिता ने मिशनरी स्कूल में भर्ती करवाया। जहाँ उसे ईसाइयत का पाठ पढ़ाया गया। किन्तु मिशन में फादर की चर्चाओं के द्वारा ईसाई धर्म के प्रति जो विश्वास बीरसा के भीतर आ रहा था, उन्हीं के द्वारा जब सरदारों को धोखेबाज और ठग कहा गया तो बीरसा के भीतर बहने वाले मुण्डारी रक्त में उबाल आ गया और वह पूर्ण साहस के साथ उनका प्रतिवाद करता है। बीरसा के इस नए रूप को देखकर फादर आदि घबरा जाते हैं और बीरसा को मिशन छोड़कर चले जाने की आज्ञा सुनाते हैं। बीरसा भी इस

अपमानकारी मिशन के जीवन को छोड़कर चालकाड़ चला आता है। वहीं धानी उसे मुल्कई लड़ाई में सहयोग देने को कहता है लेकिन बीरसा इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता है। इन दिनों बीरसा जंगल में पागलों की भाँति घुमता रहता था क्योंकि उसके मन में स्वयं को लेकर अनेक प्रश्न थे जैसे कि वह कहाँ से आया, क्यों आया, कैसे आया। आत्मजिज्ञासा की यह अशांत भावना ही उसे बनगाँव के जमींदार जगमोहन सिंह के मुंशी आनन्द पाँडे के पास ले आई। वहाँ वह ''जनेऊ पहना, चन्दन लगाया, तुलसी की पूजा की। रामायण–महाभारत–पुराण सब सुने, कुछ–कुछ पढ़े।'' लेकिन फिर भी उसका मन स्थिर नहीं हुआ। वहीं पर दो मुण्डा लड़कियाँ– गुंजा और राता उसकी बंसी सुन उसकी तरफ आकर्षित होती हैं और उसे विवाह प्रस्ताव भी देती हैं लेकिन बीरसा इंकार कर देता है क्योंकि उसका जीवन तो किसी और ही राह की तलाश कर रहा था।

धीरे–धीरे बीरसा का ध्यान मुण्डा समुदाय की गरीबी की ओर गहरा रहा था इस पर भरमी आदि ने उसे यह सूचना दी कि पलामू, मानभूम और सिंहभूम में जंगल कानून लागू होने के कारण सभी मुण्डाओं को वहाँ से खदेड़ा जा रहा है तो बीरसा आक्रोश से भर गया, उसने चाईबासा जाकर जंगल–ऑफिस में अर्जी दी लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। इससे बीरसा के भीतर और भी क्रोध पनप गया और उसे आभास हुआ कि अब स्वयं ही कुछ करना होगा। इतने में जंगल माँ का करुण स्वर बीरसा को भगवान बनने के लिए प्रेरित करता है और बीरसा मुण्डाओं का भगवान बन उनके उद्धार के लिए तैयार हो जाता है।

संख्या और संसाधन कम होने की वजह से बीरसा ने छापामार लड़ाई का सहारा लिया। रांची और उसके आसपास के इलाकों में पुलिस उनसे आतंकित थी। अंग्रेजों ने उन्हें पकड़वाने के लिए पाँच सौ रुपये का इनाम रखा, जो उस समय बहुत बड़ी रकम थी। बीरसा और अंग्रेजों के मध्य अंतिम लड़ाई 1900 में रांची के पास दूम्बरी पहाड़ी पर हुई। हज़ारों मुण्डा बीरसा के नेतृत्व में लड़े पर तीर–कमान और भाले कब तक बंदूकों और तोपों का सामना करते। अंततः अंग्रेज जीते पर बीरसा हाथ नहीं आया किन्तु जहाँ बंदूकें और तोपें काम नहीं आई वहाँ पाँच सौ रुपये ने काम कर दिखाया अर्थात् बीरसा की ही जाति के लोगों ने उसे पकड़वा दिया। बीरसा जब जेल में था तब साली आदि मुण्डा औरतें मिलकर बीरसा के उलगुलान आंदोलन के लिए कार्य कर रही थीं। धानी जेल से भागा था जिसे साली ने शरण दी और साली पुलिस को धोखा देकर तीर भी बीरसाइतों को पहुँचा देती थी। लेकिन जेल में बीरसा की मौत से 'उलगुलान' आंदोलन धीमा पड़ गया।

जेल में बीरसा के साथ जो हुआ उसने अमूल्य को भी हिला दिया था। अमूल्य मुण्डा नहीं था फिर भी बीरसा की लड़ाई को समझता था। इसलिए बीरसा की मृत्यु के पश्चात् वह जेकब जो मुण्डाओं का वकील था उसे पत्र के माध्यम से बीरसा की मृत्यु का सत्य बताकर स्वयं इस नौकरी से इस्तीफा दे देता है। जब जेकब उससे इस्तीफे का कारण पूछता है तो वह कहता है– ''मुझे अब और कुछ छोड़ने को नहीं रहा! मैं अब और कुछ कर नहीं सकता। मैं न तीर छोड़ सकता हूँ न जानता हूँ बलोया चलाना। मैं इतना ही कर सकता था।''

अमूल्य इस्तीफा इसलिए दे सका क्योंकि उसने बीरसा के साथ–साथ अन्य मुण्डाओं को भी सजा

पाते देखा, मुण्डाओं के संघर्ष का ऐसा परिणाम देख वह सरकार की नौकरी नहीं कर पाया। सन् 1901 ई. में वह बोर्तोदि गया। यहाँ उसने साली को अभी भी संघर्षमय पाया। उसके पति डोन्का मुण्डा को फाँसी की सजा हुई और फिर अपील के परिणामस्वरूप सजा घटकर जन्म–भर कालापानी सुनिश्चित हुई जब अमूल्य ने उससे पूछा कि अब तुम कैसे रहोगी तब उसने मुस्कुराते हुए कहा था कि भगवान संघर्ष करना सिखा गए हैं, उलगुलान का अन्त नहीं हुआ। साली के मुख से ऐसा स्वर सुनकर चुप रह गया था और फिर वहाँ से चालकाड़ चला आया। वहाँ उसने नदी के किनारे पत्थर पर बैठी बीरसा की माँ को बेटे का इन्तजार करते पाया जो रोज सुबह वहाँ आती थी और उसकी आँसू रहित आँखें दूर तक अपने बेटे को खोजती, वह पत्थर की मूर्ति–सी जान पड़ती है। ये सब देखकर अमूल्य को पथरीली धरती, जगल, पहाड़ आदि का स्वर भी सुनाई देने लगा था जो सिर्फ एक ही बात कह रहा है– ''हम जिस तरह चिरकाल से हैं, संग्राम–बीरसा का संघर्ष भी वैसा ही है। धरती पर कुछ समाप्त नहीं होता– मुण्डारी देश, धरती, पत्थर, पहाड़, वन, नदी, ऋतु के बाद ऋतु का आगमन संघर्ष भी समाप्त नहीं होता, इसका अन्त नहीं होता। वह बना रह जाता है, क्योंकि मानुस रह जाता है, हम रह जाते हैं।'' अमूल्य इसी आवाज़ को अब सुनना चाहता था क्योंकि उसका मानना है कि लगातार सुनते–देखते रहने से एक दिन उसे भी पूरा विश्वास होगा कि संघर्ष समाप्त नहीं होता।

2.4 सारांश

'जंगल के दावेदार' के मूल में है मुण्डाओं का अस्तित्व संकट और उससे मुक्त होने के लिए उनके द्वारा किया गया प्रयास। अंग्रेज शासक और उसके सहयोगी जमींदार, साहू आदि दमन चक्र द्वारा मुण्डाओं का शोषण करते हैं। बीरसा इस मुण्डा संघर्ष का स्त्रोत है। वह ईसाई पादरियों व हिन्दु धार्मिक नेताओं की सहायता चाहता था लेकिन जब वह सहायता नहीं करते तो वह स्वयं लड़ने का निर्णय करता है। वह परंपरागत धर्म का सहारा न लेकर अपने नए धर्म की स्थापना करता है जिसके अनुयायी 'बीरसाइत' कहलाते हैं। इस उपन्यास में लेखिका मुण्डा विद्रोह के संदर्भ में कथानायक के रूप में बीरसा और अन्य साथी मुण्डाओं की कहानी प्रस्तुत कर उनके प्रति सहानुभूति तो प्रदर्शित करती हैं साथ ही शोषण और दमन के विरुद्ध चेतना को उजागर कर लेखक के दायित्व का निर्वाह भी कर रही हैं।

2.5 कठिन शब्द

1. उत्स
2. उपादान
3. परोक्ष
4. शैशव
5. अनुच्छेद
6. संलग्नता

7. गणनायक

8. बीरसाइत

9. उत्सादन

10. आत्मजिज्ञासा

26 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) 'जंगल के दावेदार' उपन्यास के कथानक पर चर्चा कीजिए।

उ) ————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

प्र2) मुण्डा संघर्ष के संदर्भ में 'जंगल के दावेदार' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

उ) ————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

2.7 पठनीय पुस्तकें

1. जंगल के दावेदार– महाश्वेता देवी।
2. आदिवासी भाषा और शिक्षा– सं. रमणिका गुप्ता।
3. झारखंड के आदिवासियों के बीच– वीर भारत तलवार।
4. आदिवासी विकास, उपलब्धियाँ एवं चुनौतियाँ– एस.एन. चौधरी, मनीषा मिश्रा।
5. आदिवासी संघर्ष गाथा– विनोद कुमार।
6. आदिवासी कौन– सं. रमणिका गुप्ता।
7. आदिवासी विकास : एक सैद्धान्तिक विवेचन– डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा।
8. आदिवासी और उनका इतिहास– हरिश्चन्द्र शाक्य।
9. आदिवासी विकास से विस्थापन, सं. रमणिका गुप्ता।

……

'जंगल के दावेदार' उपन्यास में सामाजिक चेतना

3.0 रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 'जंगल के दावेदार' उपन्यास में सामाजिक चेतना

3.4 सारांश

3.5 कठिन शब्द

3.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

3.7 पठनीय पुस्तकें

3.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन उपरान्त आप–

– 'मुण्डा' समाज को समझ सकेंगे।

– मुण्डा समाज के साथ हुए शोषण से अवगत होंगे।

– मुण्डा विद्रोह के कारणों से परिचित हो सकेंगे।

– मुण्डा विद्रोह में बीरसा की भूमिका से पूर्ण रूप से अवगत होंगे।

3.2 प्रस्तावना

मानव जाति की उत्पत्ति के समय से ही समाज किसी–न–किसी रूप में है क्योंकि सामाजिक जीवन की शुरूआत मनुष्य की कुछ मौलिक आवश्यकताओं से हुई है, जैसे यौन–इच्छा की पूर्ति, सन्तान के लालन–पालन की इच्छा इत्यादि। इसी प्रकार की इच्छाओं ने परिवार जैसे समूह को जन्म दिया। आगे चलकर मनुष्य की अन्य आवश्यकताएँ, जैसे– आर्थिक, भौतिक, मनोवैज्ञानिक आदि ने सामाजिक जीवन की अनिवार्यता को और भी अधिक सुदृढ़ बनाया। समाज का अस्तित्व व्यक्तियों के बीच पाए जाने वाली अन्तःक्रिया पर निर्भर करता है परन्तु एक बार समाज एवं उसकी संस्कृति का निर्माण हो जाने के पश्चात् ये मानव व्यवहार का नियन्त्रण करना प्रारम्भ कर देते हैं। व्यक्ति पर समाज के नियन्त्रण का स्तर बहुत कुछ समाज की राजनीतिक संरचना पर निर्भर करता है। उदाहरणस्वरुप, गणतन्त्रीय व्यवस्था में व्यक्ति की स्वाधीनता एवं स्वतन्त्रता तुलनात्मक रूप से अधिक होती है। दूसरी ओर अधिनायकवादी शासन व्यवस्था में सदस्यों की स्वाधीनता एवं स्वतन्त्रता आवश्यक रूप से कम होती है किन्तु समाज चाहे जैसा भी हो, व्यक्ति अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व कभी भी पूर्णरूप से नहीं खोता। अधिनायकवादी व्यवस्था में भी कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं ऐसे लोग व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ तो उठाते हैं, लेकिन उसके साथ ही समाज में चेतना लाने का काम भी करते हैं। उन्हीं के प्रयासों से व्यक्तियों में अपने अधिकारों के प्रति चेतना का संचार होता है। बुद्ध, नानक, कार्ल मार्क्स, न्यूटन, गैलीलियो, जेम्स वाट, गाँधी आदि ऐसे ही व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने नवीन विचारों एवं अविष्कारों से मानवीय समाज को काफी प्रभावित किया। इसी भाँति आदिवासी जातियों द्वारा शोषण के विरुद्ध और जंगल की मिल्कियत के छीन लिए गए अधिकारों को वापिस लेने के उद्देश्य से जो सशस्त्र क्रान्ति की गई उनमें बीरसा मुण्डा का नाम अविस्मरणीय है। 'जंगल के दावेदार' उपन्यास इसी बीरसा द्वारा चलाए गए उलगुलान आंदोलन में हँसते–नाचते–गाते, परम सहज आस्था और विश्वास से दी गई प्राणों की आहुतियों को चित्रित करता है।

3.3 'जंगल के दावेदार' उपन्यास में सामाजिक चेतना

चेतना मनुष्य के अपने तथा आसपास के वातावरण के तत्वों का बोध होने, उन्हें समझने तथा उनका मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है। 'जंगल के दावेदार' उपन्यास में महाश्वेता देवी ने आदिवासी समाज में आई चेतना को मुखरित किया है।

इतिहास में तीन भाँति के महान व्यक्तियों का वर्णन है। पहले वे जो ईश्वर के अवतार माने गए हैं जैसे राम, कृष्ण आदि। दूसरे वे लोग हैं जिन्होंने अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि और परिष्कार से भगवान की उच्च स्थिति प्राप्त की, जैसे रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद आदि। तीसरे वे हैं जिन्होंने जनसामान्य के कष्टों, असंतोष, सामाजिक, धार्मिक अथवा आर्थिक क्षेत्र में व्याप्त शोषण के उन्मूलन में स्वयं को समर्पित कर दिया। इन व्यक्तियों में महात्मा गांधी, अंबेडकर, बिरसा मुण्डा जैसे व्यक्ति आते हैं। 'जंगल के दावेदार' में महाश्वेता देवी ने इसी तीसरे वर्ग के व्यक्तियों से बीरसा मुण्डा के उलगुलान आंदोलन की घटनाओं को चित्रित कर आदिवासी समाज के संघर्ष को सामने लाया है। इसलिए उपन्यास में व्यक्त आदिवासी मुण्डा समाज में आई चेतना का

अध्ययन करने से पहले मुण्डा समाज, मुण्डा विद्रोह और बीरसा की पृष्ठभूमि को जानना भी आवश्यक हो जाता है।

मुण्डा समाज :–

मुण्डा भारत के आदिवासी समाज की जनजाति है, जो मुख्य रूप से झारखण्ड के छोटा नागपुर क्षेत्र में निवास करती है। झारखण्ड के अतिरिक्त ये बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिसा आदि भारतीय राज्यों में भी रहते हैं। इसकी भाषा मुण्डारी है जो आस्ट्रो–एशियाटिक परिवार की एक प्रमुख भाषा है। इनका भोजन मुख्य रूप से अनाज, मांडयुक्त फल, जड़े, महुआ, मक्का और कंध–मूल हैं। वे सूती वस्त्र पहनते हैं। महिलाओं के पहनावे में साड़ी होती है जिसे उनकी भाषा में 'पाड़िया' कहा जाता है। यह साड़ी को एक विशेष ढंग से बांधती हैं। साड़ी को कमर में बाँधने के पश्चात् पल्लू को शरीर के ऊपरी भाग पर वक्ष को ढ़कने के लिए डाल दिया जाता है। मुण्डा पुरुष अपने शरीर पर एक लम्बा वस्त्र धारण करते हैं जिसे हम साधारण–धोती के रूप में ले सकते हैं। उनकी भाषा में इस पहनावे को 'बोतोई' कहा जाता है।

इतिहासानुरूप छोटानागपुर घने जंगलों से आच्छादित था। 'कोल' जाति ने सर्वप्रथम यहाँ के जंगलों को साफ करके यहाँ रहना शुरू किया। यह कोल जाति 'किलि' या 'गोत्रों' में विभक्त थी। जो गोत्र गाँव का निर्माण करता, रहने की सुविधानुसार सभी कोल उसके शासन को मान लेते। उसी निर्माणकर्त्ता को मुण्डा अर्थात् शीर्षस्थानीय की पदवी से सम्मानित कर दिया जाता था। वास्तव में कोल जाति का मुण्डा नाम इस शब्द से ही बना है। जंगल को साफ कर मुण्डा जिस गाँव का निर्माण करते हैं उस गाँव को 'खुटकट्टि' बोला जाता है। गांव की सीमा निर्धारण की भी एक विशेष ही रीति थी। जंगल के मध्य प्रयोजन–अनुसार चार जगह आग जलाकर उन चारों जगहों के बिन्दु को सरल रेखा द्वारा मिलाने से जो सीमा बनती उसके भीतर पड़ने वाली सारी ज़मीन चाहे वह उपजाऊ हो या अनुपजाऊ, खनिज पदार्थ आदि सब पर खुटकट्टियों का अधिकार होता था। वे इसी ज़मीन से अपना गुजारा करते, उन्हें किसी को इस ज़मीन का लगान नहीं देना पड़ता था।

मुण्डा ग्राम व्यवस्था के चार अनिवार्य अंग हैं– सरना, ससान, आखड़ा तथा गिति–ओडा।

सरना :–

मुण्डा अपनी गाँव की सीमा पर स्थित जंगल के पुराने वृक्षों का संरक्षण करते थे। संरक्षण की इस पद्धति को ही सरना धर्म के नाम से अभिहित किया गया है। आदिवासियों का मानना है कि सरना में ही गाँव के देवता वास करते हैं इसलिए देवता के रूप में वे सरना को पूजते और बलि चढ़ाते हैं।

ससान :–

मुण्डों में किसी की मृत्यु होने पर उसके शरीर को शवदाह या समाधिस्थ करने के उपरान्त उस स्थान को चिह्नित करने या उसकी स्मृति बनाए रखने के लिए उस पर पत्थर लगा देते हैं। इसी क्रिया को वह 'ससान' कहते हैं। आदिवासियों के पूरे समाज का इस 'ससान' पर विशेष अधिकार होता है जिसे वह आजीवन

पूजते हैं। यह इनका धार्मिक स्थान भी कहा जाता है। अर्थात् इनका धार्मिक स्थल कोई इमारत एवं भवन न होकर खुला आसमान होता है।

आखड़ा :–

शाम के समय अथवा उत्सव के दिन गाँवों के स्त्री–पुरुष जमीन के बड़े साफ–सुथरे भूखण्ड पर मांदल (एक तरह का वाद्य यंत्र) बजाकर नाचने–गाने का उत्सव करते हैं। इस भूखण्ड को ही आखड़ा कहते हैं और आखड़ा के नेता को मानकि।

गिति–ओड़ा :–

गाँव के अविवाहित युवकों के सोने के स्थान को गिति–ओड़ा कहते हैं। अविवाहित युवतियों के लिए गिति–ओड़ा या सोने की जगह की व्यवस्था वृद्ध विधवाओं के घर में अलग से की जाती है। यहाँ पर युवक वृद्धजनों से पुराणों की कहानियाँ सुनते हैं, आपस में पहेलियाँ बुझाते हैं और अपने अनुभवों को एक दूसरे से बांटते हैं।

समस्त आदिवासी प्रकृति के पूजक होते हैं और प्रकृति से जुड़ी प्रत्येक वस्तु व जीव को पूजते हैं। इनके देवता 'सूर्य भगवान' हैं, जिसे आदिवासी 'सिंबोङा' या 'सिंगबोंगा देवता' कहते हैं। 'सिंगबोंगा' आदिवासियों का भगवान है जिसने सम्पूर्ण विश्व बनाया और अपनी रोशनी से संसार में फैले अंधकार को मिटाकर उज्ज्वल किया है।

मुण्डा विद्रोह :–

आज़ादी की लड़ाई में भारत के विभिन्न हिस्सों से अनेक समुदाय के लोगों ने अपने–अपने स्तर से अंग्रेजों एवं पश्चिमी उपनिवेशवाद के विरुद्ध समय–समय पर संघर्ष कर अपने सौर का प्रदर्शन किया है। किन्तु हम मंगल पाण्डे, रानी लक्ष्मीबाई, राना फड़नवीस, कुँवर सिंह, रानी चेनम्मा आदि के सम्बन्ध में तो किताबों इत्यादि में पढ़कर जानते हैं, लेकिन कुछ ऐसे लोग और समुदाय भी हैं जिन्होंने अपनी पूरी शक्ति लगा संघर्षपूर्वक विदेशी आक्रांताओं को हराने का प्रयास किया, लेकिन सामान्य जनता उनके विषय में नहीं जान पाई। ऐसा ही एक समूह आदिवासियों का है। झारखण्ड की जनजातियों ने वैयक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर अंग्रेज़ों के साथ जंग छेड़ी थी। सिद्धू और कान्हू, नारायण मांझी, बीरसा मुण्डा, जतरा उरांव एवं बहुत से आदिवासी स्वतन्त्रता सेनानियों ने अपने पराक्रम एवं पौरुष से अंग्रेजों के मन में आतंक का साम्राज्य स्थापित कर दिया।

आदिवासियों का संघर्ष अट्ठारहवीं शताब्दी से चला आ रहा है। 1766 के पहाड़िया–विद्रोह से लेकर 1857 के ग़दर के पश्चात् भी आदिवासी संघर्षरत रहे। मुण्डा जनजातियों ने 18वीं सदी से लेकर 20वीं सदी तक कई बार अंग्रेजी सरकार और भारतीय शासकों, जमींदारों के खिलाफ विद्रोह किया। सन् 1895 से 1900 तक बीरसा मुण्डा का महाविद्रोह 'उलगुलान' चला क्योंकि आदिवासियों को लगातार जल–जंगल–ज़मीन और

उनके प्राकृतिक संसाधनों से बेदखल किया जा रहा था और वे इसके खिलाफ आवाज़ उठाते रहे। मुण्डा विद्रोह उन्नीसवीं सदी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण जनजातीय आंदोलनों में से एक है। यह झारखण्ड का सबसे बड़ा और अंतिम रक्ताप्लवित जनजातीय विप्लव था, जिसमें हज़ारों की संख्या में मुण्डा आदिवासी शहीद हुए थे।

1895 में बीरसा ने अंग्रेजों की लागू की गई ज़मींदारी प्रथा और राजस्व–व्यवस्था के विरुद्ध लड़ाई के साथ जंगल–ज़मीन की लड़ाई छेड़ी। बीरसा ने सूदखोर, महाजनों के विरुद्ध भी जंग का ऐलान किया। ये महाजन जिनको वह 'दिकू' के नाम से संबोधित करते हैं, आदिवासियों को कर्ज देकर बदले में उनकी ज़मीन पर अधिकार कर लिया करते थे। इसलिए मुण्डा आंदोलन मात्र विद्रोह नहीं था बल्कि आदिवासी अस्मिता, स्वायतत्ता और संस्कृति को बचाने के लिए किया गया संग्राम था।

आज की भांति ही उस समय भी आदिवासियों का जीवन अभावों से ग्रस्त था। न खाने को भात था न पहनने को कपड़े। एक ओर गरीबी तो दूसरी ओर 'इंडियन फॉरेस्ट एक्ट' 1882 में उनके जंगल छीन लिए थे। जो जंगल के दावेदार थे, वही जंगलों से बेदखल कर दिए गए। यह देख बीरसा ने हथियार उठा लिए और तब बीरसा के नेतृत्व में 'उलगुलान' शुरू हो गया। सन् 1900 में बीरसा की गिरफ़्तारी और फिर मश्त्यु से यह आंदोलन धीमा तो पड़ा लेकिन 'उलगुलान' का अन्त न हुआ।

बीरसा मुण्डा :–

बीरसा मुण्डा का व्यक्तित्व कई कारणों से महान कहा जा सकता है। पहला कारण तो यही है कि अधिक शिक्षित न होने पर भी वह महान् नेता की योग्यता सिद्ध कर सका। 26 वर्ष की आयु में ही उसने अपने पराक्रम से वह कर दिखाया जिसके लिए सारी जिंदगी गुजर जाती है। उसके द्वारा उठाए गए मुद्दे आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि आज भी आदिवासी अपने जल, जंगल और ज़मीन पर अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्षरत है। पहले संघर्ष अंग्रेजों से था आज अपनी ही सरकार से है।

1894 में नौजवान नेता के रूप में सभी मुण्डाओं को एकत्र कर बीरसा ने अंग्रेजों से लगान माफी के लिए आंदोलन चलाया। 1895 में उसे गिरफ़्तार कर दो साल की सजा सुनाई गई। दो साल सजा काटकर आने के उपरान्त भी वह शांत न बैठा और 1897 से 1900 तक मुण्डाओं और अंग्रेज सिपाहियों के मध्य युद्ध होते रहे किन्तु 1900 में बीरसा फिर गिरफ़्तार कर लिया गया और जेल में ही साजिश के तहत बीरसा की मृत्यु हो गई। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी क्षेत्रों में बीरसा मुण्डा को भगवान की भाँति पूजा जाता है।

'जंगल के दावेदार' उपन्यास में सामाजिक चेतना :–

जब तक व्यक्ति के भीतर चेतना का विकास नहीं होता तब तक उसमें सोचने–समझने की शक्ति नहीं आती। इसलिए किसी भी व्यक्ति, समूह, समुदाय या समाज को यदि अपने अधिकारों के लिए लड़ना है तो सर्वप्रथम उसमें चेतना का अंकुर होना आवश्यक है क्योंकि अपने अधिकारों की पहचान और उसे प्राप्त करने

का संघर्ष, चेतना के अभाव में सम्भव ही नहीं है। एक व्यक्ति से आरम्भ हुई यह चेतना जब धीरे–धीरे समस्त समूह या समाज में व्याप्त होती है तो उसे सामाजिक चेतना कहा जाएगा। महाश्वेता देवी कृत 'जंगल के दावेदार' उपन्यास मुण्डा समाज में आई चेतना और इस चेतना के फलस्वरूप मुण्डा समाज द्वारा किए गए संघर्ष का साहित्यिक के साथ ऐतिहासिक चित्रण प्रस्तुत करता है।

मुण्डा समाज ग्राम व्यवस्था पर आधारित था जो छोटा नागपुर इलाके में बसा था। जंगल को साफ कर इन्होंने अपने गाँव का निर्माण किया। इसलिए उस गाँव के मालिक ये स्वयं थे। उन्हें किसी को लगान नहीं देना होता था, किन्तु जंगल पर मूलतः अधिकार रखने वाले मुण्डा सरकारी नीतियों के चलते उस अधिकार से वंचित हो गए। उन्हें ज़मीन के लिए लगान देना पड़ा और लगान की बढ़ती राशि की पूर्ति हेतु वे ऋण लेने पर विवश हुए। ऋण न चुकाने के कारण वे अपनी ज़मीनों से बेदखल होते गए। आरम्भ में जो जंगल के मालिक थे शोषण के चलते गरीबी की गर्त में चले गए। बाहरी लोगों के आगमन से इनकी संस्कृति भी खतरे में थी। ईसाई मिशनरी मुण्डाओं को ईसाई बनाने में लगे थे। मुण्डाओं तथा उनकी संस्कृति को इन बाहरी लोगों द्वारा हेय समझा जा रहा था। इस तरह मुण्डाओं का अस्तित्व ही खतरे में था। ऐसे में वह अपना अधिकार कैसे पाते, कोई सहारा न पाकर मुण्डाओं ने विद्रोह करना उचित समझा जिसका नेतृत्व बीरसा मुण्डा ने किया। बीरसा मुण्डा ने ही मुण्डा समाज में अपने अधिकार पाने की चेतना लाई। बीरसा ने तो यह आंदोलन चलाया किन्तु बीरसा इस आंदोलन का नेतृत्व कर सकता है यह सपना धानी मुण्डा ने देखा। इसलिए बीरसा में अपनी जाति का उद्धार करने की भावना की जो चेतना आई है उसका श्रेय धानी मुण्डा को भी जाता है।

धानी वृद्ध है और अपने जीवन मं अनेक लड़ाईयों में भाग ले चुका था। धानी के विषय में लेखिका बताती है– ''जहाँ लड़ाई है, उसका अन्तर वहाँ है। उसकी बयस आठ सौ अट्ठासी चाँद हो गई। इस बीच वह उस पहली मुण्डा लड़ाई, हूल खारुआ की लड़ाई, सरदारों की मुल्की लड़ाई– सब जगह लड़ आया है।'' धानी में अपने अधिकारों को पाने की चेतना है इसलिए अधिकारों के लिए जब भी कोई संघर्ष हुआ उसमें धानी ने अपना सहयोग दिया। अब उसे मुण्डा जाति में ही मुक्ति दाता भगवान के जन्म लेने की आशा है। इसलिए वह बीरसा का भी पीछा करता रहता है। धानी के इस कार्य से बीरसा की माँ चिंतित होती है और वह बीरसा को उससे दूर रहने को कहती है क्योंकि वह जानती है कि धानी मुण्डा जाति में ही किसी भगवान की खोज कर रहा था। धानी भगवान के विषय में जो बातें करता था उसके बारे में वह बीरसा को बताते हुए कहती हैं– ''वही जाने किस भगवान को खोज रहा है। वह भगवान शायद मुण्डा बनकर जन्म लेगा। वह मुण्डा लोगों को उनके अपने गाँव देगा, दिलाएगा। उसके आने के बाद दिकू नहीं रहेंगे। उसके आने से सारे मुण्डा लोगों के बदन पर कपड़ा, हाँडी में घाटो, डिब्बे में नमक रहेगा। बर्तनों में रहेगा महुआ का कड़ुआ तेल तब मुण्डा राजा बनेंगे।'' मुण्डा का ऐसा जीवन केवल धानी ही नहीं चाहता, बल्कि सब मुण्डा ऐसी उम्मीद के साथ जीवित हैं किन्तु सभी को यह बोध नहीं था कि ऐसा जीवन तभी सम्भव है जब वह एकजुट होकर आंदोलन करेंगे। धानी ने बीरसा के भीतर नेतृत्व की शक्ति को पहचान लिया था इसलिए वह प्रयास करता है कि बीरसा अपनी शक्ति को पहचाने। वह उसे कहता है– ''बीरसा, तू कर सकता है। छोटा नागपुर तेरे आदि–पुरुषों का बनाया

हुआ है। तू भगवान बन सकता था।'' इतना ही नहीं वह उसे मिशन छोड़ने का परामर्श भी देता है। वह बीरसा को मिशन की वास्तविक सोच से अवगत करवाता हुआ कहता है– ''तू वह मिशन छोड़ दे। साहब क्या कहते हैं– मुण्डा जंगली हैं, नंगे रहते हैं। सारे मुण्डा चोर और डाकू हैं। वह मिशन छोड़ दे।'' धानी द्वारा कहे यह शब्द भी बीरसा में चेतना लाने का प्रयास ही हैं। वहीं मिशन में एक पादरी डॉ. ए.नॅट्रट ने लोगों को लालच दिया कि यदि वे ईसाई बन उनके अनुदेशों का पालन करते रहें तो वे मुण्डा सरदारों से छीनी हुई भूमि को वापस करा देंगे। लेकिन 1886–87 में मुण्डा सरदारों ने जब भूमि वापसी का आंदोलन किया तो इस आंदोलन को न केवल दबा दिया गया बल्कि ईसाई मिशनरियों द्वारा इसकी भर्त्सना की गई जिससे बीरसा मुण्डा को गहरा आघात लगा और वह अन्य लड़कों से कहता है कि सरदार मिशन छोड़कर चले गए इसलिए वे सरदारों को धोखेबाज़ कह रहे हैं। बीरसा द्वारा मिशन की बगावत करने से फादर नॅट्रेट घबरा जाते हैं और इसी घबराहट में बीरसा से कहते हैं– ''सभी मुण्डा एक–से हैं। मिशन के पास आते हैं भिखारी की तरह, लेकिन अन्दर–ही–अन्दर सरदारों की बातें मानते हैं। सब मुण्डा बेईमान हैं।'' मिशन की इस वास्तविकता को देखकर बीरसा मिशन छोड़कर चला जाता है। यह वह दौर था जिसने बीरसा के भीतर बदले और स्वाभिमान की ज्वाला पैदा कर दी। अपनी जाति की दुर्दशा, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक अस्मिता के खतरे ने उसके मन में क्रांति की भावना उत्पन्न की।

सरकार के प्रति उसका विद्रोह तब सामने आता है जब उसे भरमी, दासों और मातारी से ज्ञात होता है कि जंगल–कानून लागू होने से सब मुण्डाओं को जंगल से खदेड़ा जा रहा है। तब बीरसा उन लोगों के साथ अर्जी लेकर जंगल आफिस चला गया। वहाँ उनके साथ जब उपेक्षित व्यवहार किया गया तब वह उनसे कहता है– ''तू–तू क्यों कहते तो? मुण्डा आदमी नहीं हैं? साहब को देखकर, 'आप' कहते हो? बनिया को देखकर 'तुम' कहते हो, मुण्डा देखकर 'तू' कहते हो?''...''ए दिकू! मेरा नाम बीरसा है। मैं साहब से नहीं डरता हूँ। ठीक ढंग से बात करो''... ''नहीं तो तुम पर कुचला–बाण छोड़ दूँगा।'' इन पंक्तियों में जहाँ सरकारी अफसरों की अमानवीय सोच का बोध होता है वहीं मुण्डाओं का प्रतिनिधित्व कर रहे बीरसा द्वारा इस व्यवहार का विरोध भी वर्णित हुआ है जो इस बात का द्योतक है कि अब मुण्डा अपने अधिकार और सम्मान के लिए लड़ना सीख गए हैं। वह मुण्डाओं को बताता है कि शहर में बैठकर कानून बनाने वाली सरकार मुण्डा–कोल–उरांव के बारे में नहीं सोचते। इस बात पर सब उससे प्रश्न करते हैं कि इस स्थिति में क्या किया जाए, तब बीरसा मुण्डाओं में चेतना का संचार करते हुए कहता है– ''तब क्या होता, खुद सोचो। कोई नहीं सोचेगा। हमेशा कोई और सोचेगा।... अपनी बात खुद नहीं सोचते, उससे ही तुम मरते हो, और मरते हो महुआ और हँडिया से। कैसा मद पीना सीखा है! ऐसे जीवन में आग लग जाए! जंगल में जाने का हक चला गया। तुम चेत उठे, भभक उठे– फिर थोड़ी देर बाद मद पीकर सब भूल जाओगे।'' बीरसा लोगों में चेतना का संचार कर मुण्डाओं का अस्तित्व बचाना चाहता है क्योंकि वह जान चुका है कि जो जंगल मुण्डाओं की माँ है वहीं आज रो रही है। जंगल–माँ दिकू एवं कानून के हाथों बन्दी बनी है और उससे मुक्ति की कामना कर रही है। इसलिए बीरसा प्रण करता है कि वह जंगल–माँ को इन पापियों से मुक्ति अवश्य दिलाएगा। वह जंगल–माँ की पुकार पर ही मुण्डाओं का आबा बनने को तैयार हो जाता है और आदेशपूर्वक कहता है– ''दूँगा, सबको सुख दूँगा। हाँ, मैं

भगवान बनूँगा, बीरसा भगवान! तब धरती का आबा बन जाऊँगा।...'' इस तरह बीरसा अपने संकल्प को पूरा करने के लिए गांव–गांव घूमकर लोगों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जागृति लाने में प्रयासरत होता है। इस संदर्भ में लेखिका कहती है– "धर्म का आचार, तन्त्र–मन्त्र, जादू, रीति–नीति का बोझ छाती पर रहने से मुण्डा लोग सिर न उठा सकेंगे– इसीलिए एक सहज, सुन्दर, कर्मकाण्ड और रूढ़िगत विश्वासों के बोझ से रहित धर्म की आवश्यकता है। इसीलिए बीरसा ने भगवान बनकर धर्म में, आस्था में क्रांति लाना प्रारम्भ किया।''

बीरसा ने जंगलवासियों को एकजुट कर उन्हें अंग्रेजी शासन के खिलाफ संघर्ष करने को तैयार किया। ईसाई धर्म स्वीकार करने वाले हिन्दुओं को उसने अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी दी और अंग्रेज़ों के षड्यंत्र के प्रति सचेत किया। 25 वर्ष की उम्र में ही उसने जो क्रांति पैदा की वह अतुलनीय है। उसका कहना है कि, ''मुण्डा बड़े बन्धनों में फँसे हुए हैं दिकू लोगों ने मुण्डाओं को उधार–कर्ज–कोयला खान–रेल–जेहल–अदालत वगैरह के हज़ारों चक्करों में फाँस लिया है। अब हमें सब तरह से आज़ाद होना पड़ेगा। सारे विदेशियों को भगाएँगे। किसी को कोई लगान नहीं देंगे। सारे जंगल ले लेंगे। जैसे पहले लिये थे, वैसे ही अब लेंगे।'' बीरसा मुण्डाओं में जमींदार, महाजन, पटवारी, ठेकेदार आदि शोषणकर्ताओं के खिलाफ जंग छेड़नी की चेतना लाता है और उसी के प्रयास थे कि सब एकजुट होकर संघर्ष कर भी रहे थे। इनके इस संघर्ष से सभी शोषणकर्ता चिंतित होते हैं। इसलिए अंग्रेज सरकार ने इनकी गतिविधियों को रोकने के लिए 1895 में बीरसा को हज़ारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो वर्ष गिरफ़्तार करके रखा किन्तु दो साल जेल में रहकर भी बीरसा के संकल्प में अस्थिरता नहीं आई। 1897 से 1900 तक मुण्डाओं और अंग्रेज सरकार के मध्य मुठभेड़ होती रही। 1897 में बीरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूंटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुण्डाओं की मुठभेड़ अंग्रेज सेना से हुई जिसमें अंग्रेज सेना हार तो गई लेकिन बदले में बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं।

जनवरी, 1900 में डोमबाड़ी आदिवासी पर एक और संघर्ष हुआ था, जिसमें बहुत–सी आदिवासी औरतें और बच्चे मारे गए तथा बीरसा के शिष्यों की गिरफ़्तारी भी हुई। सन् 1900 को ही 3 फरवरी को बीरसा भी चक्रधरपुर में गिरफ़्तार कर लिया गया। जेल में रहकर भी बीरसा अपने साथियों के मनोबल को बनाए रखता है। काल कोठरी में बीरसा के चलने की आवाज़ अन्य मुण्डाओं के जीवन का सहारा बनती है लेकिन एक दिन जब सरकारी षड्यन्त्र द्वारा बीरसा की हत्या कर दी गई उस दिन मुण्डाओं का मनोबल टूट गया। किन्तु जो बीरसाइत थे वह अंग्रेजों की कोड़ों की मार से भी विचलित नहीं हुए क्योंकि खून से लथपथ होने पर भी वह एक ही बात दोहराते थे– ''भगवान ने कहा था कि जब तक माटी की यह देह नहीं छूटेगी, तुम जिन्दा नहीं रहोगे। टूट मत जाना। सोचना भी मत कि तुम्हें बीच में छोड़कर में चला गया। तुम लोगों को इतने, सारी तरह के हथियारों का उपयोग मैंने सिखा दिया है न! तुम उन्हें ही लेकर लड़ते रहना।'' बीरसा को मालूम था कि इस आंदोलन में कई जाने जाएँगी और वह स्वयं भी मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा, लेकिन वह अपनी मृत्यु के साथ इस आंदोलन का अन्त नहीं चाहता था इसलिए उसने सभी मुण्डाओं को पहले ही बता दिया था कि पकड़े

जाने पर वह बीरसा से कोई भी संबंध स्वीकार न करें। क्योंकि बीरसा उलगुलान का अन्त नहीं होने देना चाहता था। इसलिए वह अपने प्राणों की आहुति के लिए तो तैयार था किन्तु अन्य मुण्डा जो इस आंदोलन में साथ थे उनको अपना दायित्व सौंपता है। यह बीरसा की चेतना–संचार का ही परिणाम है कि मुण्डा उसकी मृत्यु के पश्चात् भी भगवान के मरण को स्वीकार नहीं करते। बीरसा की राख को साथी अपने साथ ले जाते हुए शिब्बन से कहता है– "कहा था कि जंगल में राख उड़ा देने से जंगल को पता चलेगा कि बीरसा उसे भूला नहीं। राख धरती पर गिरेगी; धरती पर पेड़ उगेंगे। वही पेड़े बड़े होंगे... उलगुलान का अन्त नहीं है। भगवान का मरण नहीं होता।" अतः बीरसा की मृत्यु भी आदिवासी संघर्ष के निरन्तर चलते रहने की उद्घोषणा ही करती है क्योंकि जब तक आदिवासियों को उनका अधिकार नहीं मिलता, उनके अस्तित्व का संकट समाप्त नहीं होता तब तक यह संघर्ष निरन्तर चलता रहेगा। क्योंकि बीरसा ने चेतना की जो आग जलाई है वह अधिकार प्राप्ति के साथ ही शांत हो सकती है।

3.4 सारांश

बीरसा ने जो आंदोलन चलाया उसे उलगुलान कहा गया है। 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों (1895–1900) में मुण्डाओं ने दो बार विद्रोह किया किन्तु अंग्रेजों के पास भेदी, हथियार और सैनिक बल था इसलिए मुण्डा विद्रोह उनके समक्ष अधिक देर टिक नहीं पाया। मुण्डाओं में बाहरी लोगों के दमन को समाप्त कर 'मुण्डा राज' का जो सपना देखा वह 19 जून 1900 में बीरसा की मृत्यु के साथ ही टूट कर बिखर गया लेकिन उनकी उम्मीद अभी भी बनी हुई है। इसलिए उनका संघर्ष भी चल रहा है और सदैव चलता रहेगा जब तक वह अपना अधिकार प्राप्त नहीं कर लेते। हाँ, उनके आंदोलन और संघर्ष के रास्ते चाहे परिवर्तित हो पर वह निरन्तर गतिशील होंगे। लेखिका कहती है कि शोषण और दमन के विरुद्ध चेतना को उजागर करना लेखक का दायित्व है और बीरसा के उलगुलान आंदोलन को उपन्यास का विषय बनाकर उन्होंने अपने इसी दायित्व का निर्वाह किया है।

3.5 कठिन शब्द

1. अन्तःक्रिया
2. अधिनायकवादी
3. मिल्कियत
4. उलगुलान
5. शीर्षस्थानीय
6. उपनिवेशवाद
7. आक्रांताओं

8. रक्ताप्लवित

9. स्वायतत्ता

3.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) मुण्डा समाज पर टिप्पणी कीजिए।

उ) ____

____

____

____

____

____

____

____

प्र2) मुण्डा विद्रोह को स्पष्ट कीजिए।

उ) ____

____

____

____

____

____

____

____

प्र3) 'उलगुलान' आंदोलन में बीरसा की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उ) ——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

प्र4) 'जंगल के दावेदार' उपन्यास में व्यक्त सामाजिक चेतना पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें।

उ) ——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

3.7 पठनीय पुस्तकें

1. जंगल के दावेदार– महाश्वेता देवी।
2. आदिवासी भाषा और शिक्षा– सं. रमणिका गुप्ता।
3. झारखंड के आदिवासियों के बीच– वीर भारत तलवार।

4. आदिवासी विकास, उपलब्धियाँ एवं चुनौतियाँ– एस.एन. चौधरी, मनीषा मिश्रा।
5. आदिवासी संघर्ष गाथा– विनोद कुमार।
6. आदिवासी कौन– सं. रमणिका गुप्ता।
7. आदिवासी विकास : एक सैद्धान्तिक विवेचन– डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा।
8. आदिवासी और उनका इतिहास– हरिश्चन्द्र शाक्य।
9. आदिवासी विकास से विस्थापन, सं. रमणिका गुप्ता।

……

M.A Hindi
Course Code : Hin- 403
UNIT - I
Lesson No. 4
Semester - IV

'जंगल के दावेदार' के प्रमुख पात्र

4.0 रूपरेखा

4.1 उद्देश्य
4.2 प्रस्तावना
4.3 'जंगल के दावेदार' के प्रमुख पात्र
    4.3.1 बीरसा
    4.3.2 धानी
    4.3.3 अमूल्य बाबू
    4.3.4 साली
4.4 सारांश
4.5 कठिन शब्द
4.6 अभ्यासार्थ प्रश्न
4.7 पठनीय पुस्तकें

4.1 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययनोपरान्त आप उलगुलान आंदोलन के प्रमुख पात्र बीरसा के चरित्र की विशेषताएँ तथा इस आंदोलन में बीरसा को सहयोग करने वाले प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना

श्रेष्ठ रचना का श्रेय उसके चरित्र निर्माण को जाता है। चरित्र के माध्यम से ही साहित्यकार मानव–मन की प्रवृत्तियों को उद्घाटित करता है। चरित्र कथा को विस्तार देते हैं क्योंकि उनके माध्यम से घटित घटनाएँ एवं उद्घाटित भाव–विचार एक ओर यहाँ उसके चरित्र के गुण व दोष को हमारे सामने लाते हैं वहीं दूसरी ओर कथा को विस्तार देकर मुख्य उद्देश्य की पूर्ति भी करते हैं। इसलिए चरित्र के बिना कथा सम्भव नहीं। कथा में व्यक्त पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ ही रचना को उत्कृष्ट बनाती हैं। पात्रों के जीवन के उतार–चढ़ाव से ही पाठक के मनमस्तिष्क की रोचकता प्रभावित होती है। महाश्वेता देवी कृत 'जंगल के दावेदार' उपन्यास भी उत्कृष्ट चरित्र निर्माण के कारण ही श्रेष्ठ रचना बन पाई है। इस कृति को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलना इसकी श्रेष्ठता को ही प्रदर्शित करता है।

4.3 'जंगल के दावेदार' के प्रमुख पात्र

'जंगल के दावेदार' का प्रमुख पात्र बीरसा मुण्डा है जिसने उलगुलान आंदोलन चलाया था और बीरसा के इस आंदोलन में जिन व्यक्तियों ने सहयोग किया है उनमें धानी और साली प्रमुख हैं। अमूल्य बाबू मुण्डा न होते हुए भी बीरसा की परोक्ष रूप से सहायता करता है। इसलिए इन सबके चरित्र की विशेषताओं का अध्ययन करना अनिवार्य है।

4.3.1 बीरसा

बीरसा 'जंगल के दावेदार' उपन्यास का प्रमुख पात्र है। यह वही बीरसा मुण्डा है जो 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में छोटा नागपुर में अंग्रेज़ी शासन और समाज के उच्च वर्गों द्वारा किए जा रहे शोषण के विरुद्ध 'उलगुलान' आंदोलन चलाकर विद्रोह का झंडा लिए खड़ा था। जिसका जन्म 1875 को बाम्बा में सुगाना मुण्डा और करमी के घर बृहस्पतिवार को हुआ इसलिए नाम रखा गया 'बीरसा'। बीरसा को जन्म से ही सब मुण्डा जाति से भिन्न मानते थे उसके शारीरिक सौंदर्य को देखकर सब कहते कि "शक्ल बड़ी सुन्दर निकल गयी। मुण्डा लोगों के घर इतना लम्बा, सुगठित शरीर ऐसी आँखें देखने में नहीं आती।" बीरसा के चरित्र की विशेषताएँ ही उसे मूण्डा जाति का नायक बनाती हैं इसलिए उसकी चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन करना अनिवार्य हो जाता है।

विचित्र व्यक्तित्व

बीरसा बचपन से ही स्वप्नदर्शी था। मुण्डा लोगों की फटी गुदड़ी गृहस्थी उसे तकलीफ पहुँचाती थी इसलिए वह मुण्डा जाति को इससे छुटकारा दिलाना चाहता था। मुण्डा जाति में कोई भी आठ वर्ष का लड़का पढ़ने नहीं जाता था। बीरसा भी सभी की भाँति "बकरियाँ चराकर, जंगल से काठ–पत्ते–फल–कन्द–शहद लाकर घर में मदद करता।" लेकिन बीरसा बड़ा होकर अपने परिवार की इच्छानुसार उन्हें खाना उपलब्ध करवाना चाहता था। बीरसा और उसके बड़े भाई कोम्ता को काम की खोज में जब उसके मामा निबाई मुण्डा आयूभातू अपने संग ले गए तब कोम्ता तो मामा के साथ कुण्डी बरतोली भूरा मुण्डा के खेतों में काम करने और

गाय चराने चला गया लेकिन बीरसा को उसकी मौसी जोनी अपने पास रहने को कहती है तब वह कहता है– ''माँ से कहकर आया हूँ। मैं बड़ा हो गया हूँ। बड़ा बनूँगा। माँ को बोरा–भर नमक लाकर दूँगा, डब्बा–भर दाल और दाना ला दूँगा।'' यही नहीं वह शिक्षा भी प्रचारक बनने के लिए लेना चाहता है। जयपाल नाग की पाठशाला सालगा में थी और आयूभातू से सालगा पाठशाला का रास्ता दुर्गम था लेकिन नन्हा बीरसा किसी से कभी नहीं डरा। मुश्किलों का सामना करते हुए जंगल की राह पैदल सालगा से आयूभातू आता–जाता। छोटे से बीरसा के मन में स्वप्न बहुत बड़ा था इसलिए वह जानता था कि उसे पूरा करने के लिए उसे पढ़ना होगा क्योंकि उसका कहना था कि ''दिकू लोगों की भाषा सीखने से ही वह दिकू लोगों के हाथों से घर–जमीन बचा सकेगा। जानते सब थे, लेकिन चालकाड़ के मुण्डा सुगाना के लड़कों और लिखे–पढ़े जाने हुए जीवन– दोनों के बीच बहुत–सी दीवारें थीं– महाजन, ग्राम–प्रधान, पुलिस, दारोगा, हाकिम, पक्का रास्ता, बहुत–बहुत दीवारें थीं! उन सबको कैसे लाँघा जाए ? वह तो अभी भी छोटा था।'' बीरसा के स्वप्नों ने कभी उसे हार नहीं मानने दी। जंगल में आकर वह समाज तथा परिवार की बातें भूल स्वप्न देखने लगता है उसे वह जंगल अपना लगता और वहाँ की धरती माँ द्वारा मुक्ति की पुकार सुनकर वह विचलित होकर उसे मुक्त करवाने का स्वप्न खुली आँखों से देखता। सभी मुण्डा लड़के बंसी बजाते थे लेकिन बीरसा नाजाने किस साँस से बजाता था कि जंगल के पशु–पक्षी उसके पास जमा हो जाते। अपने बेटे के विचित्र व्यवहार से करमी भी डर जाती। वह पति से बीरसा के विषय में कहती है, ''पता नहीं। पेट का लड़का। फिर भी अनचीन्हा–सा लगता है। वह कोम्ता की तरह नहीं है, किसी मुण्डा लड़के की तरह नहीं है, वह अजीब लड़का है।'' माँ की ममता भी बेटे के अनोखे व्यवहार से चिंतित है।

लोकप्रिय

मात्र परिवार का ही नहीं बीरसा तो सभी का मन जीतने वाला चरित्र रखता था। आठ वर्ष की आयु में ही मामा संग ननिहाल जाकर मामी और मासी का सबसे प्रिय बन गया। जब मौसी की शादी होने वाली थी और वह बीरसा को संग ले जाने की बात करती है तब मामी कहती है कि तूम मत जाना तेरे बिना सारा आयूभातू सूना हो जाएगा। इतना ही नहीं शालगा की पाठशाला में शिक्षक जयपाल नाग का भी स्नेह प्राप्त करता है। वह भी कहता है– ''जाना मत, बीरसा। तुम–सा दूसरा लड़का पाठशाला में नहीं है। मैं जो जानता हूँ, जितना जानता हूँ, तुझे सब सिखाऊँगा!'' आयूभातू में समान उम्र के लड़कों में भी वह लोकप्रिय हो जाता है। जर्मन चर्च में पढ़ते समय भी वह सहपाठियों का प्रेम प्राप्त करता है। मिशन से छुट्टी करके जब बीरसा वापिस लौटता तो मुंडा लड़के उसकी प्रतीक्षा कर रहे होते थे क्योंकि बीरसा को वे 'पहान' मानते थे अर्थात अपने दल का प्रधान एवं दलनेता। जब मुण्डा लड़के बीरसा को अमूल्य बाबू (जो बंगाली है और सब उसे दिकु समझते हैं) से सम्पर्क न रखने के लिए कहते हैं तो उस समय बीरसा द्वारा कहा गया वाक्य ''मैं उसे नहीं छोड़ूँगा, उसके लिए अगर तुम मुझे छोड़ते हो तो छोड़ दो।'' के पश्चात् सभी मुण्डा लड़के अपने सुझाव को त्याग देते हैं क्योंकि उनके अनुसार– ''तू हमलोगों में सबसे अच्छा है। तू अगर चाहता है, तो उसे दोस्त रखेंगे।'' बीरसा के एक बार कहने पर सभी मुण्डा लड़कों का मान जाना बीरसा की लोकप्रियता एवं नेतृत्व क्षमता का बोध करवाता है।

जाति बंधन से मुक्त

बीरसा चाहे मुण्डा था किन्तु उसने स्वयं को कभी भी जाति बंधन में बाँधकर नहीं रखा। न तो उसने किसी अन्य जीवन क्षेत्र से शिक्षा लेने से परहेज किया, न ही दिकु या अंग्रेजों के आचार–व्यवहार को ग्रहण करने में कोई आपत्ति दिखलाई। एक बार जब बीरसा के कर्तव्य शैथिल के कारण बीरसा के मौसा का एक बकरा उनकी जाति के शत्रु घासी मुण्डा के खेत में घुसकर उसकी रबी की फसल नष्ट कर देता है और धानी क्रोध में लाठी मारकर बकरे की टाँग तोड़ देता है। तब बीरसा हड्डी जोड़ने वाली एक लता लाकर उसका लेप बनाता है और टूटी हुई हड्डी को मिलाकर उसपर वह लेप लगा, रेंडी का पत्ता लपेटकर एक पतली लकड़ी से टाँग को बाँध देता है। इस उपचार के पश्चात् वह बकरे को एक स्थान पर घेरा बनाकर उसके भीतर बाँध देता है। इस उपचार को उसने दिकू लोगों के संसर्ग में रहकर सीखा है। मौसा द्वारा पूछने पर वह कहता है– ''दिकू लोगों के घोड़ों का पैर टूटने पर इसी तरह जुड़ता है। यह लता बड़ी अच्छी है।'' यही बिरसा भविष्य में कुल का एक ऐसा संस्कारक हो उठता है जो अभिज्ञता से आत्मोन्नयन की शिक्षा लेकर उसे अपने समाज एवं जाति में पूर्णतः फैला देता है।

दृढ़ निश्चयी

बीरसा एक दृढ़ निश्चयी पात्र है। उसने अपने जीवन काल में जो कार्य करने का सोचा, उसे दृढ़तापूर्वक पूर्ण किया है। जब वह चाईबासा के मिशन में भर्ती होने जाता है तब देर हो जाने के कारण मिशन के रेवरेंड साहब ने कहा कि अब भर्ती नहीं हो सकती किन्तु बीरसा दृढ़तापूर्वक कहता है– ''मैं लौटकर नहीं जाऊँगा।'' और वह अपने मित्रों के साथ मिशन के सामने पाकड़ के पेड़ के नीचे ही रात निकाल लेता है। सुबह साहब बीरसा के मित्रों को तो लौटा देते हैं किन्तु उसे भर्ती कर लेते हैं।

इसी तरह बीरसा की दृढ़ता तब भी सामने आई है जब मिशन के फादर नॅट्रेट, मुण्डा सरदारों को धोखेबाज़ कहकर बीरसा तथा अन्य मुण्डाओं को उनके आंदोलन में शामिल होने से रोकते हैं किन्तु बीरसा नॅट्रेट के मुख से सरदारों के लिए धोखेबाज़ शब्द सुनकर क्रोधित हो जाता है और आवेश में आकर मिशन भी छोड़ देता है। अमूल्य उसके भविष्य की चिंता करते हुए उसे साहब से माफी माँगने के लिए कहता है किन्तु बीरसा माफी नहीं माँगता। वह अमूल्य से कहता है– ''मुण्डाओं की पढ़ाई–लिखाई? मुण्डाओं का भविष्य? मुण्डा क्या बाबू हैं ? मुण्डा क्या दिकू हैं ? भविष्य की चिन्ता में रहकर पड़े–पड़े लात खाऊँ ?''

मिशन छोड़ने के पश्चात् वह बनगाँव के आनन्द पाँडे के वैष्णव आश्रम में चला गया। वहाँ मन की शांति के लिए वह प्रतिदिन तालाब के किनारे वंशी बजाता था। उसी वंशी को सुनकर गुंजा एवं राता दोनों बहनें बीरसा पर मुग्ध हो जाती हैं। राता तो ज़मीन–जायदाद आदि का लोभ दिखाकर बीरसा से शादी भी करना चाहती थी किन्तु बीरसा तो किसी अन्य सुक्ष्मतम अनुसंधान की खोज में था जिसे ये दोनों बहनें नहीं समझ सकती थीं। बनगाँव तो बिरसा के सत्यानुसंधान का एकांतवास पर्व था। इस समय उसका एक अलग ही व्यक्तित्व सामने आता है। सुनारा मुण्डा बीरसा के इसी रूप का उल्लेख करते हुए कहता है– ''बीरसा से

सब डरते थे। ऐसा कौन मुण्डा लड़का है? मिशन में साहब से आमने–सामने झगड़कर मिशन को छोड़ आया? ब्राह्मण के घर जाकर गले में जनेऊ पहन लिया। बराबर अस्थिर, अशान्त, चंचल रहता है। क्यों किसी चीज से उसे सुख–शान्ति नहीं मिलती?''

खटंगा में मौसा जी से मार खाने के पश्चात् वह कुण्डी बरतोली में कोम्ता के पास चला जाता है। कोम्ता के पास जाने का निर्णय भी इसलिए लेता है क्योंकि मौसी उससे बहुत प्रेम करती थी और मौसा द्वारा बीरसा के साथ रुखा व्यवहार करने से मौसी और मौसा में अक्सर झगड़ा हो जाता। बीरसा इसी झगड़े का अन्त करने के उद्देश्य से उनके जीवन से चला जाता है।

मुण्डाओं का भगवान

बीरसा को जंगल प्रिय था इसलिए वह जंगल की प्रत्येक जानकारी भी रखता था। जंगल में ही बीरसा का वनदेवी से साक्षात्कार होता है जो उससे मुक्ति की कामना करती है। वनदेवी के विलाप को सुनकर ही बीरसा में मुण्डाओं का भगवान बनने की भावना उत्पन्न होती है। परिणामस्वरुप वह जंगल से बाहर निकल धर्मसंस्कार व मुक्तिदाता के रूप में स्वयं को प्रतिष्ठित करता है। वनदेवी ने उससे कहा था कि तुझे भगवान बनना पड़ेगा। भगवान बनकर स्वयं तो कष्ट पाएगा किन्तु दूसरों को सुख देगा। वनदेवी के ये शब्द सुनकर बीरसा चिल्लाते हुए कहता है– ''दूँगा, सबको सुख दूँगा। हाँ, मैं भगवान बनूँगा, बीरसा भगवान! तब धरती का आबा बन जाऊँगा। हाँ, मुझमें उन चुटिया और नागु के रक्त का रक्त है। मेरे किए मुण्डा जीवित रहेंगे– मेरे कलेजे पर चोट करके, हाँ, मैं अपने खून से जानता हूँ। ...सब मेरा है! यह सारा जंगल मेरा है! मैं धरती का आबा हूँ।'' बीरसा के इस आत्मोन्मोचन के पश्चात् चालकाड़ के प्रायः सभी लोग उसे पागल समझने लगे, माता–पिता भी बेटे के इस रूप से चिंतित होते हैं।

राँची जेल में बंदी होने पर भी बीरसा वहाँ के कमिश्नर के समक्ष स्वयं को 'भगवान' चिन्हित करता है। जब कमिश्नर उससे पूछता है कि तुमने मुण्डाओं को विद्रोह के लिए उकसाया है तो वह कहता है– ''मैं भगवान हूँ। मैंने उनसे धर्म की बातें कहीं।'' इतना ही नहीं जेल में अमूल्य बाबू के साथ जो संवाद होता है उस समय भी बीरसा के हाव–भाव उसके विचित्र व्यक्तित्व के द्योतक हैं जिसका वर्णन उपन्यास में इस प्रकार हुआ है– ''बीरसा धीरे से बोला, सिर हिलाया, कम्बल खींचकर चित हो लेटकर एक हाथ की कोहनी जमीन पर टेककर हथेली पर सिर रखा। उसकी प्रत्येक भंगिमा, सिर हिलाना, देखना, उँगलियाँ हिलाना– सब में अपार आत्मविश्वास, स्थिरता, व्यक्तित्व और... और... और... और एक जान, उस जान में वह कितनी सामर्थ्य लिए था, वही जाने!'' बीरसा के विशाल व्यक्तित्व को देखकर ही तो सभी मुण्डा उसे भगवान मानते थे और यह विश्वास रखते थे कि वह उन्हें जंगल का अधिकार वापिस दिलाएगा। जेल में भी बंदी मुण्डा बीरसा की जंजीरों की आवाज़ सुनकर ही हिम्मत बनाए रखे थे। जिस दिन बीरसा की मृत्यु हुई उस दिन सभी बंदी मुण्डा घबरा गए। उस समय धानी मुण्डा द्वारा कहे गए शब्द– ''जंजीरे घसीटो भगवान, थोड़ा चलो तो, हाय रे, उस जंजीर की आवाज़ सुनकर ही तो हम जिन्दा हैं रे।'' स्पष्ट करते हैं कि बीरसा मुण्डाओं के जीवन में भगवान से कम नहीं था, उनकी सारी आशाएँ इसी बीरसा भगवान पर टीकी थीं।

क्रांतिकारी

बीरसा में क्रांतिकारी रूप को भी देखा जा सकता है। मुण्डाओं में पैदा होकर भी वह उनसे भिन्न था। जिसका उल्लेख लेखिका के इन शब्दों में हुआ है– ''बीरसा इन्हीं विश्वासों में बड़ा हुआ। उसे पता है कि मुण्डा बनकर कई लाख मुण्डा जिस तरह का जीवन बिताते हैं, उसके बाहर के जीवन की बात सोचना भी महापाप है। लेकिन बीरसा वही महापाप कर रहा था। उसके खून में उसके अनजाने कहीं विरोध पनप रहा था, जमा हो रहा था।'' वह मुण्डाओं के ऐतिहासिक जातिगत विश्वास को बनाए रखकर ही उनमें आत्मविश्वास का संचार करता है। मुडाओं में आत्मविश्वास पैदा करने के कारण ही बीरसा तेजी से जनप्रिय हो जाता है। डोन्का अपनी पत्नी साली से कहता है, ''उसे देखकर उसकी बातें सुनकर लगता है कि मेरी छाती में बाढ़ आ गई है साली, जैसे पहाड़ टूटता है। उसके पास जाकर ही मुझे पता चला कि मुण्डा होने में कितना गर्व है।'' बनगाँव में सुगाना मुण्डा जब भरमी, दासो तथा मातरी को बीरसा के पास भेजता है तो इनसे हुई वार्तालाप से बीरसा सामाजिक एवं राजनैतिक घटनास्रोतों को जान पाता है। भरमी द्वारा जब बीरसा को बोध होता है कि सरकार ने सिग्रिड़ा गाँव से उन्हें उखाड़ दिया है तो बीरसा वहीं से सीधा चाईबासा जंगल–ऑफिस में अर्जी दे आता है। आफिस के बाबू लोग उन्हें अपमानित एवं तिरस्कृत करते हैं तो बीरसा तीर से जख्मी कर डालने की धमकी के साथ उन्हें मुण्डाओं से अच्छा व्यवहार करने को कहता है। वह जानता है कि मुण्डा लोगों को आत्ममर्यादा लड़कर हासिल करनी पड़ेगी क्योंकि सरकार द्वारा जो कानून बनते हैं वह मुण्डा, कोल, उराँव लोगों के बारे में सोचकर नहीं बनते। इसलिए वह मुण्डाओं में विद्रोह का संचार करता है– ''मुण्डा लोगों को दुश्मनों का सामना करना होगा, नहीं तो सैकड़ों बरसों में भी देश को वापस नहीं पा सकेंगे। भयंकर लड़ाई होगी, तभी दुश्मनों का राज खतम होगा, नहीं तो नहीं। आज तमाम लोग हँसते हैं; हजारों मुण्डा लोगों के दिन रोने में बीत जाते हैं। अपना राज हो जाने पर ही मुण्डा हँस सकेंगे।'' बीरसा को अपने परिवार के सुख–दुख स्पर्श नहीं करते थे, उसकी भावनाओं के केन्द्र में तो मात्र मुण्डा समाज और जाति थी और वह उसे मात्र सरकार के शोषण से ही मुक्त नहीं करवाना चाहता था बल्कि जमींदार, जोतदार, दिकू से भी उनकी मुक्ति की कामना करता है जिसके लिए वह मुण्डाओं में विश्वास उत्पन्न करता है कि हमारी संख्या अधिक है और हमारे विद्रोह करने पर हम शोषणकर्ताओं से मुक्ति पा सकते हैं। वह नहीं चाहता था कि उसकी मृत्यु से उनका आंदोलन भी समाप्त हो, इसलिए वह मुण्डाओं को निर्देश देता है कि अदालत में मजिस्ट्रेट के सामने कोई मुझे न पहचाने। वह कहता है– ''मुझे ठग, धोखेबाज कहो, सब लोग गाली दो नुकसान नहीं है। लेकिन तुम सब बच जाओ। मुझे इसी से शांति मिलेगी।'' ऐसा वह इसलिए कहता है ताकि सभी मुण्डा जो जेल में बंद किए गए हैं, उन्हें आज़ादी मिल जाए और उसने जो आंदोलन चलाया है वह मुक्ति पाने से पहल समाप्त न हो।

अतः बिरसा इस उपन्यास का मुख्य पात्र है जिसका व्यक्ति जीवन, समष्टि जीवन में लीन हुआ है। वह मृत्यु के अन्तिम समय तक मुण्डा जाति के अधिकार के लिए आत्मनिवेदित रहा है।

4.3.2 धानी मुण्डा

धानी इस उपन्यास का वह पात्र है जिसने सन्थालों तथा सरदारों की मुलकई लड़ाई में भाग लिया

था और मुण्डाओं के उद्धार के लिए बीरसा में मुण्डा जाति के मुक्ति दाता भगवान की छवि को देखा। वह छोटानागपुर क्षेत्र के इतिहास का बहुदर्शी है। लेखिका ने उसके माध्यम से ही मुण्डाओं के इतिहास को पाठकों के सामने लाया है। उपन्यास के आरम्भ में जब बीरसा और अन्य मुण्डा जेल में बंदी थे उनके साथ धानी मुण्डा भी होता है जो अन्य मुण्डाओं को मुण्डा के इतिहास की कहानियाँ सुनाता है। उन कहानियों और संवादों से मुण्डा इतिहास के साथ–साथ धानी के चरित्र की विशेषताएँ भी सामने आती हैं। जैसे जब बंदी मुण्डा उसकी बातें सुनकर उससे पूछते कि तुम्हें सब कैसे पता है तो वह कहता, ''नहीं तो क्या तुमको मालूम होगा? मैं क्या आज का मानुस हूँ रे ? सन्थालों ने जब हूल किया था, तब मैंने पाँच सौ चाँद पार कर दिए थे। मैंने किसे नहीं देखा ? सिद्धू को देखा, कानू को। भागनादिही जाकर मैं उनके हूल में शामिल नहीं हुआ ?, कुचले से विष बनाता था, साँप का विष निकाल लेता था। मेरी तरह विष बनाना किसे आता था, बता तो ?'' धानी के इस संवाद से स्पष्ट हो जाता है कि वह विष निकालने और कुचला बनाने में कुशल था।

सर्वमुखी शोषण में शोषित मुण्डाओं का जीवन उनके गानों में उद्घाटित होता है जिसे धानी द्वारा गाए गए गीत में देखा जा सकता है। जवानी में धानी जो गीत गाता था उसके एक अंश का अर्थ इस प्रकार है– ''बेगार करते–करते मेरे कन्धों से खून बहने लगा है। जमींदार का सिपाही मुझे रात–दिन डाँटता रहता है। मैं दिन–रात रोता रहता हूँ। बेगार करते–करते मेरा यह हाल हो गया है। घर नहीं है, तो मुझे सुख कौन देगा? मैं दिन–रात रोता रहता हूँ। आँसुओं की तरह ही मेरा खून नोनखरा (नमकीन) हो गया है।'' धानी का यह गीत उसी दीन–हीन दशा को स्पष्ट कर देता है। धानी की गल्प–कहानी से आदि जनजाति के जीवन जीने की परम्परा भी स्पष्ट होती है। वह सबको बताता है कि दिकू लोग क्षेत्र दखल करते हैं और मुण्डा एवं सवताल लोग आपस में लड़ते–मरते हैं और फिर अन्य क्षेत्रों में भागना पड़ता है। वह अपने युवा समय का अनुभव बताता है जब छोटानागपुर के राजा के भाई हरनाथ शाही ने अपने गाँवों दूसरे देश के महाजन–ठेकेदारों को बेच दिए जिस कारण मुण्डाओं को अन्य क्षेत्रों में भागना पड़ा। दिकू की प्रवृत्ति का बोध भी धानी के संवादों से इस प्रकार होता है– ''और देख, दिकू घोड़ा चाहता हे, पैसा मुण्डा देगा। दिकू को अपनी पालकी चाहिए, दाम मुण्डा देगा, फिर कन्धे पर ढोएगा! दिकू को जो चाहिए– मुण्डा सब देगा। दिकू के ठेकेदार को साहब की अदालत में जुर्माना होने पर रुपए जमा करेंगे मुण्डा लोग! और बाद में जबरदस्ती रुपए उधार देगा मुण्डा को, और बाद में उसे ही उखाड़ फेंकेगा!'' मुण्डाओं को दिकू से अवगत करवाने में धानी के इन संवादों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

धानी हार से हतोत्साहित होने वाला नहीं है इसलिए वृद्ध धानी मुण्डा सरदारों के आंदोलन के व्यर्थ हो जाने पर निराश नहीं होता, बल्कि मुण्डा जाति के आत्मजागरण के लिए वह एक समर्पित सिपाही की भूमिका निभाता है जिसका बोध उसकी गतिविधियों से हो जाता है। वह मुण्डा जागरण के लिए अंधेरी रातों में भी पथिक की भांति स्वतंत्रता के दीप को लेकर सत्य पक्ष की खोज में अकेला निकल पड़ा था। बीरसा द्वारा बार–बार तिरस्कृत एवं उपेक्षित होने के उपरान्त भी वह बीरसा के मध्य 'भगवान' के आत्मजागरण को जगाने का प्रयास नहीं छोड़ता क्योंकि उसे विश्वास था कि भगवान बनने के सभी लक्षण बिरसा में व्याप्त हैं, जो

भगवान मुण्डा लोगों की ओर से मुलकी लड़ाई लड़कर, सब दिकूओं को भगाकर गाँव वालों की बस्ती बना देगा वह कोई और नहीं, बीरसा ही है। इसलिए वह बीरसा से कहता है– ''बीरसा, तू कर सकता है। छोटानागपुर तेरे आदि–पुरुषों का बनाया हुआ है। तू भगवान बन सकता है।''

धानी में रणकौशल को भी देख सकते हैं। साहबों के अत्याचारों से जब मुण्डा संत्रस्त और दिशाहीन होते हैं, उस समय धानी मात्र विद्रोह की सम्भावना को ही नहीं टटोलता, बल्कि इस विद्रोह में नई शक्ति का संचार करने की परिकल्पना भी करता है। बीरसा को भगवान बनने के लिए कहना तथा मिशन के प्रति बीरसा के मध्य द्वेष भावना को पैदा करना उसके रणकौशल का परिणाम है। वह बीरसा को कहता है– ''तू वह मिशन छोड़ दे। साहब क्या कहते हैं– मुण्डा जंगली हैं, नंगे रहते हैं। सारे मुण्डा चोर और डाकू हैं। वह मिशन छोड़ दे।'' धानी के इस संवाद से अपनी जाति के प्रति उसकी गंभीरता का बोध भी होता है।

1895 में जब बीरसा जेल में था तब बीरसा के भावावेश का प्रसार करने वाले अनुगामियों में वृद्ध धानी मुण्डा का स्थान प्रमुख है। बीरसा की अनुपस्थिति में जब दो साल फसल नहीं हुई, कर्ज–उधार नहीं मिला, लगान बढ़ गए, बेगारी का अधिक शोर मचा तो उस समय भी धानी ने मुण्डाओं को जमींदारों के घर से धान लेने की बुद्धि दी। जिस व्रिदोह की बीज परम्परा को संचारित करने का व्रत लेकर धानी बीरसा के उत्थान से मृत्यु तक शांत, धीर–गंभीर चित से लगा था उसका अवसान 9 जून 1900 ई. को हुआ जब बीरसा का शवदाह हो जाने के पश्चात् जेल में ही उसकी गोद में अट्ठारह वर्षीय बिरसारत लड़के सुनारा की मृत्यु हुई। सुनारा के अनुरोध पर वह निराशा के गहन अंधकार के मध्य भी उसकी अंतिम इच्छा को पूर्ण करने के लिए उलगुलान का गीत गाता है जिसका भावार्थ है– ''ओ भाई, ओ बहनों, ओ बच्चो, भागो, जान बचाओ! आँधी उठी है। ओ भाई ओ बहनो। आँधी धूल की छाती में, आकाश को ढके कुहासे में देखो, अपना देश वह छीन ले गए। ओ भाई, ओ बहनों! बाद में फिर राह नहीं मिलेगा रे। सब अँधेरा–अँधेरा हो रहा है। ओ भाई, ओ बहनो...!'' इस गीत को गाते जब धानी रूक गया तब सारे मुण्डा के मुख से एक साथ एक संगीत निकलता है जो इस बात का प्रमाण था कि इस दुख से उलगुलान का अंत नहीं, यह जागकर रहेगा। 91 वर्षीय धानी इस गीत के माध्यम से पूणः आशा को धारण किए अन्य मुण्डाओं में इसका संचार कर देता है।

अतः मुण्डाओं की स्वाधीनता की लड़ाई के स्वप्न में अपने बाल सफेद करने वाला धानी मुण्डा, बीरसा को मुण्डाओं के मुक्तिदाता 'भगवान' के आसन पर प्रतिष्ठित करने के लिए किशोर उम्र से ही छाया की भांति उसका पीछा करता है और अन्ततः उसके स्वप्न को हम पूरा होते भी देखते हैं जब बीरसा धर्म संस्कार का त्याग करके गाँव–गाँव तीर भेजना आरम्भ करता है तथा 'उलगुलान' आंदोलन के रूप में अपने विरोध की शुरूआत करता है। बीरसा तो उपन्यास का नायक है किन्तु उसे नायक बनाने में धानी मुण्डा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है इसलिए धानी को भी उपन्यास के अहम पात्रों में गिना जा सकता है। वह पात्र जिसके बिना प्रमुख पात्र बीरसा के चरित्र को गति मिलना कठिन था।

4.3.3 अमूल्य बाबू

राँची के अनाथाश्रम में पला अमूल्य, चाईबासा के जर्मन मिशन में पढ़ता था। बीरसा के जर्मन मिशन में दाखिला लेने के उपरान्त अमूल्य की उससे मित्रता हो जाती है। इसी मिशन में वह अन्य मुण्डा लड़कों के सम्पर्क में भी आता है। उसके भीतर जातिगत भेद–भावना नहीं थी इसलिए वह सबको अपना समझता था किन्तु मुलकई लड़ाई के उत्ताप समय में अमूल्य को बंगाली होने के कारण मुण्डा युवकों की संकीर्ण मानसिकता के चलते उपेक्षित होना पड़ा। यहाँ तक कि वे बीरसा को भी अमूल्य से दूरी बनाने को कहते हैं– ''तू अमूल्य के साथ क्यों मिलता–जुलता है? वह बाबू है, दिकू बनेगा। वह मुण्डा लोगों का दुश्मन है। कोई बाबू लड़का किसी दिन मुण्डा लड़कों का दोस्त नहीं हुआ। हो ही नहीं सकता।'' अन्य मुण्डा तो अमूल्य का विरोध करते हैं किन्तु बीरसा उनकी इस मानसिकता का प्रतिरोध करता है। अमुल्य को बीरसा की सहानुभूति तो मिलती है लेकिन पूर्ण विश्वास नहीं मिलता, जिसका बोध बीरसा द्वारा अमूल्य को कहे गए इन शब्दों से होता है– ''तुम आज अच्छे हो। जब मिशन से निकलोगे, जब डॉक्टर बनोगे, तब क्या अच्छे रहोगे? मेरे साथ बात करने में भी शरम आएगी!'' चाहे बीरसा तथा अन्य मुण्डा अमुल्य बाबू पर पूर्ण विश्वास नहीं कर पाते, फिर भी अमुल्य उनके प्रति कोई द्वेष भावना नहीं रखता।

उलगुलान आंदोलन के समय जब बीरसा को जेल हुई थी और उसे राँची जेल में बंदी बनाकर रखा गया था उस समय बीरसा से पूछताछ करने के लिए एक दुभाषिए व्यक्ति की आवश्यकता होती है तब इस कार्य के लिए जिस मेडिकल असिस्टेन्ट को बुलाया जाता है वह कोई और नहीं बीरसा का बंगाली मित्र अमूल्य बाबू ही था। जेल का कमिश्नर इस सत्य से अवगत नहीं था कि अमूल्य और बीरसा दोनों जर्मन मिशन में सहपाठी रह चुके हैं। दीर्घ समय के पश्चात् दोनों की यह मुलाकात हो रही थी यहाँ बीरसा उसे सरकारी अफसर के रूप में देखकर उसकी भर्त्सना दिकू कहकर करता है, वहीं अमूल्य उसके प्रति संवेदना रखता है। जब वह रात को उससे मिलने आता है तो बीरसा उससे रूखाई से पूछता है कि तुम क्यों आए, तो उस समय वह कहता है– ''तुम्हें देखने।... जिससे कि तुम बीमार न पड़ो, यह देखना मेरी खास डयूटी है। इसीलिए आया हूँ।'' इतना ही नहीं जब बीरसा उसे गुप्त रूप से सरकारी संचालन की जानकारी बताने को कहता है, तो वह सहमत हो जाता है और दो–चार दिन में ही मुण्डाओं के प्रति सरकार की रणनीति की जानकारी हासिल करके बीरसा को सब बता देता है।

अमूल्य व्यवहार से समाजसेवी मानसिकता वाला व्यक्ति था जिसका बोध लेखिका ने उपन्यास के आरम्भ में ही किया है– ''डिप्टी–सुपरिटेंडेण्ड, क्रिस्तान लड़का। अच्छी तनख्वाह पाता है। लेकिन राँची शहर में हमेशा मुहल्ले–मुहल्ले घूमता है, सबके साथ मिलता–जुलता है, समाज–सेवा करने जाता है।'' अमूल्य में जातिगत भेद–भावना नहीं थी इसलिए मुण्डाओं के प्रति भी उसका झुकाव था। यह मुण्डाओं के प्रति उसकी सहानुभूति ही थी जिसके चलते वह आदिवासी हमदर्द बैरिस्टर जैकब को पत्र भेजकर मुण्डाओं के साथ हो रहे अत्याचार की सूचना देने का जोखम उठाता है तथा कलकत्ता के 'अमृतबाजार पत्रिका', 'द बेंगाली' और 'द हिन्दू पेट्रिएट' समाचार पत्रों में बीरसा के विद्रोह की खबरें भी भेजता है।

बीरसा को जेल में जहर देने से मृत्यु हुई थी किन्तु सरकारी विवरण में उसकी मृत्यु हैजे द्वारा बताई गई। अमूल्य इस सत्य को भी बैरिस्टर जेकब तक पत्र द्वारा पहुँचाता है– "बीरसा के सम्बन्ध में सरकारी विवरण तैयार हो गया है। उसमें कहा गया है कि जेल से कचहरी जाने के रास्ते में बीरसा ने भी बाहर कुछ खा लिया था। लेकिन गार्ड और कैदियों से कड़ी जिरह करने पर पता चल सकता है कि बीरसा ने सिर्फ माथा और गर्दन धोने के लिए पानी मांगा था– और वह पानी भी हवलदार के लोटे से। पानी लेते–न–लेते कमर की जंजीर खींचकर गार्ड ने कहा था : 'वक्त हो गया है' इसलिए बीरसा ने वह पानी भी इस्तेमाल नहीं किया।" वह जेकब को यह भी बताता है कि बीरसा 30 मई से बीमार था और इस दौरान उसकी चिकित्सा और आहार, सबका निर्णय स्वयं जेल–सुपरिटेंडेण्ट ने किया है। अमूल्य द्वारा बीरसा की मृत्यु सम्बन्धी सारी जानकारी आदिवासी से सहानुभूति रखने वाले वकील जेकब को देना, उसके नेक दिल, संवेदनशील तथा मानवता प्रेमी व्यक्ति होने का परिचायक है। वह मुण्डाओं की जीत और इनसाफ की कामना करता था किन्तु मुण्डाओं की पराजय और बिरसा की मृत्यु ने उसे हताश कर दिया। उसका विवेक और मूल्यबोध मुण्डाओं से एकात्म हो चुके थे इसलिए वह नौकरी से त्याग पत्र दे देता है। जेकब द्वारा त्याग पत्र का कारण पूछने पर वह कहता है– "क्यों, यह क्या मुझे भी खुद खाक–धूल पता है? मेरा कुछ भी तो नहीं है! मैं इसी शिक्षा–व्यवस्था, समाज–व्यवस्था का आदमी हूँ। यह व्यवस्था न तो देती है मौलिक मानवीय अधिकार, न सिखाती है विवेक–बोध। मुझे अब और कुछ छोड़ने को नहीं रहा! मैं अब और कुछ कर नहीं सकता। मैं न तो तीर छोड़ सकता हूँ, न जानता हूँ बलोया चलाना। मैं इतना ही कर सकता था!" अमूल्य द्वारा कहे ये शब्द वास्तव में उसका अप्रत्यक्ष रूप से मुण्डाओं को दिया गया उसका समर्थन है।

4.3.4 साली

साली वृद्ध डोन्का मुण्डा की युवा पत्नी है जिसका डोन्का से अनमेल विवाह हुआ है। साली से पहले उसकी दो पत्नियाँ मर चुकी थीं। साली के पिता ने डोन्का के साथ उसका विवाह मात्र इसलिए कर दिया कि वह मुखिया था। उसके घर में साली को खाने, पहनने की सुविधा मिल जाएगी। एक अभावग्रस्त मुण्डा पिता के लिए अपनी बेटी के लिए इससे अच्छा वर और क्या हो सकता था किन्तु साली के सारे अरमान टूट गए– "छुटपन से साली सुनती आई थी कि वह बहुत सुन्दर है। उसका ब्याह होगा, देखने लायक जमाई आएगा। लेकिन डोन्का के साथ ब्याह होने से मन में सुख नहीं रहा। ब्याह का कोई सुख न मिला। लेकिन पेट के लिए भात, पहनने को कपड़ा, सिर के लिए तेल का सहारा बड़ा सहारा था। बूढ़े वर का दुःख साली भूल गई।" साली सुविधाओं के लिए अपने हृदय की वेदना तो भूल जाती है किन्तु डोन्का के बीरसाइत होने पर जब वह अन्य बीरसाइतों को अपने घर भुलाता और साली को भात राँधने के लिए कहता तो साली धीरे–धीरे क्रोध करने लगी। क्रोध का कारण डोन्का का अपने परिवार तथा खेतों को भूल पूर्ण रूप से बीरसा को समर्पित होना भी था।

डोन्का की अवज्ञा उसे अपने भाग्य को कोसने पर मजबूर करती है, "उसने गालियाँ देना शुरू किया– अपने बाप को, डोन्का को, भाग्य को।" डोन्का से रूष्ट होने पर जब वह बीरसा के सामने ही पति

पर क्रोध करने लगती है तब बीरसा की सम्मोहिनी से वह डोन्का पर क्रोध ही नहीं करती बल्कि स्वयं भी बीरसा के लिए कार्य करती हैं। वह पति से कहती है, "मैं भी कुसुम के फूल से कपड़े पीले रंग लूँगी। पति–पत्नी जिस तरह रहते हैं, वैसे नहीं रहूँगी ? मैं भी जाकर चालकाड़ से उसकी बातें सुन आऊँगी।''

साली बहुत ही साहसी और चतुर नारी थी। जब बीरसा जेल में था उस समय वह बीरसा के उलगुलान आंदोलन के लिए कार्य करती है। गर्भवती महिलाओं की तरह भरा–भरा शरीर लेकर अकेले जंगलों में घुम–घुमकर मुण्डाओं के लिए हथियार लाती थी। अपनी चतुराई से ही वह भरत दरोगा की आँखों में धूल झोंककर मानी पहानी को तीर हस्तांतरित कर देती है। साली को विश्वास है कि जो भी कठिनाई वे देख रहे हैं वह बीरसा के आने से समाप्त हो गई। वह इसी विश्वास के साथ जी रही थी। जब वह धानी से जंगल में तीर लेने आती है तब धानी उससे कहता है कि इतने अँधेरे में कैसे जाओगी। उस समय वह कहती है– ''अब अँधेरे में नहीं डरती। किसी भी चीज़ से नहीं डरती। पहले डरती थी। अब यही लगता– ये दिन भी दिन नहीं हैं, अब जो हो रहा है, जिस तरह दिन कट रहे हैं, सब मिट जाएगा! सत्य रहेगा केवल बीरसा के लौट आने का दिन। बीरसा के आने से सब बदल जाएगा!''

जेल से भागे धानी मुण्डा को जब साली शरण देती है तो शंकावश दारोगा उसका पीछा करता रहता था। दारोगा द्वारा की गई पूछताछ का साली निडरता एवं चतुराई से सामना करती है– ''कितनी बार बताया कौन, क्या, मुझे कुछ नहीं पता। मुझे क्या पता कि वह बीरसाइत हो गया।... पता होता तो घर में घुसने देतीं? धानी मिले तो मैं उसके पैर तोड़ दूँगी। तुम्हें तो बाद में खबर दूँगी।'' दरोगा के सामने धानी पर क्रोध करना और बीरसाइतओं से अपना कोई नाता न बताना उसके साहस और चतुराई का ही परिचय देता है।

बीरसा जब साली से उसका बच्चा माँगता है तो वह अपना नन्हा–सा बच्चा भी बीरसा को सौंप देती है जिसका नाम बीरसा ने परिबा रखा। साली बीरसा को बताती है कि ''पहले लोग बहुत हँसते थे। तुम औरतें! तुम जाकर भगवान का करोगी? पुलिस तो दो बरस से आदमियों के पीछे फिर रही है। हम औरतें काम करती थीं। अब कोई नहीं हँसता।'' साली का उक्त कथन स्पष्ट करता है कि जब पुरुष उलगुलान के लिए कार्य नहीं कर पा रहे थे तब ये औरतें इस उलगुलान का कार्य करती हैं।

अतः वृद्ध डोन्का की पत्नी साली अपने दाम्पत्य जीवन में चाहे अतृप्ति रही है किन्तु बीरसा के उलगुलान में शामिल होकर वह एक नये रूप में चरितार्थ होती है। इसलिए यौवन वेदना कहीं भी उद्घाटित नहीं हो पाती। उसकी क्रोध ज्वाला तो विरोधी अंग्रेजों के कार्यों के प्रति परिचालित हुई है।

4.4 सारांश

'जंगल के दावेदार' के मूल केंद्र में मुंडाओं के अस्तित्व का संकट और उससे मुक्त होने के लिए उनके प्रयास हैं बीरसा इस मुक्ति संघर्ष का केन्द्र है और धानी, साली, अमूल्य आदि उसके इस संघर्ष में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहायता करने वाले पात्र हैं जिनके सहयोग के बिना बीरसा के उलगुलान आंदोलन को गति मिलना सम्भव न था। धानी ने तो बीरसा को मुण्डाओं का भगवान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

साली उस समय बीरसा के उलगुलान में सहयोग देती है जब अन्य मुण्डा पुरुष यह कार्य पूर्ण रूप कर नहीं पा रहे थे। अमूल्य मुण्डा न होने पर भी बीरसा को गुप्त रूप से सहयोग देता है। अतः यह सभी पात्र इस बीरसा के उलगुलान में अपनी अह्म भूमिका को अदा करते हैं।

4.5 कठिन शब्द

1. उलगुलान
2. दिकू
3. आत्मोन्नयन
4. सुक्ष्मतम
5. एकांतवास
6. जोतदार
7. मुलकई
8. हतोत्साहित
9. हस्तांतरित
10. आत्मोन्मोचन

4.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) 'जंगल के दावेदार' के प्रमुख पात्र का चरित्र–चित्रण कीजिए।

____

____

____

____

____

____

____

____

प्र2) वृद्ध धानी मुण्डा के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

____

____

____

____

____

____

____

____

प्र3) साली एक साहसी नारी है। स्पष्ट कीजिए।

____

____

____

____

____

____

____

____

प्र4) अमुल्य बाबू का चरित्र–चित्रण करें।

____

____

____

____

____

——

——

——

4.7 पठनीय पुस्तकें

1. जंगल के दावेदार– महाश्वेता देवी

——————————

M.A Hindi **UNIT - II** **Lesson No. 5**
Course Code : Hin- 403 **Semester - IV**

तकषी शिवशंकर पिल्लै का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

5.0 रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 व्यक्तित्व

5.4 कृतित्व

5.5 सारांश

5.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

5.7 पठनीय पुस्तकें

5.1 उद्देश्य

इस अध्याय में तकषी शिवशंकर पिल्लै के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में परिचय प्राप्त कर सकेंगे। मलयालम साहित्य में शिवशंकर पिल्लै का नाम सर्वश्रेष्ठ है, इन्होंने मलयालम साहित्य को उच्चत्तम स्तर पर पहुँचाने में विशेष भूमिका निभाई है। इनके साहित्य एवं व्यक्तित्व निर्माण में किन–किन घटकों का प्रभाव रहा है, यह जान सकेंगे।

5.2 प्रस्तावना

तकषी वेदना को आत्मसात् करने वाले लेखक हैं। सबसे बड़ा दुःख वह मृत्यु को मानते हैं। सामान्य जन के साथ जीने एवं चलने वाले तकषी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। इनके साहित्य की आवोहवा ने मलयालम साहित्य को नया मोड़ दिया। इस इकाई में शिवशंकर पिल्लै के जीवन पर दृष्टि डालेंगे।

5.3 तकषी शिवशंकर पिल्लै का व्यक्तित्व

तकषी शिवशंकर पिल्लै मलयालम भाषा के विख्यात रचनाकार हैं। इनका जन्म 17 अप्रैल 1912 को मध्य तिरुवितांकुर के एक गाँव तकषी में हुआ था। इनका वास्तविक नाम के.के.शिवशंकर पिल्लै है। तकषी शिवशंकर पिल्लै इनका साहित्यिक नाम है। तकषी इनके गाँव का नाम है जोकि मध्य केरल के आलप्पुषा जिले के अम्पलप्पुषा तालुक में सागर के किनारे स्थित है। तकषी गाँव केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम् से उत्तर की ओर डेढ़ सौ किलोमीटर की दूरी पर है। इनकी माता का नाम पार्वती अम्मा तथा पिता का नाम पोरपल्लि कलत्तिल शंकर कुरूप था। वे अपने माता–पिता की दूसरी संतान थी। पहली संतान कन्या थी। इनके परिवार की दशा सामान्य थी। चावल की खेती इनका मुख्य पेशा था। कृषिवृति के अलावा इनके पिता कथकली एंव तुल्लन कलाओं के जानकार थे। लगभग आए दिन घर में पुराण पारायण होता रहता था। कहने का तात्पर्य यह है कि पुराण कथाओं से तकषी का परिचय घर पर ही हुआ था।

इनकी आरंभिक शिक्षा गाँव में हुई। इसके उपरान्त सातवीं कक्षा तक की पढ़ाई गाँव से बारह किलोमीटर दूर समुद्री तट पर स्थित अंपलप्पुषा स्कूल में हुई। 1933 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् इन्होंने लॉ कॉलेज में वकालत की पढ़ाई प्रारम्भ कर दी। 1935 में वकालत की परीक्षा पास करने पश्चात् वे त्रिवेंद्रम में ही रहे। उस समय कहानियों आदि में समाजवादी भावना पर ही जोर दिया जा रहा था और तकषी इस क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहे। तकषी ने सर्वप्रथम लघु–कथाकार के रूप में ख्याति प्राप्त की और आज भी अधिकतम मलयाली पाठक उन्हें इसी रूप में याद करते हैं। अंपलप्पुषा में इनका परिचय अरय समुदाय से हुआ। अरय समुदाय का जीवन–यापन मछुवारी से चलता था। इनके शरीर से मछली की बू आती थी। दोपहर का भोजन केले के पत्ते पर ले जाने की प्रथा थी। खाने की पोटली पर अक्सर चींटियाँ आक्रमण करती थी। चींटियों वाले हिस्से को अलग फेंक बाकी भोजन कर लिया जाता था। फेंके गए हिस्से को अरय बच्चे हड़पने को टूट पड़ते थे। गरीबी के ऐसे हालात थे कि वह चींटी और चावल दोनों खा जाते थे। गरीबी की ऐसी परिस्थिति में शायद ही कोई अरय बच्चा सातवीं की कक्षा तक पहुँच पाता था। कुछ अरय बच्चे ऐसे थे जो बड़े होने पर नाव, मछली जाल खरीद लेते, कुछ नाव खेने में लग जाते थे। कुछ ऐसे बच्चे भी होते थे जो सागर से लापता हो जाते थे। हाई स्कूल उन्होंने वैक्कम और करुवाट्टा के स्कूलों में पूरा किया। जहाँ पर भी अरय लोग थे।

घुमक्कड़ प्रवृति का होने के कारण नवीं कक्षा में फेल हो गए थे। मूलतः तकषी के भीतर दुनिया को जानने की उत्सुकता और प्रकृति के सौन्दर्य को परखने की प्रवृति थी। इसी दौरान कोच्ची में आयोजित प्रथम समस्त केरल साहित्य परिषद में शामिल होने तकषी भी गये और यहीं पर ज्ञानपीठ से नवाजे गये। जी.शंकर कुरुप जैसे कवियों से इनका परिचय हुआ। साहित्यिक जगत से जुड़े अनुभवों की इनकी बड़ी शुरुआत थी। करुवाट्टा से इन्होंने एन.एस.एस. हाई स्कूल में ही एस.एस.एल.सी. की परीक्षा पास की।

मलयालम के सुप्रसिद्ध नाटककार कैनिवकरा कुमार पिल्लै उस समय स्कूल के हेडमास्टर थे। किसी कक्षा में जब कभी अध्यापक नहीं होता तो वे पहुँच जाते और बच्चों को कहानियाँ सुनाने लगते। स्वयं तकषी

ने इसी तरह 'काबुलीवाला' कहानी सुनाने का लाभ उठाया था। कहानी की ओर प्रेरित करने वालों की स्मृति में बाद में 'कयर' नामक अपनी रचना जिन लोगों को समर्पित की है, उनमें केसरी के अलावा कैनिवकरा का नाम भी है।

प्लीडर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे वहीं पत्रकारिता में लग गये। इसी दौरान 'केसरी' पत्र के संपादक ए. बालकृष्ण पिल्लै से परिचय हुआ। बालकृष्ण पिल्लै एक ऐसे संपादक थे जिन्होंने मलयालियों को पश्चिमी साहित्यिक गतिविधियों से परिचय करवाया था। तकष़ी को इसका भरपूर लाभ मिला था। उनकी साहित्य सम्बन्धी संकल्पनाओं तथा वर्णननीति को पुख्ता करने में इन अनुभवों का काफी योगदान रहा।

23 वर्ष की आयु में नेटुमुटि गाँव में तेक्केमुरी की रहने वाली चेंपकशेरी चिरवकल कमलाक्षि अम्मा नाम की लड़की से विवाह हुआ। तकष़ी उन्हें 'कात्ता' नाम से पुकारते थे। तकष़ी अपनी उन्नति का कारण 'कात्ता' को ही मानते थे। इनकी पाँच संतानें थीं– चार लड़कियाँ और एक लड़का। इनके पास अट्ठाईस सेर की खेती थी। 1939 को तकष़ी म्यूनिसिप्ल कोर्ट के वकील बने। इस समय वह आर्थिक तंगी से गुज़र रहे थे। 1950 में उनकी माँ और उससे भी पहले उनके पिताजी की भी मृत्यु हो गई। 'रंडिडंगषि' तथा चेम्मीन के देशी–विदेशी भाषाओं में अनुवाद होने के बाद आर्थिक दशा में सुधार आया।

लेखक के साहित्यिक व्यक्तित्व का निर्माण करने में उसके आसपास का जीवन्त वातावरण और उस वातावरण को भेदने वाली उनकी तीक्षण–परीक्षण दृष्टि का योगदान रहा है । तकष़ी ने केरल के छोटे से छोटा गाँव और बड़े से बड़े शहर के बीच जीया है और बेहतरीन अनुभवों को बटोरा है। गरीबी में जीवन यापन करने वाले लोगों के आँसुओं को शिवशंकर पिल्लै ने महसूस किया है। तकष़ी सागर–तट कुट्टनाड़ की भौगोलिक प्रकृति और तत्संबंधित जीवनचर्या के विषय में बताते हैं कि इस प्रदेश की धरती भी मानवनिर्मित है। कुट्टनाड़ में बारहों महीने पानी भरा रहता है। नवम्बर से मई तक खेतों की मेड़ें पानी के तल पर लक्षित होती हैं। जून से वर्षाकाल आरम्भ होता है। कुटी (घर) के अंदर तक पानी भर जाता है। कुटी के अन्दर ऊँचा मंच बनाकर लोग रहते हैं। मंच से सीधे पानी में उतरना पड़ता है। घर–घर में अपनी–अपनी नाव होती है और ऐसी छोटी नाव भी जिसे एक छोटा बच्चा इस्तेमाल कर ले। पीने का पानी लाने के लिए घड़ा एवं बर्तन नाव में रखकर नाव चलाते हुए पीने के पानी तक पहुंचना होता है। खेतों से पानी रेचित करने के बाद खेती शुरू करते हैं। पुराने समय में चक्कि चलाकर और उसके बाद पम्प की सहायता से पानी का रेचन होता था। रेचन के बाद लकड़ियों एवं झाड़ियों से सीमाबंधन कर खेतों को अलग–अलग किया जाता है। तदुपरांत बीज रोपण शुरू होता है। कुट्टनाड की यह अपनी विशेष रीति है।

कुट्टनाड की कथाओं का, वैयक्तिक संबंध, पारिवारिक सम्बन्ध, पारिवारिक इतिहास, आचार–विचार, उत्सव–त्यौहार, मिथक, कृषि अनुभव, वर्षा, जल–प्लावन की कथाएँ आदि अनेक ज्ञानवर्धक, रोचक कार्य एवं घटनाएँ उनकी कहानियों में भरी पड़ी हैं। जो लेखक को परिपक्व, सावधान एवं समृद्ध बनाती है। तकष़ी का ऐसा मानना है कि बचपन में सुनी ऐसी कहानियों ने ही उन्हें समृद्ध बनाया है।

5.4 कृतित्व

तकषि के कुल कृतित्व पर यदि हम नज़र डालें तो वह संख्या में एक व्यक्ति द्वारा रचित रचनाओं की दृष्टि से भी बहुत पर्याप्त हैं। लेकिन तकषि का सारा लेखन एक जैसा नहीं है। उनकी रचना–यात्रा के भिन्न–भिन्न पड़ाव हैं और इन पड़ावों में उनकी रचनात्मकता ने भिन्न–भिन्न रूप अख्तियार किया है। आइए, तकषि की रचना–यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर नज़र डालें।

प्रथम चरण :– तकषि का आरंभ का जो लेखन है, वह उनके बाद के लेखन से काफी भिन्न है। प्रथम चरण के लेखन में उनकी कहानियों/उपन्यासों की चर्चा की जा सकती है जिन पर उस समय की बंगला कहानियों का रूमानी प्रभाव स्पष्ट है। इस संदर्भ में उनकी सन् 1931 में 'केसरी' में छपी कहानी 'विवाह के दिन' उल्लेखनीय है, जिसका घटनास्थल न तकषि गाँव है, न त्रिवेन्द्रम नगर। यह उत्तर में गंगा के किनारे किसी स्थान की कहानी है। बंगला के रूमानी प्रभाव के साथ–साथ तकषि पर विदेशी विशेषकर फ्रांसीसी कथाकारों (मोपांसा, ज़ोला) का गहरा असर था जो इस दौर की रचनाओं में प्रतिफलित हुआ दिखाई पड़ता है। 'बिना नाम और तारीख का एक पत्र' पर स्टीफन ज्वीग की 'लास्ट लेयर' का सीधा प्रभाव है। 'पिता कौन है' भी इसी प्रकार की कहानी है जिसमें तकषि मध्यवर्गीय नैतिकताओं को झकझोरते दिखाई देते हैं। इसी दौर में उनकी 'बाढ़ में' कहानी है जिसके बारे में कहा जाता है कि इसमें वे सारे तत्व मौजूद हैं जिन्होंने तकषि को आगे चलकर महान लेखक बनाया। रचना के इस पहले दौर में तकषि उपन्यास भी लिखने लगे थे। उनकी पहली प्रकाशित कृति उपन्यास ही है जिसका शीर्षक है 'प्रतिफलम' (1934) और दूसरा उपन्यास 'पतित पंकजम' जो 1935 में प्रकाशित हुआ। 1936 में एक तीसरा उपन्यास 'परमार्थगल' भी प्रकाशित हुआ। 'प्रतिफलम' उपन्यास ने प्रकाशित होते ही काफी विवाद खड़ा कर दिया। तकषि के ये तीनों ही उपन्यास मध्यवर्गीय नैतिकता पर सीधे चोट करते दिखाई पड़ते हैं, इसलिए इनकी आलोचना होना स्वाभाविक ही था। 'प्रतिफलम' में एक ऐसी लड़की की कहानी है जो अपने भाई को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए स्वयं देह–व्यापार करती है, 'पतित पंकजम' में एक लड़की को बारह साल की उम्र में ही वेश्यावृत्ति अपनाने को विवश होना पड़ता है। इसी तरह 'परमार्थगल' उस औरत की कथा है जो दो अवैध बच्चों को जन्म देती है– एक विवाह से पूर्व बलात्कार के कारण और दूसरा विवाह के बाद। यह माना जाता है कि अपनी सीधी सरल शैली के कारण इन उपन्यासों ने मलयालम गद्य लेखन में एक नये युग का सूत्रपात किया।

दूसरा चरण :– इस दूसरे चरण में तकषि की प्रमुख रचनाओं में 'तोट्टियुडे मकन' (भंगी का बेटा, 1945), 'रंटटिंड़षी' (दो सेर धान, 1948), 'तलयोडु' (कपाल, 1948) तथा 'तैंडीवर्गम' (भिखारी वर्ग, 1950) उपन्यास के रूप में प्रमुख हैं। और कहानी संग्रहों में 'अतियीषुक्कुकल' (अन्तर्धारा, 1945), 'नित्यकन्निका' (अविवाहित, 1945), 'चगानिकल' (मित्र, 1945) तथा 'इन्कलाब' (1950)। तकषि के रचनाकाल का यह वह दौर था जब समाज में स्थितियों में काफी तेजी से बदलाव आ रहा था। साहित्य में पुरोगमन साहित्य का प्रभाव बढ़ रहा था। आम आदमी अपनी समस्याओं के साथ साहित्य की विषयवस्तु बन रहा था। तकषि विदेशी प्रभाव की आलोचना झेल चुके थे। इन सब कारणों से तकषि के लेखन में एक नया मोड़ आया जो इस युग के लेखन

में स्पष्ट रूप से लक्षित होता है। 'भंगी का बेटा' एलैप्पी शहर के भंगियों की एक ऐसी यथार्थवादी कहानी है जिसमें एक भंगी चुहल मुत्तु ने नारकीय जीवन का अनुभव किया है, अपने पिता की लाश कुत्तों द्वारा खाई जाती देखी है। वह चाहता है कि उसका बेटा इस नरक से उबर आए इसलिए वह भंगियों का संगठन बनाकर आंदोलन के द्वारा भंगियों के जीवन में सुधार लाने का प्रयास करता है। किंतु आंदोलन के थोड़ा सफल होते ही आंदोलन को स्वार्थहित तबाह कर देता है और स्कूल में डाला गया उसका बेटा वहाँ से बहिष्कृत कर दिया जाता है। अंततः उसका बेटा भंगी ही बनता है। इसके बाद आया तकषि का उपन्यास 'दो सेर धान' जिसने तकषि को कृषि जीवन की यथार्थपरक संवेदनशील तस्वीर उतारने के कारण मलयालम के अग्रणी उपन्यासकारों की श्रेणी में ला खड़ा किया है।

इस दौर में तकषि पर एक ओर तो मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव लक्षित होता है, दूसरा उनकी यह समझ भी कि साहित्य द्वारा सामाजिक शक्तियों में हस्तक्षेप किया जा सकता है । वे मानते हुए दिखाई पड़ते हैं कि साहित्य में समस्या के साथ समाधान भी होना चाहिए। हालाँकि उनकी यह सोच बाज़दफा उनकी रचनाओं के खिलाफ ही जाती दिखलाई पड़ती है। इसी तरह प्रेमचंद की रचनाओं में नियति के जिस तत्व को वे नकारते हैं, वह उनकी रचनाओं में आए बिना भी नहीं रह पाता। तकषि के इस दौर के लेखन पर एक समालोचक का यह कथन उचित ही है कि ''यह ठीक है कि बंगला के रूमानी और फ्रांसीसी के यौन प्रभाव को तकषि ने काफ़ी पीछे छोड़ दिया लेकिन साथ ही राजनीतिक प्रभाव के कारण लेखन में वैचारिक तत्व का बाहुल्य रहा जिसने उसके कलात्मक पक्ष को काफ़ी दबा दिया।''

तीसरा चरण :– लेकिन तकषि तीसरे चरण के दौर के लेखन में वैचारिक पूर्वाग्रह से मुक्ति पा लेते हैं। यही कारण है कि वे सृजनात्मकता की ऊँचाइयों को छूने में सफल रहे। चेम्मीन (1955) के प्रकाशन के साथ ही उनकी रचना–यात्रा का तीसरा दौर शुरु होता है।

मलयालम उपन्यास शाखा को तकषि की देन :– तकषि महाकथाकार हैं। साठ वर्ष वे कथा कहते रहे। पाँच सौ कहानियाँ, अड़तालीस उपन्यास, दो आत्मकथात्मक रचनाएँ, एक यात्रा विवरण, एक नाटक उनकी रचनाएँ हैं। आत्मकथा, यात्राविवरण आदि अनेक विधाएँ हैं, तो भी जब तकषि कहने लगते हैं तो वे सब कहानी बन जाती हैं। तकषि बड़ी सरलता से कहानियाँ कहते रहे जैसी कोई निकट बैठकर दुःख–सुख बतियाना है।

पहले वे कहानियाँ लिखने लगे। कविता पर भी प्रयोग किया है लेकिन बीच में छोड़ दिया। जब वे स्कूल में पढ़ते थे तब से कहानी लिखने लगे। सारी की सारी दुःखपूर्ण कथाएँ। नित्यकन्यका, इनकलाब, घोषयात्रा, मानचुवट्टिल, पतिव्रता, प्रतीक्षकल, चंड़ातिकल, पुतुमलर, चंड़तिकल, अडियोषक्कुकल, ज्ञानपिरन्न नाड, चरित्रसत्यंगल आदि अनेक कहानी संकलन हैं। वे सब तकषि की कहानियाँ, चुनी कहानियाँ नामक ग्रंथ में अनन्तरकाले में प्रकाशित हुई हैं। 'तोट्टिल्ला' (पराजित नहीं हुआ) नामक एक नाटक लिखा। नाटकीयता से पूर्ण कहानियाँ लिखने के कारण नाटक रचना में उन्होंने अधिक ध्यान नहीं दिया। अमरीका पर्यटन के अनुभवों के आधार पर अमेरिकन तिरश्शीला (अमेरिकन पर्दा) लिखा। आत्मकथात्मक दो रचनाएँ उन्होंने लिखीं।

बड़ी विनम्रता से उन्होंने लिखा है कि आत्मकथा लिखने का महत्व मुझ में नही है, इसलिए कुछ अनुभवों को आलेखित कर रहा हूँ। स्मृति के तटों पर और मेरा वकील जीवन उनकी आत्म कथापरक रचनाएँ हैं। एक ही साथ दोनों को पढ़ लेने पर तकषि के संपूर्ण जीवन का बड़ा हिस्सा परिचित हो जाता है। बाकी रचनाएँ सबके सब उपन्यास हैं। लंबे चौड़े रूप में अधिकाधिक कहने पर भी और कहते जाने की भावतीव्रता तकषि के उपन्यासों में मिलती हैं।

अड़तालीस उपन्यास लिखना किसी भी भाषा साहित्य में एक असाधारण बात है। लेकिन तकषि ने उसे कर दिखाया। सब भिन्न–भिन्न विषयों को केन्द्र बनाकर। उनकी निरीक्षण क्षमता अपार थी। वे बड़े तीव्र अन्तर्मुखी नहीं थे। चारों तरफ के मानव को देखना, उनका परिचय प्राप्त करना, उनके सुख–दुखों की जानकारी लेना और उन्हें मन के किसी कोने में सुरक्षित रखना– इतने कार्य को बड़ी अवधानता से करते रहे। इसलिए सौ मनुष्यों की कथा कहने की शक्ति उन्हें प्राप्त हुई।

1934 में तकषि का अगला उपन्यास 'त्याग का फल' प्रकाशित हुआ। अगले वर्ष में 'पतित पंकज' निकाला गया। 1934 से 1998 तक उनके अड़तालीस उपन्यास प्रकाशित हो गये। औसतन डेढ वर्ष में एक उपन्यास। सुशील, परमार्थ, विल्पनक्कारी (बेचनेवाली) तलयोड (खोपड़ी) तोट्टियुडे मकन (भंगी का पुत्र) रंडिड़ंगषि (दो सेर) तेंडिवर्मन (भिखमंगे) अवन्टे स्मरणकल (उनकी यादें) चेम्मीन, औसेप्पिन्टे मक्कल (औसेप की सन्तानें) अंचु पेण्णुंगल (पाँच औरतें) जीवितम सुन्दरमाणु, पक्षे (जीवन सुन्दर है, लेकिन) एणिप्पडिकल (सीढ़ियाँ) धर्मनीतियों अल्लजीवितम् (धर्मनीति नहीं जीवन) पाप्पिअम्मयुम मक्कजुम(पाप्पियम्मा और बच्चे) माँसत्तिन्टे विलि (माँस की पुकार) अनुभ्वड्डल् पालिच्चकल (अनुभव और गलतियाँ) आकाश, चुक्कु (सोंठ) व्याकुलमाला, नेल्लुम तेड़ड़युम (चावल और नारियल) पेण्णु पेण्णयि पिरन्नाल (औरत औरत बन जने तो) नुरयुम पतयुम (फेन और बुदबुद) कोडिप्पोय मुखड़डल (टेढ़े मुखड़े) कुरे मनुष्य रूटे कथा (कुछ मनुष्यों की कथा) अकतलम (अन्दर का अहाता) पुन्नप्र वयलारिनु शेषम् (पुन्नप्र वयलाकर के बाद) लघ्ज़ु नोवलुकल(पाँच लघु उपन्यासों का समाहार) कयर, बलूणुकल (बलूण) ओरू मनुष्यन्टे मुखम् (एक मनुष्य का मुख) ओरू प्रेमतिन्टे बाकी (एक प्रेम की बाकी) एरिझ्ञडड्ड़ (जलकर थम जाना) अषियाक्कुरूक्कु (उलझे फंदे) आदि अनेक विख्यात उपन्यास हैं। इनमें अतिविख्यात रचनाएँ हैं– पतित पकंज, तोट्टियुटे मकन, रंडिड़ंगषि, चेम्मीन, औसेप्पिन्टे मक्कल, एणिप्पडिकल, अनुभ्वड्ड़ल पालिच्चकल, चुक्कु, कयर, बलूणुकल आदि। इनमें से बहुतेरों की फिल्में बनी हैं।

किसी भी साहित्य में उपन्यासों की संख्या भी अधिक है। मलयालम साहित्य भी इससे भिन्न नहीं है। उपन्यासकारों की संख्या भी अधिक है। लेकिन मौलिक प्रतिभा वालों को चुनने पर संख्या कम पड़ती है। एक लेखक की साहित्यिक भेंट का मूल्यांकन कुछ विशिष्ट कार्यों के आधार पर किया जाता है। उनमें कुछ हैं– एक नयी रीति का प्रारंभ करना, मार्गान्तर की सृष्टि करना, विख्याति के कारण अनुकरणीय होना, मौलिक प्रति के कारण अननुकरणीय होना, व्यक्तिरिक्त विशेषता का धनी होना आदि। तकषि के संबंध में ये सारी विशिष्टताएँ सही निकलती हैं।

तकषि की सबसे बड़ी विशिष्टता उनकी अपनी अभिव्यक्ति शैली है। कुट्टनाड की परिस्थिति, संस्कृति एवं इतिहास के तथ्यों से रूपायित है उनकी शैली जिसे दूसरा कोई अपना नहीं सका है। रंडिडंगषि नामक उपन्यास में और अनेक कहानियों में यह विशिष्टता व्यक्त होती है। 'कयर' नामक उपन्यास में लगभग दो सदियों की कहानी बतायी गयी है। उसकी सबसे बड़ी विशिष्टता यही है कि उसमें काल के अनुरूप भाषा की सृष्टि की गयी है। इसी विशिष्ट शैली के कारण उनके उपन्यासों को सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त होती है। मलयालम प्रदेश, विशेष कर कुट्टनाड उनके उपन्यासों में स्वयं कथापात्र के रूप में प्रत्यक्ष होता है।

विषय वैविध्य उनकी रचनाओं को आकर्षक बनाता है। एणिप्पडिकल, चेम्मीन, चुक्क, अनुभवड़डल पालिच्चकल आदि उपन्यास इसके उदाहरण हैं। अम्पलप्पुषा, तिरूवनन्तपुरम जैसे विभिन्न स्थानों में रहकर तकषि ने जो अनुभव प्राप्त किये उन्हीं के कारण वे इसके लायक बने। नब्बे प्रतिशत उपन्यासों में सामाजिक जीवन का चित्रण पाया जाता है। लेकिन साधारणतया उपन्यासकार ने अस्वस्थ भावों को हटाकर पाठकों को रस प्रदान करने के लिए अनेक उपन्यासों की रचना की है। नैतिकता की ईमानदारी उन्हें प्रियकर लगती थी। इसलिए बनावटी नैतिकता की क्रियाओं का उन्होंने बड़ी स्पष्टता से चित्रण किया है। यह रीति सामाजिक मन को विह्वल करने वाली थी जैसे आधी रात को सूर्योदय होता है।

स्वतंत्रता, समता, सौहार्द जैसे आशयों को और श्रमिक वर्ग के अधिकारों का तकषि ने अपने उपन्यासों के द्वारा प्रचार दिया। किसी एक दल के सदस्य बनकर नहीं लेकिन सामाजिक हित चाहने वाले और मनुष्यतत्व को महत्व देने वाले व्यक्ति के रूप में समाज के प्रति अपने दायित्व को वे निभा रहे थे। सर्वहारा, बेरोज़गार, भंगी, भिखमंगे, वेश्याएँ आदि उनके उपन्यासों के पात्र बने। तकषि की दृष्टि में ये सारे पात्र सभी प्रकार के नागरिक अधिकार रखने वाले मानव हैं। नायक संकल्पना में यही नया परिवर्तन था। कुलीन, संभ्रान्त, कुबेरे, प्रतापी, सुन्दर आदि वेशेषण नायक के लिए आवश्यक थे, लेकिन तकषि ने उन सबका निराकरण किया। पर, इन विशिष्टताओं से मुक्त लोग भी उनके उपन्यासों के नायक बने। इस प्रकार तकषि अपने उपन्यासों में समाज का समग्र चित्र प्रस्तुत कर सके।

तकषि ने इस प्रकार के उपन्यास लिखे जो जादुई शक्ति से भरे थे और पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट कर सकें। उनके कुछ उपन्यासों की यह भी विशिष्टता थी कि दो–तीन महीनों में उनका दूसरा संस्करण निकलता था। तकषि ने जनता की कहानी कही। उस कहानी को बड़ी सरलता से और सरसता से उन्होंने कहा। उनके समीक्षकों ने स्वीकार किया है कि उन सभी रचनाओं में यह गुण विद्यमान है।

तकषि की उल्लेखनीय देन यही है कि मलयालम उपन्यास को उन्होंने विश्व उपन्यास की ऊँचाई तक पहुँचाया। विश्व भाषाओं में प्रवेश प्राप्त दूसरा कोई मलयालम लेखक नहीं है। चेम्मीन जैसी विश्वविख्यात दूसरी मलयालम रचना भी नहीं है। तकषि ने मलयालम उपन्यास शाखा को जो देन दी है वह अन्यादृश अवश्य है।

5.5 सारांश

अतः कहा जा सकता है कि शिवशंकर पिल्लै अपने गम्भीर व्यक्तित्व एवं गहरी संवेदनात्मक दृष्टि तथा सामान्य जन से असीम प्रेम के बलबूत पर सृजनात्मक लेखन की अतुलनीय ऊँचाइयों पर पहुँचते हैं। इन्होंने स्वयं सामान्य जीवन जीया था। वह मानवीयता के धर्म का पालन करने वाले थे। यह जातिगत, अमीर–गरीब में भेद रखने वाली परम्परा का कड़ा विरोध करते थे। इनके साहित्य में सामान्यजन की पीड़ा की जो झलकियाँ मिलती हैं, मूलतः इन्होंने प्रत्येक व्यक्ति की पीड़ा को अपना समझा है। इनकी साहित्यिक समझ, जीवन दृष्टि, अनुभव की परिपक्वता के साथ बदलती रही। मज़बूत संवेदना ने ही तकषी शिवशंकर पिल्लै के व्यक्तित्व को निखारा है।

अतः कहा जा सकता है कि शिवशंकर पिल्लै गम्भीर व्यक्तित्व एवं गहरी संवेदनात्मक दृष्टि के द्वारा मलयालम साहित्य को अतुलनीय ऊँचाईयों पर पहुँचाते हैं। वह सामान्य एवं उपेक्षित वर्ग के प्रति अत्याधिक संवेदनशील हैं। जिन उपेक्षित वर्ग की आवाज़ों को सदियों से दबाया जाता रहा, तकषी उनकी आवाज़ बनकर उभरे हैं। मजबूत संवेदना ने ही तकषी के व्यक्तित्व को परिपक्व बनाया है। मूलतः यह प्रत्येक व्यक्ति की पीड़ा को गहरे से समझने की समर्थ्य रखते हैं।

5.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) तकषी शिवशंकर पिल्लै के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

____

____

____

____

____

____

____

____

प्र2) मलयालम साहित्य को तकषी शिवशंकर की देन पर प्रकाश डालिए।

____

____

____

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

प्र3) तकषी शिवशंकर पिल्लै के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को निखारने में किन–किन घटनाओं का प्रभाव रहा, प्रकाश डालिए।

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

5.7 पठनीय पुस्तकें

1. मछुआरे – तकषी शिवशंकर पिल्लै, अनुवादक– भारती विद्यार्थी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली–180001
2. भारतीय साहित्य – डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय और प्रामला अवस्थी, आशिष प्रकाशन, कानपुर, 2004
3. भारतीय साहित्य – डॉ. नगेन्द्र, प्रभाव प्रकाशन, दिल्ली।
4. भारतीय साहित्य की भूमिका – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ – के. सच्चिदानंद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. भारतीय साहित्य : आशा और आस्था – डॉ. आरसु राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. भारतीय साहित्य, डॉ. पाण्डेय – डॉ. अवस्थी, आशीष प्रकाशन, कानपुर।
8. भारतीय साहित्य, तुलनात्मक अध्ययन – सं. डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

——————

M.A Hindi **UNIT - II** **Lesson No. 6**
Course Code : Hin- 403 **Semester - IV**

'चेम्मीन' उपन्यास का परिवेशगत अध्ययन

6.0 रूपरेखा

6.1 उद्देश्य
6.2 प्रस्तावना
6.3 'चेम्मीन' का परिवेशगत अध्ययन
    6.3.1 मछुआरों का जीवन एवं मान्यताएँ
        6.3.1.1 देवता पर विश्वास
        6.3.1.2 लान–पान और खान–पान
    6.3.2 स्त्री के प्रति मानसिकता
    6.3.3 पवित्रता : स्त्री धर्म
    6.3.4 आर्थिक दृष्टि से मछुआरा समाज
    6.3.5 पति–पत्नी सम्बन्धों में सन्देह
    6.3.6 देशकाल और वातावरण
    6.3.7 विवाह सम्बन्धी रिवाज़
    6.3.8 प्रेम
    6.3.9 मछुआरा समाज का कर्ताधर्ता
6.4 सारांश
6.5 अभ्यासार्थ प्रश्न
6.6 पठनीय पुस्तकें

6.1 उद्देश्य

इस अध्याय में 'चेम्मीन' उपन्यास में अभिव्यक्त केरल के समुद्र–तट के मछुआरों के जीवन के बारे में जान सकेंगे। मछुआरा समाज के परिवेश का परिचय प्राप्त कर सकेंगे तथा इस समाज की मान्यताओं को भी जान सकेगें। समुद्र–तट के समुदाय की आर्थिक, सामाजिक स्थिति को भी जान सकेंगे।

6.2 प्रस्तावना

19वीं सदी का अंतिम भाग और 20वीं सदी के प्रारम्भ का केरल, देश के अन्य भागों में पूरी तरह अछूता नहीं था। राजनीतिक भू–भाग की दृष्टि से केरल वैसा नहीं था जैसा हमें आज देखने को मिलता है। सामाजिक दृष्टि से केरल में सामंती सभ्यता के अवशेषों से लड़ाई जारी थी। स्वतन्त्रता आंदोलन का प्रभाव केरल के समाज पर भी पड़ रहा था। कई सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए कई आंदोलनों का सूत्रपात हुआ, इन सब परिस्थितियों ने साहित्य पर भी प्रभाव छोड़ा। यही प्रभाव 'चेम्मीन' उपन्यास पर दिखाई देता है।

6.3 'चेम्मीन' का परिवेशगत अध्ययन

'चेम्मीन' (1955) के रचनाकार तकषी शिवशंकर पिल्लै ऐसे संक्रांति काल के साहित्यकार हैं, जब मलयालम समाज साहूकारी, सामंतवादी, जमींदारी व्यवस्था के साथ–साथ छूआछूत की गम्भीर व्याधि से ग्रस्त था। तकषी की रचनाशीलता की खूबी यह है कि उन्होंने हमेशा समाज के बेहद सामान्य चरित्रों को अपनी रचनाओं के केन्द्र में रखा और सामान्य लोगों के जीवन में व्याप्त विषमता के बीच उनके संघर्ष, उनकी जिजीविषा, उनकी पीड़ा, उनकी जीवन शैली का वर्णन किया है। इन्हें मलयालम उपन्यास का 'प्रेमचन्द' कहा जाता है। हिन्दी भाषी उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द को जितना आदर सम्मान देते हैं, केरल की मलयालम भाषी जनता के बीच तकषी शिवशंकर पिल्लै को उतना ही सम्मान प्राप्त है। इस उपन्यास में केरल के समुद्र तट पर जीवन का निर्वाह करने वाले मछुआरा समाज की जीवन शैली का रेखांकन मिलता है। 'चेम्मीन' उपन्यास के परिवेशगत अध्ययन का विश्लेषण इस प्रकार है–

6.3.1 मछुआरों का जीवन व मान्यताएँ

प्रत्येक समाज, स्थान, व्यक्ति या समुदाय के जीवन का निर्वाह करने का संस्कार अलग होता है, यही संस्कृति ही प्रत्येक समुदाय की पहचान होती है। व्यक्ति के जीवन का आधार होती है। शिवशंकर पिल्लै द्वारा रचित उपन्यास 'चैम्मीन' में सागर किनारे पर बसने वाली मछुआरा जाति के लोगों के जीवन की मान्यताएँ बखूबी मिलती हैं। मूलतः 'चेम्मीन' उन गरीब मछुआरों के जीवन पर ही केन्द्रित उपन्यास है जो अपने जीवन निर्वाह के लिए समुद्र पर आश्रित होते हैं। समुद्र तटीय मछुआरा समाज एक प्रकार का बंद समाज है वह परम्पराओं, रूढ़ियों एवं मान्यताओं में जकड़ा हुआ समाज है। यह समाज समुद्र को माँ समान समझता है क्योंकि इनके अन्न का प्रबन्ध इसी समुद्र से ही होता है। इस समाज के लिए समुद्र पूजनीय है और इनकी पहचान भी है। यह समाज समुद्र का आदर–सम्मान करता है। समुद्र तट के मछुआरों की परम्परा है कि समुद्र में नाव

एवं मछली पकड़ने वालों को पवित्र होकर जाना चाहिए। विवाह के अगले दिन ही प्रायः करुतम्मा अपने पति पलनि से स्नान से सम्बन्धित सवाल करती है– ''समुद्र में जाने वालों को पवित्र होकर जाना चाहिए। ''तुम क्या कह रही हो? ज़रा नहाकर क्यों नहीं जाते?' करुतम्मा के कथानुसार पलनी ने स्नान किया। वह भी नहा–धो ली। पलनी जब समुद्र–तट पर पहुँचा तब मूप्पन का पहला सवाल था, 'नहा लिया है रे?''। इस समाज में मल्लाह के मर जाने पर उसकी पत्नी मल्लाहिन को दूसरा विवाह करने की इज़ाज़त नहीं है और यदि कोई भी मल्लाहिन दूसरा विवाह कर ले तो यह समाज उसका बहिष्कार कर देता है। 'चेम्पन' मल्लाह पत्नी चक्की की मृत्युपरान्त दूसरा विवाह कर लेता है, लेकिन वह बहिष्कृत नहीं किया जाता है मूल्तः पुरुष पुनर्विवाह के लिए आज़ाद था पुरुष जीवन तथाकथित सामाजित नियमों में नहीं बंधा था । इस कार्य के लिए चेम्पन को घटवार (समुद्र तट का कर्ता–धर्ता) के सामने पेश किया जाता है। चेम्पन के दूसरे विवाह की पत्नी पाप्पी को नल्लम्मा गुस्से में कहती है कि, ''यहाँ पर मल्लाह मर जाता है तो हम लोग दूसरे मर्द के साथ नहीं जाती। समझी? यही यहाँ का नियम है।'' स्त्री के लिए बंधन हर समाज में एक जैसे हैं ।

समुद्र तट पर मछुआरों की पाँच प्रकार की जातियां हैं– अरयन, जालवाला, मछुआ, मरक्कान और एक पंचम जाति। इन सबसे ऊपर पूरब के वालन हैं। इनमें से केवल 'जालवाले' को ही नाव और जाल रखने का अधिकार है। पुराने ज़माने में घटवार 'जालवाले' को ही नाव और जाल रखने की अनुमति देता था। अनुमति भी वह तब देता था जब कि 'जालवाला' नज़राना देने योग्य होता था। नज़राने के तौर पर जालवाले को 'तम्बाकू के चार पत्ते और पन्द्रह रुपये' दिये जाते थे। समुद्र के प्रत्येक घाट पर 'जालवालों' के अलग–अलग परिवार हैं, चेर्तला में पल्लिकुन्नम 'जालवाला', आलप्पुषा में परुत्तिक्कवल जालवाला और कुन्नेल रामन् का परिवार है। 'चैम्पन' अरयन जाति का मल्लाह था। चेम्पन के हृदय में एक बेहद इच्छा थी कि उनकी खुद की नाव और जाल हो। अपनी इस इच्छा की पूर्ति हेतु मुस्लिम परीकुट्टी से पैसे उधार लेता है और घटवार की अनुमति के बिना अपनी इच्छा पूरी भी करता है और समुद्र तट की परम्परा को तोड़ता भी है, इस दृष्टि से 'चेम्पन' मल्लाह एक बोल्ड चरित्र रूप में उभरा है। घटवार से पूछे बिना और समुद्र तट के नियमों का उल्लंघन कर चलने वाले चेम्पन की पत्नी चक्की की चिंता बढ़ जाती है, क्योंकि वह जानती है कि समुद्र तट के नियमों के खिलाफ चलने का नतीजा सामाजिक बहिष्कार ही निकलता है। चक्की के शब्दों में– ''ऐसा भी हो सकता है कि जन्म मरण आदि के अवसरों पर कोई घर में न आए। इस तरह की रोक–थाम की बातें आज भी हो सकती हैं। नाव और जाल के लिए जाने के पहले नज़राना देकर अनुमति ले लेना आवश्यक था।''

6.3.1.1 देवता पर विश्वास

अरय जाति के मछुआरे और प्रत्येक समुद्र–तट का वासी ईश्वर पर भरोसा करने वाले आशावादी हैं। सागर माता तो प्रत्यक्ष देवता के रूप में उभरती हैं, समुद्रतट वासी सागर माता के भयंकर रूप से भयभीत भी होते हैं। वह सागर माता की नज़र में अप्रीतिकर कोई भी ऐसा कार्य नहीं करते हैं जिसमें उन्हें माता के कोप भाव का सामना करना पड़े।

6.3.1.2 लान–पान और खान

मछुआरों के खान–पान में तरकारी और भात खाया जाता है। पैसे के अभाव में वह अक्सर मरचीनी और कंजी (पतले माँड सहित भात) खाते हैं और ऐसे अभाव की परिस्थिति में वह समुद्र माता को स्मरण जरूर करते हैं कि 'हे समुद्रमाता, एक मुट्ठी अन्न खाने का अवसर फिर कब मिलेगा? और इसका उत्तर भी वह स्वयं ही देते थे 'चाकरा के साथ'।

मछुआरे मलमल और महीन कपड़े पहनने के अधिक इच्छुक होते हैं, लेकिन पैसे के अभाव में इस इच्छा की पूर्ति हर बार नहीं हो पाती है। मलमल का कपड़ा पहनने की इच्छा 'चाकरा के दिनों' में ही पूरी होती है।

विवाह के उपरान्त पलनी हरिप्पाड से करुत्तम्मा के लिए ज़री का महीन कपड़ा लाता है। इस दिन कमाई अच्छी हुई तो पलनी के साथ–साथ बेलुत्ता, वेलायुधन् कोच्चुरान और अय्यप्पन के घर भी ज़री का कपड़ा आ जाता है। करुत्तम्मा को पलनी द्वारा यह तोहफा बहुत पसन्द आता है और उसे आनन्द भी प्रदान करता है। फिजूलखर्च न करने वाली करुत्तम्मा को प्रेमालाप के क्षण में लगता है कि ''जीवन में ज़री का महीन कपड़ा भी एक ज़रुरी चीज़ है, और जीवन सिर्फ घरेलू बरतन और माल से पूर्ण नहीं होता है।''

6.3.2 स्त्री के प्रति मानसिकता

समुद्र–तट पर नियम के अनुसार दस साल की उम्र की लड़की के विवाह करने की परम्परा है और चेम्पन की बेटी करुत्तम्मा कुँवारी है, इस बात की चिन्ता पूरे समुद्रतट के वासियों को होने लगती है। लोगों की दृष्टि में वह बहुत ही अनिष्टकारी कार्य था। चेम्पन ने अभी तक बेटी की शादी नहीं की और वह स्वतन्त्र रूप से घाट पर घूमती है। लोगों की दृष्टि में यह कुँवारी करुत्तम्मा घाट का सर्वनाश करने पर तुली है। करुत्तम्मा को अपने जीवन से विरक्ति होने लगती है, कि उसके कारण माँ–बाप को परेशानी उठानी पड़ रही है। लड़की होकर जन्म लेना उसके वश में नहीं था। घर में कुँवारी लड़की के होते हुए पिता चैम्पन नाव कैसे खरीद सकता है, लोगों को यह चिन्ता कुँवारी करुत्तम्मा की तरफ रुख करती है घर में लड़की का विवाह नहीं करवाया है, इसलिए वह नाव ले पाया है।

सागर किनारे रहने वाली करुत्तम्मा का, किनारे पर व्यापार करने आये एक मुस्लिम तरुण परीकुट्टी द्वारा बचपन से ही साथ रहने पर दोनों में प्रेम हो जाता है। समुद्र किनारे पर रेत में पड़ी रही नावों की आड़ में उसकी निकटता गहराती जाती है। करुत्तम्मा के इस कार्य के लिए माँ उपदेश देती है कि परीकुट्टी अलग जाति–धर्म का है, उसके साथ प्रेम करने पर किनारे की पवित्रता में दाग लगने पर समुद्र माता का खौफ उतरता है। समुद्र किनारे के लोगों की मान्यता है कि किनारा पवित्र रहना चाहिए। यहाँ किसी कन्या का या किसी स्त्री का पाँव फिसला तो वहाँ समुद्र का गुस्सा उतरता है। मूलतः 'स्त्री की पवित्रता' की संकल्पना सम्पूर्ण भारतीय समाज में ही है। इसी मान्यता को मछुआरे समाज ने भी जायज ठहराने की कईं कहानियाँ गढ़ी

हैं और उन्हें सती, सावित्री, सीता, पवित्रता के आदर्शों को उनके मानस में भर दिया है। तभी करुत्तम्मा की माँ उसे बताती है कि मछुआरों का जीवन वास्तव में तट पर रहने वाली औरत के हाथ में होता है। 'पवित्रता' की इस संकलपना में स्त्री समाज भयानक और त्रासद जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। लड़के से प्रेम करना उसकी अपवित्रता का द्योतक है। मुख्यतः भारतीय समाज में स्त्री को मुट्ठी में रखने की परम्परा सदियों से चलती आ रही है। यह मूलतः पुरुष वर्ग की मानसिकता को उजागर करता है। करुत्तम्मा को लगता था कि शाप–ग्रस्त नारी की पिपासित आत्मा इस समुद्र–तट के वायु–मण्डल में क्रन्दन करती हुई मँडराती फिरती है। उसे लगता है कि "समुद्र के एकान्त स्थानों में किसी की जीवन–कहानी सुनाई पड़ती है। उसकी तरह दुःखी जीवन बिताने वाली दादियाँ और परदादियाँ भी वहाँ हुई होंगी। हवा में सुनाई पड़ने वाली ध्वनि उन्हीं की जीवन–कथा होगी, समुद्र की लहरों की आवाज़ में भी वही कहानी गूँजती होगी। मिट्टी का कण–कण भी यह सब जानता होगा। उन पर दादियों की अस्थियाँ बिखरकर वहाँ की मिट्टी के ज़र्रे–ज़र्रे में मिल गई होंगी। वे भी पड़ी–पड़ी व्यथित होती होंगी।

6.3.3 पवित्रता : स्त्री धर्म

करुतम्मा के विवाह के उपरान्त विदाई के समय तरह–तरह की हिदायतें दी जाती हैं। यह हिदायतें करुत्तम्मा के परिवार वाले नहीं बल्कि समुद्र तट के लोग देते हैं। मूलतः समुद्र तट पर रहने वाली लड़की पर अधिकार समुद्र तट के लोगों का होता है, वह सबकी बेटी होती है, इसीलिए विदाई के उपरान्त बधू को भार्या–धर्म को कैसे निभाना है, इसका उपदेश पड़ोस की स्त्रियाँ देती हैं और यदि वधू भूल करे तो इसके लिए पड़ोसियों को ही जिम्मेदार ठहराया जाता है। विदाई के समय पड़ोस की नल्लम्मा ने करुत्तम्मा से कहा, "एक पुरुष को रखने की जिम्मेदारी तुम पर पड़ने जा रही है, एक मर्द के हाथ में लड़की नहीं सौंपी जाती। यहाँ बात उल्टी है।" काली ने दूसरी बात कही– "समुद्र की उमड़ती तरंगों के बीच हम लोगों के मर्दों का जीवन बीतता है बेटी!"

6.3.4 आर्थिक दृष्टि से मछुआरा समाज

मछुआरों का जीवन आर्थिक दृष्टि से बहुत अधिक सम्पन्न नहीं होता है, इसमें भी मछलियों का व्यापारी ही फायदे में रहता है। नाव से बटोरी मछलियों को बेचा किसको जाए यह बड़ी चुनौती होती है। मछलियों को खरीदने वाले दो प्रकार के व्यापारी होते हैं। यह मछली बेचने वाले पर निर्भर करता है कि मछली बेची किसको जाएगी। मछली को खरीदने वालों में एक होते हैं थोक खरीदने वाले और दूसरे खुदरा खरीदने वाले। यदि मछली थोक वाले व्यापारी खरीद लेते हैं तो खुदरा व्यापारी को आर्थिक दृष्टि से नुकसान उठाना पड़ता है। पेण्णम्मा बताती है कि "थोक खरीदने वालों के हाथ एक साथ बेच देने का रिवाज भी वहाँ चल पड़ा था। इससे पूरब में टोकरियों में माल बेचने जाने वाली औरतों को थोक खरीदने वालों के पाँव पकड़ने पड़ते थे।" थोक वालों से लेकर खरीदने में खुदरा वर्ग को कोई फायदा नहीं होता था, उल्टा नुकसान झेलना पड़ता था और थोक व्यापारी से शोषण का शिकार भी अलग से होना पड़ता था। मछली को थोक रूप में बेचने पर

बेचने वाला और थोक रूप में खरीदने वाला लाभ में रहता था और बाकि छोटे धरातल पर मछली को खरीदकर बेचने वाला नुकसान में ज्यादा रहता था।

अरयन जाति का चेम्पन अपनी नाव से खूब मछलियाँ बटोरकर लाता है। चेम्पन को खूब कमाई होने लगती है। धन बढ़ते जाने के चलते उसके भीतर अहं भी अपनी जगह बनाने लगता है। धन कमाने की इच्छा लगभग चेम्पन को अंधा बना देती है। वह धीरे–धीरे संवेदनहीन होने लगता है। चेम्पन की नाव की मछली से उम्मीदें जोड़कर बैठने वाली पड़ोसिनें भी उदास हो जाती हैं, जब उन्हें चेम्पन से खुदरा रूप में मछली नहीं मिलती है। चेम्पन की नाव जैसे ही समुद्र–तट पर आती तो वह किसी को भी मछली उठाने की अनुमति नहीं देता है, अपनी बेटी पंचमी को भी नहीं। ''मेरी नाव के नीचे से कोई भी 'ऊपा' (सबसे छोटी मछली) न बटोरें'', और कहते–कहते उसने पंचमी को दकेल दिया। 'माई रे' चिल्लाती हुई वह कुछ दूरी पर जा गिरी।'' पंचमी अपना अधिकार समझकर अपने पिता की नाव से ऊपा बटोरने गई थी लेकिन चेम्पन पैसे के लालच में अपने आप को और रिश्तेदारों को भूल जाता है। पंचमी चोट से बढ़कर पिता के इस व्यवहार से अत्यन्त दुःखी होती है।

चेम्पन का व्यवहार इतना निर्मम हो जाता है कि वह परीकुट्टी को भी बिना पैसे के माल बेचना नहीं चाहता था। यह वही परीकुट्टी था जिसने नाव खरीदने के लिए चेम्पन को पैसा उधार दिया था। चेम्पन ने इस नाव से खूब पैसा कमाया लेकिन उधार वापिस नहीं किया। परीकुट्टी के मछली माँगने पर चेम्पन उससे कहता है "नकद पैसा है? मुझे नकद चाहिए।'' पैसे कमाने के लालच में चेम्पन संवेदनहीन होता जाता है।

'चाकरा' के शुरू के दिन धूप और प्रकाश के होते थे। रोज का माल रोज तैयार हो जाता था। सेठों के आदमी आते जाते रहते थे। इस तरह चेम्पन का काम जारी था, लेकिन परीकुट्टी अपने कुछ पैसों को चेम्पन को उधार देकर सम्पूर्ण जीवन में आफत मोड़ लेता है। समुद्र–तट पर आँधी पानी के दौर में लोगों को काफी नुकसान उठाना पड़ता है। नावें समुद्र में जाती थीं और बढ़ियां बटोर भी लाती थीं। घंटों में झिंगे (मछली) की कुछ बिक्री भी होती थी। लेकिन लौटियाँ (मछली) कम ही आती थीं। ऐसी स्थिति में माल का मोल–तोल वहीं किया जाता था। मूलतः व्यापारियों की इच्छानुसार ही माल बेचा जाता था। इस तरह से तट के नाव वालों को संकट का सामना करना पड़ता है। जीवन का निर्वाह करने के लिए व्यापारियों से पैसे उधार लेने पड़ते हैं। रामन् का व्यापार जब ठप्प हो जाता है, औसेप्प अपने पैसे के लिए उसे तंग करना आरम्भ कर देता है। उसकी नज़र रामन् की चीनी नाव पर होती है। रामन् किसी तरह पैसा लौटाने की शपथ खाता है। वह चेम्पन से उधार माँगता है लेकिन चेम्पन भी उससे चीनी नाव ज़मानत में रखवाता है और चेम्पन अब दो नाव का अधिकारी बन जाता है। चेम्पन महत्वाकांक्षी है, वह प्रगतिशील नहीं है। बिना बौद्धिक और तार्किक सजगता के महत्वकांक्षी का कोई मूल्य नहीं है। चेम्पन लकीर का फकीर भी नहीं है, लेकिन वह धनलोलुपता में इस तरह जकड़ा हुआ है कि उसकी संवेदनशीलता नष्ट हो जाती है जिसकी अंतिम परिणति मानसिक विक्षिप्तता और आर्थिक दिवालियापन में होती है। चेम्पन की महत्वकांक्षा, धन–लोलुपता और सामाजिक रीति–नीतियों के समक्ष विवाह, परिवार और प्रेम के समस्त मूल्य दफन हो जाते हैं। अपनी बेटी करुत्तम्मा और अन्य धर्मी परीकुट्टी

के प्रेम सम्बन्धों में जो भी घटनाएँ घटित होती हैं वे सभी उसकी महत्वकांक्षा के कारण घटित होती हैं। सबसे पहले उसकी महत्वकांक्षा को समझते हुए उसकी बेटी करुत्तम्मा परीकुट्टी से आर्थिक मद्द मांगती है। करुतम्मा के आग्रह पर परीकुट्टी नाव और जाल खरीदने के लिए चेम्पन की आर्थिक मद्द करता है। यह आर्थिक मद्द ही उन दोनों के प्रेम सम्बन्धों की त्रासदी का कारण बनती है। चेम्पन शर्त के मुताबिक पैसे के बदले परीकुट्टी को न तो मछलियाँ देता है और न पैसा लौटाता है। परीकुट्टी पैसे–पैसे का मोहताज होकर दर–दर भटकने के लिए अभिशप्त होता है। मुसलमान होने के कारण उसे कोई भी मछुआया न मछलियाँ उधार देता है और न पैसे उधार देता है। एक सामान्य मछुआरे से एक सूदखोर महाजन में चेम्पन की परिणति वस्तुतः एक वर्गीय परिवर्तन है। दूसरों की मजबूरी और कमजोरी का फायदा उठाना सूदखोर महाजनों का वर्गीय चरित्र होता है। चेम्पन भी पूरी तरह महाजन की तरह सोचता और आचरण करता है। पैसे की बढ़ती प्यास के कारण उसके स्वभाव एवं व्यवहार में अंतर आ जाता है, वह अपने बच्चों के प्रति भी निर्मम हो जाता है। मूलतः चेम्पन के भीतर एक मालिक की मानसिकता विकसित होने लगती है।

6.3.5 पति–पत्नी सम्बन्ध में सन्देह

एक ओर मछुआरे करुत्तम्मा और परीकुट्टी के सम्बन्धों को लेकर करुत्तम्मा के पति पलनी पर ताने मारते हैं, जबकि करुत्तम्मा और परीक्कुट्टी का प्रेम विशुद्ध रूप से अशरीरी है, शारीरिक स्तर पर कभी नहीं उतरता है। मछुआरे समाज के तानों से पलनी अवसादग्रस्त होता है और वह सन्देह को अपने दिमाग का बुखार बनाए करुत्तम्मा से दूर हो जाता है।

6.3.6 देशकाल और वातावरण

'चैम्मीन' मूलतः मलयालम भाषा की रचना है। केरल राज्य के समुद्र किनारे और वहाँ पर बसने वाली बस्ती की मान्यताओं की कथा है। देश यानी कि स्थान–समय का विशेष बोध नहीं होता किन्तु वातावरण अवश्य निखर पाया है। इस उपन्यास में 'काल' के रूप में स्वयं समुद्र ही उभरकर सामने आता है। वह अपने भयंकर रूप में उभरा है। समय के रूप में कहीं बोधगम्यता नहीं होती है।

वातावरण के सम्बन्ध में समुद्र और किनारे पर होने वाले क्रिया–कलापों का चित्रण हो पाया है। समुद्र किनारे का एक प्राकृतिक वास्तविक चित्र देखा जा सकता है। 'दोपहर को समुद्र–तट पर बच्चे, टोकरी वाली औरतें और थोक–खरीददार सब पहुँच गए। नाँवों पर लोग जाल खींचते या झाड़ते होंगे। तट पर हरेक आदमी अन्दाजा लगाने लगा कि जाल में कौन–कौन सी मछलियाँ होंगी। कादरी को लगता है कि परमाणु के समान छोटी मछली होंगी। जो भी हो 'बटोर' अच्छा हुआ है, इसमें कोई सन्देह नहीं रहा। इतने में दो समुद्री बगुले पश्चिम से पूर्व की तरफ उड़ते हुए आये। एक चोंच में मछली थीं। सबकी नज़र ऊपर चली गई, एक की आवाज़ सुनाई पड़ी? ''मत्ती है मत्ती।'' (मछली)

समुद्र–बदलती ऋतु और उसके प्रभाव के साथ–साथ झिंगा मछली की एहमियत का एक चित्र देखते हैं। दो–तीन दिन से रात–दिन लगातार पानी बरस रहा था। समुद्र में झिंगा मछली की भरमार थीं। लेकिन

नाँव नहीं खोली गई थीं। काम तो आदमियों को ही करना पड़ता था न! कड़ाके की ठण्ड पड़ रही थी। चौथे दिन का सूर्योदय प्रकाशमान था। नाँवें समुद्र में उतरी। खूब बटोर हुआ। व्यापार भी हुआ। आकाश फिर मेद्याच्छन्न हो गया। पानी पड़ने लगा। ऐसी मूसलाधार वर्षा इससे पहले नहीं हुई थी। बरसना जारी रहा।''

'दुल्हिनधन' देकर लड़की को विवाह के दिन ही पति के घर ले जाना आवश्यक माना जाता है। चौथे दिवस में पति–पत्नी को दावत के लिए घर वाले बुलावा भेजते हैं। उसके बाद ही वह किसी और के घर जा सकते हैं। प्रथम प्रसव के भी निश्चित आचार हैं। मरने पर शव को गाड़ दिया जाता है। सभी कर्मों को करने वाला अरय मुखिया है। चेम्पनकुंजु के लालच और हठधर्मिता के कारण विवाह सम्बन्धी आचारों का पूरा–पूरा पालन नहीं हो पाता है। मूलतः उपन्यास से स्पष्ट होता है कि सामाजिक जीवन को सुखपूर्ण बनाने के लिए मर्यादाओं, आचारों एवं नीतियों का पालन करना आवश्यक है।

6.3.7 विवाह सम्बन्धी रिवाज

अरय समाज के अपने आचार क्रम हैं। जन्म, जीवन, मृत्यु, इन तीन अवस्थाओं का नियंत्रण इन आचारों में है। अवैध शिशु जन्म को वे मान्यता नहीं देते हैं। मछुआरा समाज अरेंज विवाह पर विश्वास करता है। लड़का या लड़की के विवाह की जिम्मेदारी परिवार के साथ–साथ घटवार और सम्पूर्ण समुद्र तट के लोगों की रहती थी। यदि कोई लड़की दस साल की आयु से ऊपर हो जाती है और विवाह नहीं हो पाता है तो यह समुद्र–तट की चिन्ता का विषय बन जाता है। समस्या से उभरने हेतु घटवार के पास जाया जाता है। चेम्पन की बेटी करुत्तम्मा का विवाह सही आयु में नहीं किया गया था, यह बात सम्पूर्ण समुद्र तट के प्रत्येक व्यक्ति को अखर रही थी। चेम्पन अपनी बेटी का विवाह ऐसे व्यक्ति से करना चाहता है जिससे उसे भी कुछ फायदा पहुँचे। चेम्पन को बेटी के लिए पलनी नाम का लड़का पसन्द आता है, क्योंकि वह नाव बहुत तेजी से चलाता है और इस दृष्टि से चेम्पन को फायदा नज़र आया कि घर जमाई बनाकर रखा जायेगा और नाव का काम सम्भालने के लिए तेज और अपने ही घर का व्यक्ति भी मिल जाएगा, इस दृष्टि से काम फलेगा।

प्रस्तुत उपन्यास में मछुआरों के समाज के विवाह सम्बन्धी रिवाजों का चित्रण मिलता है। नव वधू को लिवाने के लिए वर पक्ष की तरफ से महिलाओं का आना आवश्यक माना जाता है। पलनी की बारात में कोई महिला न होने के कारण स्त्री पक्ष में चिन्ता का विषय बन जाता है ''उनके साथ कोई स्त्री नहीं थी। पलनी को अपनी तो कोई थी नहीं लाने के लिए। यह सबको मालूम था। फिर भी वर–पक्ष की तरफ से कोई स्त्री नहीं आई है, यह शिकायत की बात हो गई। चक्की को यह बात खली।''

दूसरा रिवाज़ रुपये–पैसे की बात तय करने का होता है। रकम निश्चित करने का अधिकार घटवार का होता है। वह निश्चय हो जाने के बाद ही शादी होती है। घटवार पलनी और उसके साथियों को 75 रुपये भरने को कहता है। यह वर पक्ष के लिए बहुत बड़ी रकम थी। विवाह रुक न जाये इसके लिए चतुराई से चेम्पन पत्नी को पैसे देता है और घटवार के कथानुसार काम करने को कहता है। 75 रुपये भरने के उपरान्त वह

पैसे रिवाज़ के मुताबिक उसमें एक हिस्सा घटवार को और बाकी चेम्पन को दे देता है। यह शादी की प्रारम्भिक रस्म थी। वर पक्ष को भोज के बाद पान–सुपारी का वितरण करने की परम्परा का चित्रण भी मिलता है।

6.3.8 प्रेम

स्त्री के प्रेम करने पर मछुआरा समाज में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारतीय समाज में उसे खतरे उठाने पड़ते हैं। इसी तरह का खतरा करुत्तम्मा को भी उठाना पड़ता है। करुत्तम्मा विधर्मी (मुस्लमान) लड़के से प्रेम करती है। वह चाहती है कि उसके संग जीवन का निर्वाह किया जाए लेकिन उसके इस सपने को समाज और परिवार पूरा नहीं होने देता है। मछुआरे समाज की मान्यतानुसार करुत्तम्मा का प्रेम धीरे–धीरे समुद्र–तट के सर्वनाश का कारण बन जाता है। करुत्तम्मा के प्रेमालाप को देखकर माँ उसे मर्यादा में रहने के लिए कहती है। लड़की द्वारा प्रेम करने पर चक्की (माँ) की मानसिक शान्ति भंग होती है वह विलाप करती हुई कहती है कि "हे भगवान, उस महापापी ने मेरी बेटी को जादू–टोने से वश में कर लिया है, ऐसा लगता है। बिटिया। माँ को धोखा न देना।"

विवाह के उपरान्त भी वह समाज द्वारा भ्रष्टा ही कहलाई गई क्योंकि करुत्तम्मा ने प्रेम किया था। प्रेम करने की सज़ा तो उसे मिलनी ही थी। कुमारन् के शब्दों में– "अरे, कुत्ते के बच्चे! तेरे भले ही कोई न हो, पर दूसरों की स्थिति ऐसी नहीं है। तू जाकर मर जा। एक भ्रष्टा को लाकर तूझे डूब मरना चाहिए। तेरे भाग्य में वही लिखा है।" परीकुट्टी से प्रेम करने वाली करुत्तम्मा के भीतर प्रेम की बेल पलनी से शादी के बाद भी पल्लवित होती जाती है। समाज के नियम उन दोनों के प्रेम को समाप्त नहीं कर पाते हैं और अन्ततः एक भी होते हैं और साथ मृत्यु को भी प्राप्त होते हैं।

6.3.9 मछुआरा समाज का कर्ताधरता

समाज की हर जाति का अपना मुखिया रहता है। 'तुरयिलरयन' अरयों का मुखिया है। वही समाज की समस्याओं का निवारण करता है। नाव एवं जाल खरीदने की आज्ञा प्रदान करना, नाव–जाल खरीदने वालों की सामाजिक योग्यता का निर्णय करना, विवाह के आचार क्रमों का निरुपण करना, सभी प्रकार के सामाजिक कार्यों का नेतृत्व करना, मतभिन्नताओं एवं तर्क विषयों को विधिन्याय सुनाना आदि अरय–मुखिया का दायित्व है। मुखिया की बातों को न मानने वाले का बहिष्कार किया जाता है। बहिष्कृत हो जाने पर एक अरय को धर्म परिवर्तन कर या तो मुसलमान या फिर ईसाई बनना पड़ता है। चक्की के शब्दों में– "घाट वालों के क्रोध का पात्र बनने से घर डुबा देने की कहानी उसने सुनी थी। रातों–रात परिवार–के–परिवार घाट छोड़कर भाग भी गए हैं। इस तरह घाट छोड़कर आने वाले दूसरी जगह जाकर मछुआरे के रूप में जम जाएँ और अपनी जीविका चलाएं, ऐसा नहीं हो सकता था। वे जहाँ कहीं भी जाएँ सामाजिक नियमों का प्रतिबन्ध लगा ही रहता था इसलिए लोग साधारणतः अपना धर्म–परिवर्तन कर लेते थे।"

6.4 सारांश

'चेम्मीन' उपन्यास के परिवेशगत अध्ययन उपरान्त कहा जा सकता है कि यह युग सम्पूर्ण भारत में (केरल सहित) स्वतंत्रता आंदोलन एवं सामाजिक आन्दोलन का युग रहा है। आज़ादी से पूर्व जो निचले पायदान की जातियां थीं, आज़ादी के बाद उनकी परिस्थिति में खासा सुधार नहीं हुआ। केरल सहित सम्पूर्ण भारत में निचले पायदान की जातियाँ अपनी पहचान एवं महत्वकांक्षाओं को पूरा करने के लिए संघर्षरत थी और इन्होंने संघर्ष कर समाज में एक नया परचम भी लहराया। अरय जाति का चेम्पन मल्लाह नाव और जाल खरीदकर परम्परागत मान्यताओं को तोड़ने में पहल करता है। मूलतः कहा जा सकता है कि इस उपन्यास पर नवोत्थान का अत्याधिक प्रभाव है।

6.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) 'चेम्मीन' उपन्यास के परिवेश पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

____

____

____

____

____

____

____

____

प्र2) मछुआरे समाज की मान्यताओं पर विचार करें।

____

____

____

____

____

____

————————————————————————————————

————————————————————————————————

प्र3) मछुआरा समाज की जीवन शैली पर प्रकाश डालिए।

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

6.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मछुआरे – तकष़ी शिवशंकर पिल्लै, अनुवादक– भारती विद्यार्थी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली–180001
2. भारतीय साहित्य – डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय और प्रामला अवस्थी, आशिष प्रकाशन, कानपुर, 2004
3. भारतीय साहित्य – डॉ. नगेन्द्र, प्रभाव प्रकाशन, दिल्ली।
4. भारतीय साहित्य की भूमिका – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ – के. सच्चिदानंद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. भारतीय साहित्य : आशा और आस्था – डॉ. आरसु राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. भारतीय साहित्य, डॉ. पाण्डेय – डॉ. अवस्थी, आशीष प्रकाशन, कानपुर।
8. भारतीय साहित्य, तुलनात्मक अध्ययन – सं. डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

M.A Hindi
Course Code : Hin- 403

UNIT - II

Lesson No. 7
Semester - IV

'चेम्मीन' में अभिव्यक्त मिथ एवं भाषा

7.0 रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 मिथ का अर्थ एवं परिभाषा

7.4 चेम्मीन में अभिव्यक्त मिथ

7.5 चेम्मीन में अभिव्यक्त भाषा

7.6 सारांश

7.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

7.8 पठनीय पुस्तकें

7.1 उद्देश्य

- इस अध्याय में मिथ का अर्थ एवं परिभाषा को जान सकेंगे।
- 'चेम्मीन' उपन्यास में किस प्रकार मिथ और कौन से समाज के मिथ अभिव्यक्त हुए हैं, यह जान सकेंगे।
- 'मिथ' को कथा के ताने–बाने में कैसे बुना है, इसे जान सकेंगे।
- 'चेम्मीन' उपन्यास की भाषा को जान सकेंगे।

7.2 प्रस्तावना

'चेम्मीन' उपन्यास में मछुआरे समाज को आधार बनाया है इसलिए केरल के समुद्र तट पर रहने वाले मछुआरे समाज की जीवन शैली, आचार संहिता के साथ उनकी भाषा को लेखक ने बहुत ही खूबसूरती से प्रस्तुत किया है। समुद्र ही उनकी आजीविका का आधार रहता है और उनके सम्पूर्ण विश्वास, मान्यताएँ और मिथ समुद्र से ही जुड़े हैं। समुद्र ही उनके माता–पिता, देवी–देवता है। समुद्र की शक्ति से बचने के क्रम में जो मिथ उस समाज में प्रचलित हैं ऐसे ही एक मिथ को कथा सूत्र में पिरोकर तकषी मिथकीय विश्वास के माध्यम से कथा कहते हैं। ये मिथकीय विश्वास समुदायों के आदिम विश्वास है जिनसे बंधे रहना ही वे श्रेयस्कर मानते हैं।

7.3 'मिथ' का अर्थ एवं परिभाषा

'मिथक' शब्द अंग्रेजी के 'मिथ' (उलजी) शब्द से गढ़ लिया गया है और उसका हिन्दी प्रतिरूप बन गया है। 'मिथ' शब्द का उद्भव यूनानी शब्द 'मिथॉस' (डलजीवे) से हुआ है, जिसका अर्थ है 'मुँह से निकला हुआ'। अतः उसका संबंध 'मौखिक कथा' से जुड़ गया क्योंकि कथा भी सुनी सुनाई जाती है। हिंदी में 'मिथक' के लिए 'पुनरावृत', 'पुराकथा', 'कल्पकथा', 'देवकथा', 'धर्मकथा, 'पुराणकथा' आदि अनेक शब्द प्रयुक्त होते रहे हैं। वस्तुतः मिथक का संबंध आदिम लोक मानस से है। मिथक को आदिम मनुष्यों के मानसिक और भौतिक जीवन का प्रतीकात्मक कथा संग्रह कह सकते हैं। डॉ.नगेन्द्र ने मिथक को पारिभाषित करते हुए लिखा है– सामान्य रूप से मिथक का अर्थ है ऐसी परम्परागत कथा, जिसका सम्बन्ध अतिप्राकृत घटनाओं और भावों से होता है। मिथ मूलतः आदि मानव के समष्टि–मन की सृष्टि है, जिसमें चेतन की अपेक्षा अचेतन प्रक्रिया का प्राधान्य होता है।" मिथक सामाजिक व्यवस्था के संरक्षण तथा संचालन के लिए गढ़े जाते हैं। ये किसी मानव समाज की सामूहिक अनुभूतियों से उपजते हैं और उसे एक इकाई में भी बांधते हैं। जुंग की मान्यता है कि "मिथक का जन्म व्यक्ति में नहीं बल्कि समूह के मानस में होता है– वह भी चेतन मन में नहीं, अचेतन मन में।" मूलतः मिथक किसी भी संस्कृति की समझ और पहचान के लिए सहायक हो सकते हैं।

7.4 'चेम्मीन' में अभिव्यक्त मिथ

'चेम्मीन' की कथा के तीन कोण उभरते हैं, इस उपन्यास में इसका आरम्भ केरल के समुद्र तटीय इलाके में रहने वाले एक मछुआरे की महत्वाकांक्षा से होता है। इस महत्वकांक्षा की पूर्ति हेतु प्रेमी युगल के बीच बढ़ता आकर्षण और अंकुरित होता प्रेम सम्बन्ध माध्यम बनता है। इसी के साथ केरल के मछुआरा समाज में प्रचलित वे मान्यताएँ और मिथक हैं जो मछुआरा समाज के जीवन को प्रभावित एवं गति प्रदान करते हैं।

मछुआरा समाज में प्रचलित एक मिथक जो पूरी कथा में आद्यंत एक दुःस्वप्न की तरह मौजूद है जिसके अनुसार सागर–देवी उस मछुआरे का जीवन नष्ट कर देती है जिसकी पत्नी अपवित्र हो जाती है अर्थात् समुद्र का किनारा पवित्र होना चाहिए और इसकी पवित्रता की नैतिक जिम्मेदारी किनारे पर रहने वाली स्त्रियों की है। इन लोगों का मानना यह है कि समुद्र–माता की पुत्रियों ने इस तपश्चर्या का पाठ सदियो से

पढ़ा है। हर युग में समुद्र–तट की स्त्री को तत्व–ज्ञान की सीख समयानुसार मिलती रही है। चक्की के शब्दों के माध्यम से स्पष्ट होता है कि समुद्र–तट की स्त्रियां पुरानी आदर्श कथाओं पर विश्वास करती हैं– ''प्रथम मल्लाह जब पहले–पहल लकड़ी के एक टुकड़े पर चढ़कर समुद्र की लहरों और ज्वार–भाटे का अतिक्रमण करके क्षितिज के उस पार गया तब उसकी पत्नी ने तट पर व्रत–निष्ठा के साथ पश्चिम की ओर देखकर खड़े–खड़े तपस्या की। समुद्र में तूफान उठा, शार्क मुँह बाए नाव के पास पहुँचे, ह्वेल ने नाव को पूँछ से मारा और जल की अन्तरधारा ने नाव को एक भँवर में खींच लिया। लेकिन आश्चर्यजनक रीति से वह मल्लाह सब संकटों से बचकर एक बड़ी मछली के साथ किनारे पर लौट आया। उस तूफान के खतरों से वह कैसे बचा? शार्क उसे क्यों नहीं निगल गया? ह्वेल की मार से उसकी नाव क्यों नहीं डूब गई। भँवर से उसकी नाव कैसे निकल आई? यह कब कैसे हुआ? समुद्र–तट पर खड़ी उस पतिव्रता नारी की तपस्या का ही वह फल था!'' आश्चर्यजनक घटनाओं और उन घटनाओं के अचानक सुलझ जाने से सामान्य जन प्रभावित होता है और इतना अधिक प्रभावित होता है कि उस असम्भव कार्य के सम्भव हो जाने पर वह कथा सदियों तक समाज के द्वारा पीढ़ी–दर–पीढ़ी विकसित होती जाती है। पीढ़ी–दर–पीढ़ी विकसित होते जाते विश्वास एवं मिथको को तर्क की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता है। 'मिथ' किसी एक व्यक्ति का नहीं बल्कि पूरे समूह का विश्वास होता है।

'मिथ' अनुशासन में रहने के लिए मजबूर करता है और यह विश्वास करुत्तम्मा तथा परिक्कुटी के व्यक्ति–स्वातंत्र्य में अड़चन डालने का काम भी करता है। परीकुट्टी के साथ प्रेम करने वाली कुरुत्तम्मा समुद्र–तट के समाज के लिए भ्रष्ट बन जाती है। अर्थात् युगलों की सहज संवेदना को तिरस्कृत करने का अधिकार मिथ देता है। इस मिथ को बरकरार रखने के लिए चक्की करुत्तम्मा को तत्व ज्ञान की याद दिलाती है और यह तत्व ज्ञान स्त्री की पवित्रता से जुड़ा था। चक्की के शब्दों में– ''पवित्रता ही सबसे बड़ी चीज़ है बेटी! मल्लाह की असली सम्पत्ति मल्लाहिन की पवित्रता ही है। कभी–कभी छोटे मोतलाली लोग समुद्र–तट को अपवित्र कर देते हैं। पूर्व से स्त्रियाँ झिंगी पीटने और सूखी मछली को बोरों में भरने के लिए आया करती हैं और वह तट को अपवित्र कर देती हैं। समुद्र तट की पवित्रता का महत्व उन्हें क्या मालूम! वे समुद्र–माता की सन्तान तो है नहीं। लेकिन उसका फल भोगना पड़ता है मछुआरों को।... तट पर रखी हुई बड़ी नावों की आड़ और यहाँ की झाड़ियाँ बहुत खतरनाक जगह हैं। वहाँ सतर्क रहने की जरूरत है।''

करुत्तम्मा के प्रेम को मिथ ही आरम्भ में सफल नहीं होने देता है, लेकिन करुत्तम्मा तत्व–ज्ञान को मानने के साथ–साथ पुराने विश्वासों को तर्क की कसौटी पर कसने का प्रयास करती नज़र आती है। करुत्तम्मा प्रेम के यथार्थ से परिचित है और प्रेम रूपी भाव अपनी उमर में सबमें पनपते ही है। उसके भीतर एक सवाल अकुलाने लगता है कि यह कैसे सम्भव हो सकता है कि समुद्र–तट की आदि से लेकर वर्तमान तक किसी महिला ने विधर्मी से या अपनी इच्छा से प्रेम नहीं किया। उसे यह बात सम्भव नहीं जान पड़ती है। घाट की महिलाओं की स्त्री पवित्रता सम्बन्धी संवाद सुनकर करूत्तम्मा स्तम्भित रह जाती है, वह सोचती है कि ''उसकी माँ ने भी जवानी में किसी से प्रेम किया है क्या? क्या यह सम्भव है कि इन सबों ने घाट की पवित्रता नष्ट

की है? तो क्या घाट की पवित्रता का तत्व–ज्ञान एक निरर्थक बात ही है? इन सबों के बारे मे ऐसी कहानियों के रहते हुए भी समुद्र पहले की तरह आज भी पश्चिम में लहरा है, आज भी इसमें पहले की तरह ज्वार–भाटे आते हैं, मछुआरों की आमदनी भी वैसी ही होती है, उनका जीवन–क्रम भी पहले ही जैसा चलता है। तब इस पवित्रता की कहानी का क्या मतलब है?''। वह समुद्र–तट पर सदियों से चलते आ रहे पवित्रता सम्बन्धी 'मिथ' पर प्रश्न चिह्न खड़ा करती है, मूलतः 'मिथ' पर यह प्रश्न चिह्न करुत्तम्मा के माध्यम से लेखक का प्रश्न चिह्न भी है। बोध होता है कि शिवशंकर पिल्लै भी समाज के ऐसे 'मिथ' के पक्ष में खड़े नहीं होते हैं, जहाँ स्त्री का जीवन त्रासदमय बन जाये। आलोच्य उपन्यास में करुत्तम्मा समुद्र–तट की सम्पूर्ण स्त्रियों में बोल्ड स्त्री के रूप में उभरती है, वह स्त्री जीवन के रंगों को समझती है, वह महिलाओं की आजादी का मतलब समझती है, इसलिए वह स्त्री सम्बन्धी पवित्रता के मिथ पर प्रश्न चिह्न लगाती है।

दूसरी प्रचलित मान्यता सामाजिक है और जिसे भारत का एक बड़ा हिस्सा, खास तौर से ग्रामीण गरीब तबका, आज भी ढोये जा रहा है कि बेटी का विवाह जल्द–से–जल्द कर देना चाहिए । यह ऐसा नियम था जिसे समुद्र तटीय मछुआरे, जिन्हें घटवार कहा जाता है, उल्लंघन नहीं कर सकते थे। समुद्र–तट के समाज का मिथ है कि कन्या का विवाह 10–11 साल की उम्र में ही हो जाना चाहिए और यदि किसी कन्या का विवाह 11 साल की आयु में नहीं हो पाता है तो सागर माता रुष्ट हो जाती है और घाट का सर्वनाश हो जाता है। करुत्तम्मा के विवाह की चिन्ता के सम्बन्ध में घाट वालों के प्रतिनिधि के तौर पर रामन् मूप्पन और अच्चन दो आदमियों के साथ मुलाकात के लिए घटवार के पास जाते हैं। घाट की एक बड़ी अनिष्टकारी बात के सम्बन्ध में उन्हें घटवार से शिकायत करनी थी। ''चेम्पन की बेटी बड़ी हो गई है, चेम्पन ने अभी तक उसकी शादी नहीं की और वह स्वतन्त्र रूप से घाट पर घूमती फिरती है। ...जब बेटी घाट का सर्वनाश करने पर तुली है तब बाप नाव और जाल खरीदने गया है।'' आचरण को बनाये रखने के लिए 'मिथ' एक बेहतरीन भूमिका निभाते हैं, लेकिन बहुत समय के बाद इनकी प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न लगना आरम्भ हो जाता है। यह मिथ इस प्रकार के हैं, जहाँ एक वर्ग की इच्छाओं, महत्वकांक्षाओं के साथ अन्याय हो रहा है।

तीसरा मिथ इस समाज में यह है कि केवल धीवर (जालिया) समुदाय के मछुआरों को ही नाव और जाल खरीदने और उसका मालिक होने का अधिकार है जो समुदाय विशेष के सामाजिक आर्थिक वर्चस्व को स्थापित करता है। जो मिथ समाज की नींव को कमज़ोर और खोखला बनाते हो। ऐसी मान्यताओं को लेखक स्वीकार नहीं करता है। तकषी ने अरय जाति के चेम्पनकुंजु के माध्यम से सदियों पुरानी धारणाओं को तोड़ा है, जो जातिगत और आर्थिक भेद को बनाये रखती हैं। लेखक की प्रवृति समत्तावादी है, वह समत्तामूलक समाज का सपना देखने वाले हैं, इसलिए ऊँच–नीच का भेद रखने वाली समाज की मान्यताओं पर कटाक्ष कसते नज़र आते हैं। समुद्र तट के लोगों की मान्यता है कि नाव और जाल खरीदने का अधिकार केवल धीवर का है और एक मल्लाह कैसे नाव और जाल खरीद सकता है। चेम्पनकुंजु का नाव और जाल खरीदना चर्चा का विषय बन जाता है और ऊँची जाति के लिए चिंता का विषय भी बन जाता है। अच्चन के शब्दों में– ''चेम्पन' मछुआ है। आपने उसे नाव और जाल खरीदने की अनुमति दी है क्या?'' प्रत्येक जाति के व्यक्ति को

समुद्र–तट पर नाव और जाल खरीदने का अधिकार नहीं था और यदि नाव और जाल खरीदता भी है तो उसे घटवार (मुखिया) से अनुमति लेनी पड़ती थी। चेम्पनकुंजु ने अपनी महत्वकांक्षा को पूरा करने के लिए तमाम मिथ को नज़रांदाज करते हुए अपने सपनों को पूरा किया। मूलतः अरय समुदाय के मछुआरों को नाव और जाल खरीदने और उसका मालिक होने का अधिकार नहीं था इसलिए चेम्पन अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए कर्ज़ उठाता है, वादा–खिलाफी करता है। कोई भी नैतिक–अनैतिक तरीका अपनाने से परहेज नहीं करता है। वह अरय जाति द्वारा नाव और जाल नहीं खरीदने और उसका मालिक नहीं होने की सामाजिक मान्यता को चुनौती देता है। अरय समुदाय में नाव और जाल खरीदने के लिए सामाजिक योग्यता का निर्णय उस समुदाय का मुखिया करता है लेकिन चेम्पन नाव और जाल खरीदने के लिए अपने समुदाय के मुखिया से आज्ञा नहीं लेकर समुदाय के बेमानी मिथ को तोड़ देता है।

7.5 'चेम्मीन' में अभिव्यक्त भाषा

तकष़ी शिवशंकर पिल्लै द्वारा रचित उपन्यास 'मछुआरे' (चेम्मीन) मलयालम भाषाा का है। इस उपन्यास का हिन्दी में अनुवाद भारती विद्यार्थी ने किया है। प्रस्तुत उपन्यास की भाषा में नाटकीयता, काव्यात्मकता, बिम्बात्मकता एवं ध्वन्वात्मकता का समन्वित रूप मिलता है। प्रसंगानुकूल भाषा के कारण पाठक के भीतर कौतुहलता बढ़ती है। शिवशंकर ने ग्रामीण भाषा को आधार बनाया है। मूलतः तकष़ी ने अपना जीवन ग्राम में व्यतीत किया तो ग्राम की भाषा का प्रभाव स्वभाविक ही था। मलयालम के मूर्धन्य आलोचक मुंडश्शेरी का मत है– ''उन्होंने जीवन का व्याकरण सीखा था। जीवन की भाषा में उन्होंने लिखा था। उत्कृष्ट कृतियों के सृजन में रत उनकी कलम को भाषा की जानकारी तक नहीं थी। ललित–साधारण सी भाषा।'' प्रस्तुत उपन्यास में सरल, सामान्य एवं जन की भाषा मिलती है।

'चेम्मीन' उपन्यास में स्थान–स्थान पर आवश्यकतानुसार कहावतों और मुहावरों का प्रयोग मिलता है, समाज की अच्छी परख करने वाले लेखक के साहित्य में लोक की कहावतों एवं मुहावरों का होना स्वभाविक है। यह प्रवृति लेखक की परिपक्वता को दर्शाती है। उपन्यास के कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं– एड़ी से चोटी तक, पेट काटकर पैसे जमा करना, छाती पीट–पीटकर रोना, चेहरा लाल होना, गिलहरी कैसे हाथी की तरह मुँह बाये आदि। उपन्यास में स्थान–स्थान पर अरबी एवं फारसी शब्दों की प्रचुरता भी मिलती है। जैसे– जरूरत, महसूस, बे–अदबी, हिफाज़त, नज़राना, फिजूलखर्च आदि।

आलोच्य उपन्यास मूलतः मलयालम भाषा में लिखा गया है, इसलिए पात्रों के नाम मलयालमी है। पात्र को यथार्थ के धरातल पर उतारने के लिए उसे उसकी भाषा एवं स्थान के अनुरूप गढ़ना जरूरी है इस दृष्टि से शिवशंकर पिल्लै सफल हुए हैं। इस उपन्यास में आवश्यकतानुसार कुछ स्थानों पर मलयालम शब्दों का प्रयोग मिलता है, जैसे– चाकरा (मौसम का प्रकार), आदिला (एक मछली), ऊपा (छोटी मछली), मत्ती (साडीन मछली), बटोर (संग्रह), पोला, अरलिक्त (एक मछली), मस्वीनी (कंद), मण्णादशाला (स्थान विशेष) आदि।

लेखक ने उपन्यास में प्रतीकात्मक, बिम्बात्मक भाषा का प्रयोग किया है। प्रतीकात्मक एवं बिम्बात्मक भाषा के माध्यम से भाव का सम्प्रेषण पाठक तक बहुत गहरे से होता है। बिम्बात्मक भाषा रचना को उदात बनाती है : बिम्ब में दृश्य की ताकत होती है, बिम्बात्मक भाषा के कारण कथा के भाव के साथ घटना का चित्र पाठक के मस्तिष्क में उभरता है, इससे रचना अधिक सम्प्रेषणीय जान पड़ती है। समुद्र में पलनी की नाव लड़खड़ाती और उसके डूबने से पूर्व भाव के आसपास का दृश्य है। उदाहरण– ''समुद्री हाथियों का एक झुण्ड उस नाव के चारों ओर गोता लगाते हुए निकल गया। उनमें से एक ने नाव को अपनी पीठ पर थोड़ा उठा लिया नाव पानी के ऊपर उठ गई। ...समुद्री साँप उसकी नाव पर चढ़ गए। चारों ओर की चाँदनी की चमक में उसने साँपों को लौटते देखा। कुछ साँप नाव के छोर पर पूँछ टिकाए, सिर उठाकर नाचते और फिर नाव में गिर जाते थे। दो साँप नाव में एक–दूसरे से लिपट कर खेल रहे थे।''

उपन्यास में नाट्यात्मक भाषा का चित्रण भी मिलता है, नाट्यात्मक भाषा के माध्यम से पाठक की रूचि को और बढ़ाया जा सकता है, पाठक भाव को ग्रहण करते समय में आनंद की अनुभूति प्राप्त करता है। 'चेम्मीन' उपन्यास के रचनाकार में यह प्रकृति दृष्टिगोचर होती है, इन्होंने नाट्यात्मक भाषा का प्रयोग कर उपन्यास को रोचक बनाया है। उपन्यास का प्रारम्भ ही नाट्यात्मक भाषा से होता है। करुत्तम्मा और परीकुट्टी का संवाद दृष्टव्य है– ''बप्पा नाव और जाल खरीदने जा रहे हैं''

''तुम्हारा भाग्य''

करुत्तम्मा से कोई जवाब देते नहीं बना। लेकिन उसने तुरन्त परिस्थिति पर काबू पा लिया। उसने कहा, ''रुपये काफी नहीं हैं। क्या उधार दे सकते हो ?''

हाथ खोलकर दिखाते हुए परी ने कहा, ''मेरे पास रुपये कहाँ हैं ?''

करुत्तम्मा हँस पड़ी और कहा, ''तब अपने को छोटा मोतलाली क्यों कहते हो ?

तुम मुझे छोटा मोतलाली कहकर क्यों पुकारती हो ?

नहीं तो और क्या कहकर पुकारुँ ?''

तकषी की भाषा में लालित्य के साथ–साथ तीव्रता का परिचय भी मिलता है, इसका कारण इनके पात्र संघर्षमयी हैं, तूफानों से जूझते हैं रुढ़ियों को चुनौती देते हैं। पात्र का संघर्ष, उसका चिन्तन और भाव ही भाषा को बनाता है। तकषी की भाषा में जिस ऊर्जा का चित्रण मिलता है, उसके लिए समुद्र के तूफ़ान में फंसे पलनी का चित्रण पर्याप्त है– ''ज़ोर से बिजली कड़की। भयानक मेघ–गर्जन हुआ। ऐसा लगा मानो आसमान टूट पड़ा। ऐसा मालूम होता था कि समुद्र का सारा पानी सिमटकर एक ही जगह जमा हो रहा है। आँधी और तूफ़ान का ऐसा रंग–ढंग था कि मानो सर्वनाश करके ही दम लेगा। बिजली की चमक में एक तरंग के ऊपर पलनी की नाव का छोर दिखाई पड़ा। उस तरंग के नीचे आ जाने पर नाव से चिपटा पलनी भी दिखाई पड़ाः वह नाव को मजबूती से पकड़े हुए था।' 'बार्थ' के अनुसार आख्यान कला ने यहाँ एक आकर्षक दृश्य का अविष्कार प्रस्तुत कर दिया है।

वर्णनात्मक एवं उपदेशात्मक भाषा के साथ ही वार्तालाप में बहुत सरल एवं स्वभाविक भाषा का प्रयोग किया है। परीकुट्टी के कर्ज़ लौटा देने के सम्बन्ध में चक्की और करुत्तम्मा का वार्तालाप इस प्रकार है–

''करुत्तम्मा : उसका पैसा लौटा देना है।
चक्की : मेरा भी यही विचार है।
करुत्तम्मा : कहने को तो तुम कहती हो, माँ लेकिन देती नहीं। मैंने क्या–क्या उपाय नहीं सुझाए। तुम ने एक को भी काम में नहीं लिया। ?
(एक क्षण के बाद उसने कहा) उस कर्जे को चुकाने के बाद ही।''

7.6 सारांश

व्यक्तिगत भाषा से लेकर प्रादेशिक भाषा तक की भिन्नता यहाँ खूब दर्शित है। उच्चारण में एक खास रीति है– विशेषकर दीर्घ स्वर प्रधान उच्चारण में। तात्पर्य है जहाँ दीर्घ स्वर का उच्चारण नहीं होना चाहिए वहाँ तकषी दीर्घ स्वर की ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं। मछुआरों के भाषा भेद इसी तकनीक पर चित्रित किए गए हैं। तकषी ने जिस भाषा की सृष्टि की है वह केरल में सभी मछुआरों की प्रचलित भाषा नहीं थी, लेकिन ऐसी एक धारणा को प्रस्तुत करने में तकषी सफल हुए हैं।

7.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) 'चेम्मीन' उपन्यास में 'मिथ' पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

प्र2) 'चेम्मीन' उपन्यास की भाषा पर विस्तारपूर्वक विचार कीजिए।

प्र3) मछुआरे समाज की मान्यताओं पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

7.8 पठनीय पुस्तकें

1. चेम्मीन – तकषि शिवशंकर पिल्लै
2. भारतीय साहित्य – डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय और प्रामला अवस्थी, आशिष प्रकाशन, कानपुर, 2004
3. भारतीय साहित्य – डॉ. नगेन्द्र, प्रभाव प्रकाशन, दिल्ली।
4. भारतीय साहित्य की भूमिका – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ – के. सच्चिदानंद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. भारतीय साहित्य : आशा और आस्था – डॉ. आरसु राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. भारतीय साहित्य, डॉ. पाण्डेय – डॉ. अवस्थी, आशीष प्रकाशन, कानपुर।
8. भारतीय साहित्य, तुलनात्मक अध्ययन – सं. डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

M.A Hindi
Course Code : Hin- 403

UNIT - II

Lesson No. 8
Semester - IV

प्रमुख चरित्र

8.0 रूपरेखा

8.1 उद्देश्य
8.2 प्रस्तावना
8.3 करुत्तम्मा
8.4 परीकुट्टी
8.5 पलनी
8.6 चेम्पनकुंजु
8.7 चक्की
8.8 सारांश
8.9 अभ्यासार्थ प्रश्न
8.10 पठनीय पुस्तकें

8.1 उद्देश्य

इस अध्याय में 'चेम्मीन' उपन्यास के विभिन्न पात्रों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे। पात्रों की मुख्य विशेषताओं को जान सकेंगे।

8.2 प्रस्तावना

उपन्यास में अनेक प्रकार के कथापात्र होते हैं। उन्हें दो भागों में बाँट सकते हैं। जैसे पूर्ण कथापात्र और अपूर्ण कथापात्र। उपन्यास की कथा के व्यक्ति ही पूर्ण कथा पात्र हैं। केन्द्र कथा की सहज प्रगति और

परिणति के लिए अप्रधान कथा पात्रों की आवश्यकता पड़ती है। उनकी कथा का पूर्ण विवरण आवश्यक नहीं है। पात्रसृष्टि की दृष्टि से चेम्मीन एक विशिष्ट उपन्यास है। चेम्मीन में व्यक्ति मन की विचित्रता को स्थान दिया है। स्त्री–पुरुष सम्बन्ध के खुरदरे भौतिक तल की अपेक्षा इसमें तकषी के सूक्ष्म मानसिक तल को प्रस्तुत किया है।

8.3 करुत्तम्मा

मलयालम उपन्यास परम्परा में करुत्तम्मा जैसी सशक्त पात्र कोई दूसरी नहीं मिलती है। तकषी शिवशंकर पिल्लै की इस बोल्ड नायिका ने 'चेम्मीन' उपन्यास को श्रेष्ठता के मुकाम तक पहुँचाया है। करुत्तम्मा नीर्कुन्नम तट प्रदेश में जन्मी चेम्पनकुंजु और चक्की की बड़ी बेटी एक साधारण मछुआरिन है लेकिन प्रेम ने उसे साधारण से अलग रूप प्रदान किया है। वह संवेदनशील, सशक्त, युक्ति–विचार, दृढ़ निश्चय, रुढ़ियों को तोड़ने वाली नए समय के साथ चलने वाली स्त्री है। वह प्रेम की भाषा बोलने वाली है, स्वतन्त्र विचार वाली स्त्री है, स्वच्छन्द प्रेम के द्वारा वह समुद्र तट का मिज़ाज ही बदल डालती है।

सच्ची प्रेमिका :–

करुत्तम्मा एक सच्ची प्रेमिका है। बाल्यकाल के स्वतन्त्र जीवन के समय वह परीकुट्टी से परिचित होती है। बाल्यकाल के खेल की गहरी मित्रता आगे चलकर प्रेम में बदलती जाती है। करुत्तम्मा द्वारा परीकुट्टी को गुलाबीशंख भेंट करना ही उसके प्रेम का प्रथम बीजारोपण था। प्रेम की पहली अवस्था में प्रेम के भाव को वह समझ नहीं पाती है, लेकिन प्रेम की पहली अवस्था में पैदा होती छटपटाहट और अकुलाहट को वह जीती है। समुद्र तट पर इन दो युगलों की बेवजह की हँसी एक–दूसरे के आकर्षण का प्रमाण है– ''हँसी भी कैसी चीज़ है! यह आदमी को कभी गम्भीर बना देती है, तो कभी रुलाकर छोड़ती है। करुत्तम्मा का चेहरा लाल हो गया था। उसने शिकायत के तौर पर नहीं, गुस्से में कहा, ''मेरी तरफ इस तरह मत ताको!'' उसकी हँसी खत्म हो चुकी थी! भाव बदल गया था। ऐसा लगा, मानो परीकुट्टी ने अनजाने में कोई गलती कर दी हो।'' यह प्रेम करुत्तम्मा के भीतर दबा नहीं रहता है, वह इस प्रेम को परीकुट्टि के समक्ष अभिव्यक्त करती है। प्रेम के इस माहौल में करुत्तम्मा को स्त्री–सम्बन्धी मान्यताओं एवं बन्धनों का कोई बोध नहीं रहता है। परीकुट्टी और करुत्तम्मा का संवाद इस प्रकार है– ''करुत्तम्मा! तुम मुझसे प्रेम नहीं करतीं? करुत्तम्मा ने झट से जवाब दिया, करती हूँ... मैं सदा–सर्वदा प्रेम करती रहूँगी। इससे बढ़कर कौन–सी प्रतिज्ञा चाहिए थी? परी वहाँ से चला गया। उसके चले जाने पर करुत्तम्मा को लगा कि जो कहना चाहिए था सो तो कहा नहीं और जो नहीं कहना चाहिए वही कह दिया।'' वह पलनी से विवाहोपरान्त भी प्रेम की आवोहवा को नहीं रोक पाती है। समुद्र–तट प्रदेश का कोई भी मापदण्ड करुत्तम्मा के प्रेम को रोक नहीं पाता है। करुत्तम्मा के लिए जीवन में केवल प्रेम ही मूल्यवान था इसलिए वह अन्तिम क्षणों में प्रेमी को चुनती है, जो सफलता उसे जीवन जीते हुए प्राप्त नहीं हुई वह उसे मृत्यु के उपरान्त प्राप्त होती है– ''परी पास में आया। करुत्तम्मा को डर नहीं लगा। नहीं, अब उसे किसी प्रकार का डर नहीं था। उसे एक माँ का गौरव प्राप्त हो गया था।... फिर भी जब पलनी समुद्र में गया है तब रात्रि के समय किसी पर–पुरुष के साथ उसे बातें करते रहना चाहिए क्या?– लेकिन उसे किसी

बात का डर नहीं था। इसके पहले भी वह रात में परी से अकेली मिल चुकी है न! इससे भी बढ़कर, जिसका जीवन निराशा में बरबाद हो गया है उसे क्षण–भर के मिलन से थोड़ी सान्तवना दे सके तो देनी चाहिए न!''

दृढ़ निश्चयी :–

प्रस्तुत उपन्यास में करुत्तम्मा एक दृढ़ निश्चयी पात्र के रूप में उभरती है। उसमें चालाकी, धोखा–धड़ी जैसे अवगुण नहीं हैं, इसलिए उसकी अपने पिता और गाँव के साथ अनबन होती रहती थी। पिता और माँ, करुत्तम्मा के प्रेमी मुस्लमान परीकुट्टी से नाव और जाल के लिए ऋण माँगते हैं और जब चेम्पनकुंजु का व्यापार अच्छा चलता है और पैसे उसके हाथ में खूब आ जाते हैं, तो चेम्पनकुंजु का मन बदल जाता है, वह परीकुट्टी को पैसे वापिस नहीं लौटाता है। पिता के ऐसे कार्य को लेकर करुत्तम्मा और माँ में आए दिन झगड़ा होता रहता है। करुत्तम्मा नहीं चाहती थी कि उसके प्रेमी का पैसा पिता के द्वारा यूं ही ऐंठ लिया जाए। करुत्तम्मा शादी से पूर्व भी माँ से बार–बार कहती है कि परीकुट्टी का पैसा चुकाया जाए तभी वह चैन से बैठ सकती है लेकिन माँ द्वारा उसे फटकार खानी पड़ती है, ''छोटा मोतलाली तेरा कौन है री ? करुत्तम्मा ने क्या गलती की थी ? कुछ भी तो नहीं। यह चक्की को भी मालूम है। आज तक उसने कोई गलती नहीं की। वह एक बहुत सुशील और सहनशील लड़की है। परी का कर्ज़दार बनना ठीक नहीं था। उसका रुपया लौटा देने की बात जो करुत्तम्मा करती है उसमें गलती क्या है?'' चक्की के डाँटने–फटकारने पर भी करुत्तम्मा हार नहीं मानती है। वह माँ की इस लिजलिजेपन के लिए विरोध करती है, वह शादी से पूर्व परीकुट्टी का ऋण चुकाना चाहती है करुत्तम्मा के शब्द दृष्टव्य हैं– ''वह पैसा लौटाए बिना मैं नहीं मानूँगी।, नहीं लौटाया गया तो अपने प्राण त्याग दूँगी। मेरी बिटिया, ऐसे अशुभ शब्द मुँह से न निकाल!, करुत्तम्मा रो पड़ी, और क्या करूँ? वह बेचारा दिवालिया हो गया है। यहाँ पैसा नहीं है, ऐसी बात भी नहीं है। देना नहीं चाहते, यही तो बात है।''

चिन्तनशील :–

करुत्तम्मा चिन्तन–मनन करने वाली पात्र है। वह प्रत्येक परिस्थिति पर विचार करने वाली है। वह अपनी नज़र से जीवन को देखती है। समुद्र–तट पर स्त्री की पवित्रता सम्बन्धी मान्यता को वह यूँ ही स्वीकार नहीं करती है, वह उस पर स्वयं विचार करती है और कहीं–न–कहीं घाट की पवित्रता सम्बन्धी तत्व–ज्ञान को वह निरर्थक भी मानती है। वह मूलतः जीवन को तर्क की कसौटी पर कसती है। वह तमाम तरह के समुद्र–तट पर प्रचलित मिथ को धत्ता भी बताती है, करुत्तम्मा के शब्द दृष्टव्य हैं– ''घेरे के पास खड़ी करुत्तम्मा ने सब कुछ सुना। वे सब बातें सुनकर वह स्तम्भित रह गई। उसकी माँ ने भी जवानी में किसी से प्रेम किया है क्या। क्या यह सम्भव है कि इन सबों ने घाट की पवित्रता नष्ट की है? तो क्या घाट की पवित्रता का तत्व–ज्ञान निरर्थक बात ही है? इन सबके बारे में ऐसी कहानियों के रहते हुए भी समुद्र पहले की तरह आज भी पश्चिम में लहरा रहा है, आज भी इसमें पहले की तरह ज्वार–भाटे आते हैं, मछुआरों की आमदनी भी वैसी ही होती है, उनका जीवन–क्रम भी पहले ही जैसा चलता है। तब इस पवित्रता की कहानी का क्या मतलब है? करुत्तम्मा को अक्सर यह बेचैन करती है क्या यह समुद्र तट पर उसकी भाँति किसी स्त्री ने आज तक प्रेम नहीं किया है। यदि किया है तो समुद्र तट आज भी कैसे सुरक्षित है और यदि नहीं किया है तो उसके

प्रेम करने से समुद्र–तट पथ भ्रष्ट हो सकता है क्या? इस प्रश्न से उसका हृदय बोझिल हो जाता है, वह अपनी इस मनःस्थित के बारे में किसी से कुछ नहीं कह सकती थी।

करुत्तम्मा के पात्र चित्रण में स्त्री अधिकार और आवश्यकताएँ प्रत्यक्ष लक्ष्य के रूप में परिलक्षित नहीं होती है, फिर भी उसके व्यक्तित्व की समझदारी के रूप में उसके विचार को व्यक्त किया गया है कि अपराध कुछ भी न करने पर समाज उसको दण्डित कर रहा है, 'विवाह के पहले मैंने एक पुरुष से प्रेम किया। उसमें दोष क्या है?' यह प्रश्न वैयक्तिक स्वतंत्रय बोध का प्रकटीकरण है। इस प्रकार की दुर्घटनाओं का दायित्व उस समाज का है जो जाति–धर्म से परे होकर जीने को तैयार होने वालों को जीने नहीं देता है। नवजात नन्हीं बच्ची पंचमी आदि भविष्य दुर्घटना के सूचकों के रूप में बच जाती हैं। पात्र सृष्टि में तकषी की असामान्य क्षमता को व्यक्त करने वाली है करुत्तम्मा।

8.4 परीकुट्टी

'चेम्मीन' उपन्यास में दुखान्त कथा का नायक परीकुट्टी है। वह दृढ़निश्चयी, संघर्षमयी, संवेदनशील पात्र है। यह मुस्लिम समुदाय का है। परीकुट्टी नीर्कुन्नम के सागर तट प्रदेश का नहीं था, वह बचपन से ही अपने पिता के साथ यहां आया था। परीकुट्टी के पिता झींमा (मछली) का व्यापारी था। इसी सागर तट पर बचपन के साथ–साथ वह यौवनावस्था में पहुँचता है। बालयावस्था मे उसकी भेंट चेम्पनकुंजु की बेटी करुत्तम्मा से होती है। वह दोनों बचपन के साथी थे। दोनों सागर तट की सीपियों से खेलते–खेलते यौवनावस्था में पहुँचे थे। बचपन की गहरी मित्रता इस अवस्था तक आते–आते प्रगाढ़ प्रेम में बदल जाती है।

सच्चा प्रेमी :–

परीकुट्टी एक सच्चे प्रेमी के रूप में उभरता है। वह करुत्तम्मा से प्रेम करता है। वह मुस्लिम है और करुत्तम्मा मछुआरा समाज की है। चक्की को बेटी द्वारा किसी विधर्मी को प्रेम करना पसन्द नहीं आता है और कहीं–न–कहीं करुत्तम्मा विधर्मी से प्रेम करने का नतीजा अच्छी तरह जानती थी, इसीलिए माँ भी बार–बार बेटी पर नकेल कसती है। परीकुट्टी का प्रेम स्वच्छ था, उनका प्रेम कभी भी शारीरिक धरातल से नहीं गुज़रता है। इसी प्रेम के वश में वह करुत्तम्मा के पिता को नाव और जाल खरीदने के लिए पैसे उधार देता है। वह प्रेम का साक्षात्कार विवाह में नहीं खोजता है, इसलिए वह करुत्तम्मा पर विवाह के लिए दबाव नहीं बनाता है और न ही घर छोड़कर भागने के लिए मजबूर करता है जैसे जीवन की पूर्णता मृत्यु में है वैसे ही परीकुट्टी का प्रेम, मृत्यु से पूर्ण हो जाता है। वह एक निराश प्रेमी भी था, लेकिन उसकी निराशा ने करुत्तम्मा की शादी के बाद कोई गड़बड़ी करनी नहीं चाही। करुत्तम्मा के माता–पिता की आर्थिक मद्द कर उन्हें वह आभारी बनाकर अपने प्रेम–मार्ग को कभी सुगम नहीं बनाना चाहता है। प्रेम आर्थिक विनाश का कारण बन जाता है लेकिन कभी भी वह करुत्तम्मा और उसके परिवार को हानि पहुँचाने की नहीं सोचता है। "उसने प्रेम किया, वह भी जान–बूझकर नहीं। करुत्तम्मा को या उसके परिवार वालों को कुछ हानि पहुँचाने की नीयत से नहीं। एक पुरुष होकर उसने जन्म लिया था और एक स्त्री से प्रेम किया था। फिर भी उसके जीवन से अलग–अलग ही रहा।"

परीकुट्टी के लिए प्रेम सबसे मूल्यवान सम्पदा है जिसको न बेचा जा सकता है और न ही खरीदा जा सकता है। उसकी अपनी प्रेमिका किसी दूसरे पुरुष की पत्नी बनी और एक बच्ची की माँ भी बनी, लेकिन अपनी प्रियत्मा के प्रति उसकी मनोदशा में कोई अन्तर नहीं पड़ता है। यही अपूर्वता है। परीकुट्टी की यह एक प्रबल इच्छा थी कि जीवन में साथ–साथ मिलन नहीं हो पाया तो मृत्यु के बाद एक हो जाएगें। सभी प्रकार के भौतिक परिवेश में वह केवल एक प्रेमी था और मृत्यु के समय में परी और करुत्तम्मा दोनों एक थे।

संवेदनशील :–

परीकुट्टी एक संवेदनशील पात्र है। वह दूसरे व्यक्ति की मनःस्थिति को समझने वाला ईमानदार पात्र है। वह षडयन्त्र करना नहीं जानता है। वह दूसरों की पीड़ा को अपना समझता है, वह दूसरों की जरूरत को भी अपनी जरूरत समझता है। दूसरों के दर्द में अपने पहाड़ जैसे दर्द भी भूल जाता है। मूलतः वह प्रेम की परिपाटी पर चलने वाला मानवता की भाषा बोलने वाला व्यक्ति है। करुत्तम्मा की माँ की मृत्यु के समय में वह एक बेटे की भाँति चक्की के साथ रहता है, वह चक्की के विकट हालात देखकर भावुक होता है। बीमार चक्की एक माँ की तरह परी को बोलती है– "मेरे पेट से लड़के का जन्म नहीं हुआ है बेटा! लेकिन मेरा एक बेटा है, यही यही परी मेरा बेटा है।" परीकुट्टी अपनी संवेदनशील प्रवृति के कारण करुत्तम्मा की माँ का प्रेम भी पाता है। परीकुट्टी इस दृष्टि से एक सफल नायक के रूप में उभरता है।

आज्ञाकारी :–

परीकुट्टी एक आज्ञाकारी बेटे के रूप में भी उभरता है। वह बड़ों का आदर करने वाला है। स्वार्थ प्रवृति का नहीं है। करुत्तम्मा की माँ चक्की भावावेश में आकर परी से बार–बार करुत्तम्मा का भाई होकर रहने को कहती है। चक्की के शब्दों में, "परी, तुम करुत्तम्मा के भाई हो, उसका कोई सगा भाई नहीं है। बेटा, तुम्हें उसका सगा भाई होकर रहना है!" परीकुट्टी, चक्की की कही हर आज्ञा का पालन करता है। वह प्रेमिका की माँ की खुशी में अपनी खुशी समझता है।

मद्‌दगार :–

उपन्यास पढ़ते समय पाठक का हृदय परीकुट्टि के प्रति सहानुभूतिपूर्ण इसलिए रहता है क्योंकि वह कई अच्छे गुणों को अपने भीतर सोंजये हुए है। वह आज्ञा का पालन करने वाला एक संवेदनशील पात्र है, वह दूसरे की पीड़ा को जल्द महसूस करता है। दूसरों की समस्याओं के हल भी तुरन्त खोजता है। परीकुट्टी की सबसे बेहतरीन प्रवृति है दूसरों की मद्‌द करना। परीकुट्टी के द्वारा चेम्पनकुंजु की आर्थिक मद्‌द इस बात का प्रमाण है। बकायदा केन्द्र में प्रेमभाव रहा है, लेकिन मद्‌द करने की प्रवृति के पीछे भी उसकी संवेदनशीलता है। आर्थिक मद्‌द के कारण वह स्वयं नुक्सान खा लेता है, लेकिन वह अपना आपा कभी नहीं खोता है, यह प्रवृति उसके मन के सुन्दर होने की निशानी है। रोष में आकर जब चेम्पन तमाम तरह के इल्ज़ाम लगाते हुए उसका ऋण चुकता करता है, तब परीकुट्टी स्तब्ध रह जाता है, "परी हाथ में रुपये लिए ज्यों–का–त्यों बहुत देर तक खड़ा रहा। वह चेतना–शून्य ही खड़ा रहा। 'हाथ में रुपये हैं' यह भी उसे मालूम है, ऐसा नहीं लगता

था। उन रुपयों की क्या आवश्यकता थी। आवश्यकता क्यों नहीं थी ? – उसने कितने रुपये डुबोये हैं ? उस दिन के भोजन के लायक भी उसके पास पैसा नहीं था। सारा जीवन सामने है। तब वे रुपये, सहारा बन सकते हैं न! एक पुराने कर्ज़ का ही रुपया वसूल हुआ था न! परी ने अपने हाथ की ओर देखा। हाथ ने रुपयों को पकड़ रखा था। करेन्सी नोटों के छोर हवा में हिल रहे थे। उसे लगा कि 'ये रुपये मेरे पास क्यों हैं ?' उसे उसने कभी भी अपना नहीं समझा था। जब अपना नहीं समझा था तब वह उसका कैसा हो सकता है ? तब वह किसका है ?''

अतः कहा जा सकता है कि 'चेम्मीन' उपन्यास में परीकुट्टी एक संवेदनशील, ईमानदार और सच्चे प्रेमी के रूप में उभरता है। वह संघर्षशील पात्र है जो दूसरों की रोटियाँ नहीं छीनता है और न दूसरों का उपयोग कर अपने महल खड़े करता है। प्रेम ही उसके जीवन की पूँजी थी, जिसके लिए हर एक असम्भव कार्य को सम्भव बना देता था।

8.5 पलनी

'चेम्मीन' उपन्यास में पलनी एक स्वाभिमानी, अशिक्षित होकर भी अधिकारों का जानकार, स्नेहधनी के रूप में उभरता है। वह एक अनाथ व्यक्ति है, उसके सिर पर न माँ और पिता का साया है और न ही रिश्ते नातों का। वह समुद्र से प्रेम करने वाला, समुद्र के लिए जीने वाला और समुद्र के लिए अपना र्स्वस्व न्यौछावर करने वाला पात्र है। वह स्वार्थी नहीं है, वह मेहनत की रोज़ी–रोटी खाने वाला संघर्षशील पात्र है। वह केरल के समुद्र के तृक्कुन्नपुषा तट प्रदेश में पला–बढ़ा था। वह अपनी आज़ादी से दुनिया को देखने वाला पात्र है। जैसे–जैसे उसकी आयु बढ़ती जाती है वैसे–वैसे वह समुद्र में काम करना, सागर की लहरों से बातें करना और सागर की लहरों के संग नाव को बहुत तेज दौड़ाना सीखता है। समुद्र की प्रत्येक आवो–हवा का रहस्य वह जानता है, वह समुद्र को साधने में सिद्धहस्त होता जाता है और इसी तरह वह स्वयं की मेहनत और संघर्ष से एक शक्तिशाली मच्छुवारा बनता है। वह एकदम स्वच्छंद था, किसी के प्रति किसी भी प्रकार का उसके कन्धों पर कोई दायित्व नहीं था। उसको दुनिया में चाहने वाला कोई भी न था।

'पलनी' के जीवन का रंग 'चाकरा' के काल में नीर्कुन्नम तट प्रदेश में आने से बदलता है। नीर्कुन्नम में उसकी भेंट शक्तिशाली मच्छुआरा चेम्पनकुंजु से होती है। नीर्कुन्नम तट पर गर्व भाव के साथ चेम्पनकुंजु की नाव को समुद्र में पछाड़ने की सामर्थ्य किसी व्यक्ति में नहीं थी। पलनी ही एक ऐसा व्यक्ति था जो चेम्पनकुंजु को चुनौती दे सकता था, लेकिन वह एकदम स्वभाव से सरल सहज एवं सीधा व्यक्ति है। वह चालाकियों के दांव–पेंच नहीं जानता है। वह चेम्नकुंजु की मंशा को पढ़ने में भी समर्थ नहीं हो पाता है, क्योंकि सरल एवं सहज व्यक्ति के लिए पूरा समाज ही सरल एवं सहज होता है। लालची प्रवृति का चेम्पन चाहता है कि किसी तरह पलनी उसकी नाव के साथ काम करे और वह केवल चेम्पन का होकर ही रहे। पलनी का पैसा भी घर ही में रहे, इसलिए वह पलनी को अपने बेटी का पति बनता है। चेम्पन का ऐसा विश्वास था कि अनाथ होने के कारण पलनी घर ज़माई बनकर ही रहेगा। लेकिन स्वाभिमानी पलनी चेम्पन की सारी प्रतीक्षाओं

पर पानी फेर विवाह के उपरान्त विधि अनुसार पत्नी के साथ तृक्कुन्नपुषा वापिस लौटता है। 'चाकरा' पकड़ के लिए गये पलिन ने कभी नहीं सोचा था कि वह शादीशुदा होकर लौटेगा। वह नहीं जानता था कि 'चाकरा' उसके जीवन में नए रंग भर देगा। केवल अपने लिए जीने वाला अब किसी दूसरे के लिए भी जीयेगा। विवाह के उपरान्त वह शान्त और प्रेमी पति के रूप में बदल जाता है। वह प्रेम की भाषा बोलने लगता है। शादी के बाद ही वह जीवन का अर्थ समझता है और अब वह नए तरीके से जीने लगता है।

पलनी और करुत्तम्मा के दाम्पत्य सम्बन्ध में प्रदेश के लोग विघ्न डालने लगते हैं। प्रदेश के लोगों की एक तो यह शंका रहती है कि नाव एवं जाल के स्वामी धनी मच्छुआरे ने अपनी बेटी को एक अनाथ के हाथों क्यों सौंप दिया? लेकिन अंत में वह स्वयं ही इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि ज़रूर लड़की में कोई खोट होगा। इस बीच लोगों को परीकुट्टी और करुत्तम्मा के प्रेम प्रसंगों की आवोहवा भी मालूम पड़ने लगती है और यहीं से पति–पत्नी के सम्बन्धों में खट्टास पैदा होती है। समाज की नज़र पवित्रता को भंग करने वाली स्त्री पति के लिए संकट का कारण बनेगी ही और यदि पलनी को नाव पर काम दिया तो सम्पूर्ण संमुद्र तट के लिए वह कार्य संकट का कारण बन सकता है। लोगों के चिन्तन–विचिन्तन के फलस्वरूप पलनी को नाव में ले जाना विवादापूर्ण माना जाता है। एक दिन पलनी के मित्र उसे अलग कर नाव को लेकर समुद्र में मछली बटोर के लिए चले जाते हैं मित्रों के इस कार्य से पलनी आहत होता है। वह एकदम टूट जाता है। ऐसी परिस्थिति में वह पत्नी को डाँटता भी है लेकिन उसे दोषी नहीं ठहराता है। उपन्यास में पलनी स्वाभिमानी पात्र के रूप में उभरता है, वह दुनिया को ठेंगा दिखाने का दम भी रखता है। 'आगे हम कैसे जिएँगे?'– करुत्तम्मा का यह प्रश्न सुनकर उसका पौरुष जागता है– वह अपने होंठ काटते हुए कहता है– ''अरी किसका अधिकार है यह कहने का कि मैं समुद्र में जाने योग्य नहीं हूँ। समुद्र में काम करके जीने के लिए ही मेरा जन्म हुआ है। समुद्र में जो कुछ भी है, वह सब मेरा भी है।' नहीं कहने का अधिकार किसको है?'' पलनी का मन अपने अधिकार–बोध से लबालब हो जाता है, मूलतः वह स्वयं को रत्नाकर का उत्तराधिकारी मानता था।

तश्क्कुन्नपुषा तट प्रदेश के लोगों द्वारा अलग कर दिये जाने पर भी पलनी हार नहीं मानता है। वह हिम्मत वाला पात्र है। वह मूलतः अकेले ही जीवन की गाड़ी को चलाने में सिद्धहस्त था, इसलिए समाज द्वारा अलग कर दिये जाने पर उसे खास फर्क नहीं पड़ता है। वह अकेले, छोटी नाव में सागर में काँटे से मछली पकड़ता था। उसने करुत्तम्मा से यह भी कहा कि 'रीति–नीति' से चलने पर वह उसकी मछुआरिन बनकर रह सकती है। पंचमी और करुत्तम्मा के बीच परीकुट्टी पर हुए वार्तालाप को सुनकर पलनी का मन आहत होता है। करुत्तम्मा के मन में छिपे परीकुट्टी को जब पलनी ने प्रत्यक्ष देखा तो करुत्तम्मा को लगा कि अब कुछ भी छिपाने को नहीं है। यह मानने के लिए करुत्तम्मा अपने मन में शक्ति संजोने लगती है कि प्रेमकथा सच्ची है। पलनी में जीवन और मृत्यु का संघर्ष चल पड़ता है। वह रूष्ट होकर यह मनोभाव लेते हुए सागर की दूरी तक नाव खेते जाता है कि पत्नी अपने पति को चाहती हो तो पति मछुआरिन रहकर उसकी रक्षा करे। उसी रात में वह भारी तूफान और बारिश में एक भारी शार्क (तिमि) के पीछे चलकर समुद्र के बीच फँस जाता है, संकट के समय वह करुत्तम्मा, करुत्तम्मा चिल्लाता है, लेकिन अन्ततः वह समुद्र में समा जाता है। उपन्यास में पलनी

के जीवन का अन्त कारुणिक रूप से होता है और इसी कारण यह पात्र पाठक के हृदय में अपनी जगह भी बनाता है।

अंततः कहा जा सकता है कि एक साधारण मच्छुवारे से जिन–जिन अच्छाइयों की अपेक्षा कर सकते हैं, वे सब पलनी में मौजूद हैं। धोखा देने के कारण हुई मनोवेदना और हठधर्मिता के अलावा और कोई बुराई उसमें नहीं थी। एक पति के लिए आवश्यक परिपक्वता, सहिष्णुता एवं आत्मधैर्य उसमें मौजूद था।

8.6 चेम्पनकुंजु

चेम्पनकुंजु एक मच्छुआरे के रूप में उभरता है। वह साधारण मच्छुआरा नहीं है जो काम करता है, ताड़ी पीता है और पत्नी को दोयम दर्जे का दिखाकर पुरुषत्व को सन्तुष्ट करता है। वह अपनी महत्वाकांक्षाओं के साथ जीने वाला पात्र है। अपने सामान्य जीवन में चमक पैदा करने वाला व्यक्ति है। जिस भी लक्ष्य को प्राप्त करने का यदि प्रण करता है तो उसे प्राप्त करके ही साँस लेता है। जीवन को अपने हिसाब से जीने की उसमें जिजीविषा है। समाज द्वारा बनाए गए सिद्धान्तों को लागू करता है। वह बनाई गई परम्पराओं को तोड़ने वाला पात्र है। वह सामान्य मछुआरा तो था ही, जब वह किसी की नाव में काम करने जाता था, लेकिन उसके मन में खुद की नाव और जाल खरीदने की इच्छा उसे सामान्य नहीं रहने देती है। अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए वह परीकुट्टि से उधार लेता है। इस तरह एक नाव का मालिक होते ही वह दिन–व–दिन तरक्की करने लगता है। तरक्की के साथ–साथ वह लालची भी बनता जाता है। पैसे के लालच में वह संवेदनहीन बनता जाता है। जहाँ तक कि वह अपनी बेटी पंचमी को भी नाव के नीचे से छोटी मछली नहीं बटोरने देता है। वह एक दूसरा चेम्पन ही मालूम होता था– "मेरी नाव के नीचे से कोई भी 'ऊपा' न बटोरे।... चेम्पन की तरह पंचमी को भी एक अभिलाषा थी, वह ऊपा बटोरकर सुखाकर जमा करना चाहती थी। शायद उससे भी कुछ आमदनी हो जाती, जो काम आती। वह अपना अधिकार समझकर अपने पिता से ऊपा बटोरने गई थी चेम्पन को कुछ सूझता नहीं था क्या ? क्या इस तरह आदमी अपने को भूल जाता है?" चेम्पन को लालच इतना अन्धा बना देता है कि समुद्र–तट के नियम के खिलाफ भी चलता है। चेम्पन की नाव से बटोरी गई मछली का हिस्सा लेने का हक गरीबों को भी होता है, लेकिन नाव का मालिक बनते ही और पैसे हाथ में आते ही वह अपना समय भूल जाता है और समुद्र–तट के मछुआरों पर रोब की लाठी चलाने लगता है।

महत्वकांक्षाओं को पूरा करने के समय वह परिक्कुट्टी के पैसे उधार लेने वाला चेम्पन, पैसे के आते ही उधार वापिस नहीं करना चाहता है। ऐसे समय में उसकी इच्छा यहाँ तक बढ़ रही थी कि वह अधेड़ उम्र में नन्हें बच्चों की तरह सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करे। चेम्पन के शब्दों में– "ज़िंदगी भर कमाता ही रहा न! अब पल्लिक्कन्नम की तरह हमें भी थोड़ा सुख भोगना चाहिए।" चक्की को थोड़ी मोटी होना है– यह इच्छा भी उसके मन में प्रकट हो रही थी। "तू सुनेगी? वह स्त्री तेरी ही उम्र की है। वह बराबर सज–धजकर रहती है। बाल सँवारे रहती है, बिन्दी लगाती है और होंठ भी लाल रखती है। देखने में भी सोने की तरह लगती है। पति–पत्नी बच्चों की तरह हैं।"

इतना ही नहीं उसकी महत्वाकांक्षाएँ परीकुट्टी के सर्वनाश का कारण बनती है। सपनों को पूरा करने के लिए परीकुट्टी से उधार लेने वाला शैतान बन जाता है। वह परीकुट्टी को मछली उधार में नहीं देता है, वह उससे नकद पैसे माँगता है। करुत्तम्मा के शब्दों में, ''छोटे मोतलाली को मछली नहीं मिली। चक्की, परीकुट्टी के पास गई। पूछा, 'माल नहीं माँगा, मोतलाली ?' 'माँगा' ? 'तब' ? परी ने कुछ जबाव नहीं दिया। उस दिन उसे माल नहीं मिला। आज जैसा 'बटोर' बहुत दिनों से नहीं हुआ था। चक्की को सब मालूम हो गया। उसने चेम्पन को अपने को भूलकर व्यवहार करते देखा ही था। उसने कहा, ''मछली देखकर वह पिशाच हो गया है मोतलाली।'' पैसे की प्यास से ही उसने पलनी को दामाद बनाया है। वह पलनी को घर जमाई बनाकर रखना चाहता था, इस कारण से चेम्पन का व्यापार और बढ़ जाता, क्योंकि पलनी समुद्री तूफान में भी नाव साधने में सिद्धहस्त था। विवाह के दौरान वह पलनी को कुछ नहीं देता है, इतना ही नहीं प्रदेश मर्यादा का उल्लंघन कर वह भारी रकम 'दुल्हिन शुल्क' के रूप में माँगता है और शादी के दिन झगड़े की परिस्थिति बनाता है। पलनी को घर जमाई बनाने की आशा चेम्पन की असफल होती है तो वह पति के साथ ससुराल जाने वाली पुत्री को तिरस्कृत कर उसका बहिष्कार करता है। विवाह के उपरान्त चौथे दिवस की दावत के लिए नए वर–वधु को बुलावा न भेजकर, प्रतिकार करता है। पत्नी का स्वास्थ्य गिरने पर चेम्पन का सुख भोगने का मोह टूट जाता है। पत्नी की मृत्यु के बाद वह दूसरा विवाह करता है, दूसरी शादी के बाद भी सुख उससे दूर ही रहता है। सौतेली माँ के प्रति पंचमी की नफरत, अपने पुत्र के लिए दूसरी पत्नी द्वारा चोरी करना आदि परिस्थितियों में वह पागल सा बन जाता है। पागल की तरह वह परीकुट्टी के हाथों कुछ रुपये थमा देता और समुद्र तट पर घूमता रहता है। 'चेम्मीन' उपन्यास में जितनी भी दुर्घटनाएँ घटती हैं, सब उसके लालच के कारण ही घटती हैं।

8.7 चक्की

'चेम्मीन' उपन्यास में चक्की सरल स्वभाव की पात्र है। वह 'चेम्पन' की पत्नी है। वह पतिव्रता धर्म का पालन करने वाली स्त्री है। चक्की का महत्त्व केवल मुख्य पात्र करुत्तम्मा की माँ मात्र के रूप में ही नहीं है, बल्कि उपन्यास के प्रथम अध्याय से तेरहवें अध्याय तक अपनी सजीव उपस्थिति से तथा बाद के बीसवें अध्यायों में एक अपूर्व आत्मीयता एवं संवेदनशीलता से मुख्य भूमिका निभाती है। वह पति की भांति चलाकियां करना नहीं जानती है। वह सीधी–सादी मल्लाहिन है। वह परम्पराओं का अनुपालन करने वाली और पति के बताए रास्तों पर चलने वाली स्त्री है। पति द्वारा दिखाए सपनों को ही अपना सपना मानने वाली स्त्री है।

'चक्की' मल्लाह की असली सम्पत्ति मल्लाहिन की पवित्रता को ही मानती है। वह पति परायण एवं साधवी स्त्री है। उसकी दृष्टि में पति ही परमेश्वर तुल्य है। वह परम्परागत तत्व–ज्ञान की अधिकारणी थी। वह अपनी बेटी को भी परम्परागत स्त्री की पवित्रता सम्बन्धी ज्ञान से अवगत करवाती है। ''इस महासागर में सब कुछ है बिटिया, सब कुछ। इसमें जाने वाले लोग कैसे लौटकर आते हैं यह तुझे क्या मालूम! तट पर उनकी स्त्रियों के पवित्रता से रहने से ही होता है। वे पवित्रता का पालन न करें तो मल्लाह नाव साहित भँवर में पड़कर खत्म हो जाए। मछुआरों का जीवन वास्तव में तट पर रहने वाली स्त्रियों के हाथ में ही है।'' 'चक्की' की दृष्टि

में स्त्री के लिए सबसे बड़ा गुण पवित्रता ही है। उसे पवित्रता को सदैव बनाए रखना चाहिए और समुद्र–तट की पवित्रता को नष्ट करने वाले बाहरी पुरुषों से तट की महिलाओं को बचना चाहिए। मूलतः चक्की परम्परागत स्त्री है, इसलिए वह मर्यादाओं में रहकर ही जीवन यापन करती है। करुत्तम्मा और परीकुट्टी के मिलने–जुलने से वह चिंतित होने लगती है। करुत्तम्मा को यूं नाव के पीछे अकेले विधर्मी लड़के से मिलने पर माँ बेटी को फटकारती भी है। "अरी, मैं क्या सुन रही हूँ ? करुत्तम्मा ने उत्तर नहीं दिया। 'तू क्या करने पर तुली हुई है री ?" चक्की बेटी की सुरक्षा को लेकर चिंतित होती है और यहां तक कि वह उसके विवाह के प्रति भी विचारने लगती है। चेम्पन द्वारा नाव और जाल खरीदने की इच्छा को खदेड़ते हुए वह बेटी के ब्याह की ओर उसका ध्यान खींचती है, ताकि बेटी को अपने घर सुरक्षित भेजा जाए। बेटी अब युवती बन चुकी है और कोई विधर्मी उसे पथभ्रष्ट कर सकता है और बेटी से गलती भी हो सकती है। चक्की के शब्दों में, "अब तक तुम्हारे जाल और नाव के लिए पैसा इकट्ठा करने के विचार से मैं टोकरियाँ भर–भरकर बेचने जाया करती थी। आगे इस आमदनी की आशा मत रखना! मुझे अपनी बेटी की रक्षा करनी है। उसकी अब उम्र हो गई है। उसे घर पर अकेली छोड़कर कहीं जाने का मेरा मन नहीं है। नहीं तो बेटी की शादी करा दो।"

'चक्की' पति द्वारा नाव खरीदने पर प्रसन्न होती है। इससे पहले वह पति पर बेटी की शादी करने का ज़ोर डालती रही लेकिन जैसे ही नाव खरीदी गई तो वह भी घर में दिवा–स्वप्न देखने लगती है कि अब वह भी एक नाव के मालिक की स्त्री कहलाएगी। उसके जीवन की एक बहुत बड़ी इच्छा उसे पूरी होती नज़र आ रही थी। वह जानती थी कि एक नाव का मालिक होने के लिए पति–पत्नी ने काफी परिश्रम किया है। पड़ोस की किसी भी स्त्री से वह देखने में अच्छी थी, नाव की मालिकन होने के बाद उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता है।

बेटी के विधर्मी परीकुट्टी के प्रेम करने पर डर जाती है। बेटी द्वारा विधर्मी लड़के से प्रेम करना उसकी घबराहट का कारण बनता है। मूलतः वह मर्यादाओं में रहने वाली परम्परागत स्त्री है, वह 'स्व' की इच्छाओं को जानने वाली नहीं है। बेटी करुत्तम्मा 'स्व' को केन्द्र में रखकर जीवन जीने वाली स्त्री है। वह अपनी इच्छा से प्रेम करने वाली स्त्री है लेकिन करुत्तम्मा की माँ मर्यादाओं में रहकर स्त्रियोचित गुणों का निर्वाह करने वाली स्त्री है। बेटी के प्रेमी परीकुट्टी को वह समझाती हुई कहती है कि "बेटा, तुम विधर्मी हो। हम लोग मछुआरे हैं। इस समुद्र–तट पर तुम लोगों ने बचपन का खेल खेला है। वह थी बचपन की बात। अब हम एक अच्छे मछुआरे के साथ इसका ब्याह करने जा रहे हैं। तुम भी अपनी जाति में शादी करके जीवन बिताओ। तुम लोग अभी बच्चे हो। कुछ समझ नहीं सकते। बदनामी का कोई काम न करो! इतना भी लोग देख लें तो बातें करने लगेंगे। ऐसी ही लोगों की आदत है।"

चेम्पन की इच्छा को पूर्ण करने हेतु वह भी टोकरी भरकर मछली बेचने जाती थी और साथ ही घर की स्थिति पहले से बेहतर हो इसके लिए वह स्वयं घर से बाहर निकल मछली बेचती थी। घर को एक नया रूप देने के लिए वह खूब पैसा जमा भी करती है और पति के सपने को पूरा करने में वह भी मद्द करती

है। चक्की के साथ चेम्पन ऐश्वर्यशाली बनता है। चक्की चेम्पन को बनाती है, वह घर को घर बनाती है। जहाँ भी चेम्पन को जरूरत होती, वहीं आकर वह उसका साथ देती है।

करुत्तम्मा के प्रेम से सम्बन्धित बातें समुद्र तट के लोगों को पता चल जाती हैं। लोगों की तरह–तरह की बातों को सुनकर वह हताश भी होती है। ''इस समुद्रतट का सर्वनाश न होने के लिए ही करुत्तम्मा को दूसरे तट पर भेज दिया गया है।' यह सुनते ही वह बेहोश हो जाती है। चक्की दिन–व–दिन बीमार पड़ती चली जाती है। खाट पर पड़ी माँ को छोड़कर पति के साथ जाने वाली करुत्तम्मा की उपेक्षा की जाती है। चेम्पन ने बेटी के सन्दर्भ में गरज कर कहा था कि 'वह मेरी बेटी नहीं है।' पर चक्की ने आर्शीवाद दिया। वह विवाह के दिन रुग्ण अवस्था में भी मातृ सुलभ स्नेह के कारण पुत्री को ससुराल जाने की अनुमति देती है। वह ममतामयी प्रवृति के साथ–साथ संवेदनशील स्त्री है।

8.8 सारांश

अन्ततः कहा जा सकता है कि उपन्यास के प्रमुख पात्रों की तरह दूसरी श्रेणी का यह पात्र उज्ज्वल सृष्टि का द्योतक है। उपन्यास के पात्र विभिन्न प्रकार की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। यह पात्र समुद्र तट पर रहने वाले मछुआरों के जीवन का जीता–जागता, उनके दुख–दर्दों, खुशियों, इच्छाओं, विरोधाभासों, विश्वासों, आस्थाओं, मानवीय दुर्बलताओं की मानवीय कथा को दर्शाते हैं।

8.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) 'चेम्मीन' उपन्यास की पात्र सृष्टि पर प्रकाश डालिए।

____

____

____

____

____

____

____

____

प्र2) 'चेम्मीन' उपन्यास में सबसे अधिक कौन–सा चरित्र प्रभावित करता है और क्यों?

____

____

____

____

____

____

____

____

1.10 पठनीय पुस्तकें

1. चेम्मीन – तकषि शिवशंकर पिल्लै
2. मछुआरे – तकष़ी शिवशंकर पिल्लै, अनुवादक– भारती विद्यार्थी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली–180001
3. भारतीय साहित्य – डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय और प्रामला अवस्थी, आशिष प्रकाशन, कानपुर, 2004
4. भारतीय साहित्य – डॉ. नगेन्द्र, प्रभाव प्रकाशन, दिल्ली।
5. भारतीय साहित्य की भूमिका – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ – के. सच्चिदानंद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. भारतीय साहित्य : आशा और आस्था – डॉ. आरसु राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. भारतीय साहित्य, डॉ. पाण्डेय – डॉ. अवस्थी, आशीष प्रकाशन, कानपुर।
9. भारतीय साहित्य, तुलनात्मक अध्ययन – सं. डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

M.A Hindi
Course Code : Hin- 403

UNIT - III

Lesson No. 9
Semester - IV

भारतीयता की अवधारणा और 'गाइड'

9.0 रूपरेखा

9.1 उद्देश्य
9.2 प्रस्तावना
9.3 भारतीय की अवधारणा और 'गाइड'
9.4 सारांश
9.5 अभ्यासार्थ प्रश्न
9.6 पठनीय पुस्तकें

9.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत पाठ के अध्ययनोपरान्त आप भारतीयता की अवधारण को समझ सकेंगे और 'गाइड' उपन्यास में कौन सी भारतीय मान्यताओं को अपनाया गया है इसकी जानकारी भी प्राप्त कर सकेंगे ।

9.2 प्रस्तावना :

भारतीयता से अभिप्राय है – "भारतीय होने की अवस्था, भाव या भान। भारत की संस्कृति मूल्यों, मान्यताओं आदि के प्रति निष्ठा।" दूसरे शब्दों में भारतीय संस्कृति परम्पराओं, रीति रिवाजों इत्यादि का पालन करना ही भारतीयता है। इसमें अपने पूर्वज़ों की परंपराओं व लोकाचार, भाव, खानपान, रहन–सहन, शादी–ब्याह परिवार, संस्कार, पूजापाठ, अपने–पराये की भावनाएं आदि इन सब का अनुकरण शामिल रहता है। विविधता के बीच से सबको जोड़ने वाले नये संस्कारों की खोज और निर्माण, दरिद्रता और कंगाली से सम्पन्नता की ओर जाना, साथ ही ऊँच नीच के भेदभाव को मिटाकर समता स्थापित करना इत्यादि इसके

मूल में रहती है। वस्तुतः परिवर्तन के लिए सतत संघर्ष ही वास्तविक भारतीयता है क्योंकि इसी से समाज में सहृदयता का विकास होता है।

9.3 भारतीयता की अवधारणा और 'गाइड'

'गाइड' दक्षिणी भारत के सांस्कृतिक आंचल" को फहराता एक ऐसा उपन्यास है जिसमें वर्णित सामाजिक मान्यताएं, परंपराए, रीति–रिवाज, तीज–त्यौहार, लोक–विश्वास, कलात्मक विशिष्टताएं, खान–पान, रहन–सहन, धार्मिक आस्थाएं इत्यादि भारतीयता का परचम लहराती हैं। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित भारतीयता का अध्ययन सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं, रीति रिवाजों, लोक विश्वासों, धार्मिक मान्यताओं एवं मानव भावनाओं के संदर्भ में किया जा रहा है :

सामाजिक मान्यताएं : सामाजिक शब्द समाज+इक प्रत्यय से बना है जिसमें समाज एक स्थान पर रहने वाले एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करने वाले लोगों के समूह का नाम है। यह एक ऐसा समूह है जिसमें सभी प्राणी एकत्र होकर रहते हैं, खाते–पीते, जीवन यापन की सुख सुविधाओं की उपलब्धि का प्रयास करते हैं और सामाजिक का अर्थ है समाज के लिए 'मान्यता' शब्द का शब्दिक अर्थ है मान्य होने का भाव, स्वीकृति का आदर्श। । अतः सामाजिक मान्यता से अभिप्राय समाज में वहन करने वाले ऐसे गुणों की स्वीकृति जो पीढ़ी दर पीढ़ी थोड़े–बहुत युगानुरूप बदलती हुई समाज में प्रचलित रहती हैं। सामाजिक मान्यता ही समाज का ढांचा होती है और उस समाज विशेष की संस्कृति कहलाती है।

प्रस्तुत उपन्यास में कुछ ऐसी मान्यताओं का उल्लेख हुआ है जो पूरे भारत में भी उसी रूप में मानी जाती हैं। भारतीय समाज में यह धारणाएं हैं कि यदि कोई बच्चा या बड़ा सही रास्ते पर न चले तो उसे किसी पीर पैगम्बर, गुरू, ऋषि–मुनि के आशीर्वाद की आवश्यकता है और उनका आशीर्वाद ही उसे सही दिशा दे सकता है। आलोच्य कृति में वेलान की बहन जब शादी करने से इंकार करती है तो वेलान राजू को पहुँचा हुआ संत मानकर उसे राजू के पास आशीर्वाद हेतु ले आता है और कहता है, "मैं अपनी बहन को ले आया हूँ" और उसने चौदह साल की एक लड़की को धकेलकर आगे कर दिया । फिर यह मान्यता भी है कि संत महात्मा का आशीर्वाद पाने हेतु कोई न कोई भेंट भी अवश्य ही समर्पित करनी चाहिए वेलान भी जब अपनी बहन को आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए लाता है तो वह स्वामी के लिए भेंट भी लाता है जैसे कि इस पंक्तियों से पता चलता है : ''राजू एक चबूतरे पर बैठ गया । वेलान ने उसके आगे केलों, खीरों, गन्ने के टुकड़ों, तले हुए काजूओं से भरी एक टोकरी और दूध से भरा एक ताम्बे का बर्तन रख दिया।" राजू ने पूछा, "यह किस लिए है ?" श्रीमान, अगर आप यह भेंट स्वीकाार कर लें तो हमें बहुत खुशी होगी।" यही नही इस समाज में फसल की कटाई पर और तमिल के नये वर्ष के आरंभ होने पर भी देवताओं ओर ऋषि–मुनि, साधुओं का भाग निकाला जाता है। इसी प्रथा की ओर संकेत करती उपन्यास की यह पंक्तियां उधृत हैं जैसे – जनवरी में फसल कटती थी जब उसके भक्त उसे गन्ना और गन्ने के रस में पकी चावल

की खीर लाकर भेंट करते थे और जब वे फल और मिठाइयाँ लाकर देते तो समझ जाता कि तमिल का नया वर्ष शुरू हो गया है।" इससे पता चलता है कि नये वर्ष का आरंभ फल और मिठाइयाँ चढ़ाकर किया जाता था। इस समाज की यह मान्यता भी है कि केवल नेक और महान आदमी ही समाज में परिवर्तन ला सकते हैं इसलिए सूखे की स्थिति हो जाने पर वे कहते हैं – अगर यही एक भी नेक आदमी होगा तो उसकी खातिर इन्द्र देवता ज़रूर बरसेंगे, इससे सारी दुनिया को लाभ होगा।" इन लोगों की यह मान्यता भी थी कि बच्चों के छोटे–मोटे रोग भी स्वामी जैसे लोग चुटकी में दूर कर सकते हैं। इसलिए माताएँ उसके पास उन बच्चों को लेकर आती थीं जिन्हें रात को नींद नहीं आती थी। वह उनका पेट टटोलकर एक जड़ी पीसकर खिलाने का आदेश देता हुए कहता, "अगर बच्चे को आराम न हो तो फिर मेरे पास लाना"। लोगों में यह आस्था पैदा हो गई थी कि वह जिस बच्चे के सर को अपने हाथ से सहला देता है, वह चंगा हो जाता है।

वर्ण व्यवस्था संबंधी भी इस क्षेत्र की मान्यताएं पूरे भारत में किसी न किसी रूप में पाई जाती हैं। समाज में पंड़ितों का विशेष आदर था वे लोग कई प्रकार की भविष्यवाणियाँ करते थे और लोगों की भी उनके प्रति विशेष आस्था थी इसलिए प्रत्येक अवसर पर वे उनसे विचार–विमर्श भी करते और उनकी भविष्यवाणियों पर विश्वास भी करते थे। क्योंकि दक्षिण भारत की नृत्य परंपरा की अपनी गरिमा है इसलिए वहां पर देवदासियों की प्रजातियाँ भी उस समाज का अंग हैं और लोग उन्हें निम्न वर्ग से मानते हैं और समाज में उन्हें वेश्या का दर्जा दिया जाता है जैसे कि निम्न पंक्तियों से स्पष्ट होता है – "मैं देवदासियों के एक परिवार में पैदा हुई थी, जिसने परम्परा से मन्दिरों में नृत्य करने के लिए अपने को उत्सर्ग कर दिया था । मेरी माँ, मेरी दादी और उनसे भी पहले उनकी माँ और दादी – सभी देवदासियाँ थी। जब मैं बच्ची थी, उस वक्त से ही गाँव के मन्दिर में नाचने लगी थी। तुम तो जानते हो हमारी जात को लोग किस नज़र से देखते हैं।" लेकिन लोग हमें वेश्या समझते हैं।" नाचने वालों के प्रति लोगों के किस तरह के भाव है इनका पता राजू की माँ के शब्दों से चलता है जैसे, "ओह नर्तकी ! हो सकता है, लेकिन नाचने वाली लड़कियों से कभी सरोकार न रखना। यह बड़ी खराब होती हैं। यहां तक कि राजू की मां उसे साफ–साफ शब्दों में कह देती है, "तुम अपने घर में एक नाचने वाली लड़की को नहीं रख सकते।" इस प्रकार जात–पात का बंधन न होते हुए भी वर्ग भेद इस समाज का अभिन्न अंग है।

इस समाज में भवन निर्माण बड़ा साधारण है एक कमरा और एक रसोई ही पूरे परिवार के लिए काफी थी। अधिकतर काम चबूतरे से लिया जाता था उपन्यास में साधारण समाज के भवनों का वर्णन इस प्रकार है, "हम सब तो एक ही कमरे में रहने के आदी थे और हमें इसमें कभी कोई बुराई नजर नहीं आई थी। इसमें ज़्यादा की ज़रूरत भी नहीं महसूस हुई थी। मर्द मेहमान आकर बाहर के चबूतरे पर बैठते थे। अन्दर का कमरा माँ और उनसे मिलने के लिए आने वाली स्त्रियों के लिए रहता था। रात को सोने के लिए हम लोग कमरे में जाते थे। अगर मौसम ज़्यादा गर्म होता तो हमलोग चबूतरे पर सोते। वह बड़ा कमरा

अन्दर जाने का रास्ता भी था बैठक, कपड़े बदलने और पढ़ने का कमरा भी था।" नहाने के लिए आंगन में खुली छत वाला स्नानगृह बना रहता था। प्रत्येक गांव में एक सांझा चबूतरा बना रहता था जहाँ पर पूरे गांव की राजनीति तय होती थी । निम्न पंक्तियों के द्वारा चबूतरे की सार्थकता स्वतः सिद्ध होती है – गाँव के बीचो बीच एक चबूतरे पर बैठकर लोग वर्षा के बारे मे बहस कर रहे थे। एक पुराने पीपल के पेड़ के गिर्द ईंटों का चबूतरा बना था। यह चबूतरा एक प्रकार से टाऊन हॉल का काम देता था। एक तरफ बैठकर मर्द स्थानीय समस्याओं पर सोच विचार करते थे, दूसरी तरफ सर पर टोकरियाँ ढोने वाली औरतें आराम करती थी, बच्चे एक दूसरे के पीछे भागते थे और गांव के कुत्ते सुस्ताया करते थे।

सारे समाज को एक दूसरे के साथ जोड़ने के लिए बैलगाड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। चाहे अब आधुनिकता के आगमन के साथ रेल सेवा के साथ यह क्षेत्र जुड़ गया था पर फिर भी सड़कों पर बसों के बजाए बैलगाड़ी अधिक चलती थी । भारत के इस दक्षिणी छोर का मुख्य व्यवसाय कृषि का था लोग अपने जीवन यापन के लिए मज़दूरी भी करते थे । लोगों द्वारा पैदा किया गया अन्न गांव से शहर की मंडियों में पहुँचाया जाता था। गेहूँ, चावल और नारियल की फसल भरपूर रहती थी । गांव के बच्चे स्कूल न जाकर मवेशी चराने का कार्य करते थे। दुकानदारी भी बड़े छोटी स्तर की होती थी । आजीविका हेतु गाइड का काम भी किया जाता क्योंकि बहुत से ऐसे दर्शनीय स्थल पूरे समस्त भारत के यात्रियों को आकर्षित करते जिनसे गाइड का धंधा भी अच्छा चल निकला था । आम लोग अच्छे स्कूलों में बच्चों को शिक्षा नहीं दिला सकते थे इसलिए कुछ पढ़े–लिखे वृद्ध घरों में ही बच्चों को शिक्षा देते थे जिन्हें 'चबूतरा' स्कूल कहा जाता था क्योंकि एक भ्रद व्यक्ति के घर के चबूतरे पर क्लासें लगती थी । लोग मेहनत से अपना परिवार पालते थे पर फिर भी भाग्यवादिता पर उनका पूरा विश्वास था । उपन्यासकार ने वेलान के माध्यम से इस बात पर प्रकाश डाला है जैसे वेलान ने अपना मस्तक छूकर कहा, "यहाँ जो लिखा है वही होगा। हम लोग उसे रोक भी कैसे सकते हैं।"

'अतिथि देवो भव' भारतीय समाज का एक शाश्वत नारा है जिसका पालन इस उपन्यास में भी हुआ है। इस समाज में लोग अतिथि की हर इच्छा तो पूरी करते ही थे इसके साथ ही उसकी हर सुविधा का ध्यान भी रखा जाता था। रोज़ी कथानायिका चाहे राजू के जीवन में इतना परिर्वतन लेकर आती है पर जब वह उसके घर आती है तो उसकी माँ उसके आतिथ्य में कोई कमी नहीं रखती जैसे कि उपन्यासकार ने लिखा है – "माँ रसोई में व्यस्त थी, लेकिन एक मेहमान का स्वागत करने की रस्म अदा करने के लिए किसी तरह बाहर निकल आई थीं। मेहमान तो मेहमान थी चाहे वह कोई 'रोज़ी' ही क्यों न हो।"

अतः सामाजिकता की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास भारत के हर क्षेत्र की सामाजिक मान्यताओं, विचारधाराओं और मूल्यों का प्रेषण करता है।

धार्मिक मान्यताएं :– धर्म का महत्व मानव संस्कृति में अद्वितीय है। धार्मिक विश्वास और श्रद्धा ही समूह में सुरक्षा और सहयोग की भावना को जन्म देते हैं। धार्मिक क्रियाओं में अतीन्द्रिय दैवी शक्ति के प्रभावों की अनुभूति तथा उनके प्रति विश्वास और मान्यताओं को किसी भी समय और समाज की धार्मिकता के रूप में जाना जाता है। धर्म मानव को श्रुति, स्मृति, सदाचार और संतोष का मार्ग दिखाने वाला भाव है। यह सन्मार्ग पर चलने का उपदेश देता है। संयम नियम का पालन इसका मूल तत्व है। धर्म संबंधी विश्वासों को अपनाते हुए जीवन यापन करना धार्मिक मान्यताओं के अंतर्गत आता है। बहुधर्मी होते हुए भी भारत में धर्म संबंधी कुछ ऐसे विश्वास हैं जो पूर्ण भारत को एक कर देते हैं जैसे ईश्वर की सर्वव्यापक सत्ता पर विश्वास, तीर्थ यात्रा, अवतारवाद के प्रति आस्था, स्वर्ग–नरक के प्रति चिन्तन आदि। आर. के. नारायण कृत 'गाइड' उपन्यास में यह धार्मिक मान्यताएँ पाठकों को प्रदेश विशेष का नहीं अपितु ईश्वर के प्रति समस्त मानव जाति के भावों से परिचित कराती हैं जैसे समस्त समाज में यह भाव हैं कि यदि अपनी कमाई का कुछ भाग अपने आराध्य के प्रति समर्पित कर दिया जाए तो कमाई में भी बरकत होगी और ईश्वर का आशीर्वाद भी मिलेगा। जैसे कि वेलान से भेंट लेने के पश्चात् राजू ने धार्मिक भाव से टोकरी में रखी भेंट मूर्ति के चरणों में रखकर कहा, "यह इस देवता की पहली भेंट है। देवता को पहले भोग लगाकर हम लोग बचा–खुचा खा लेंगे। जानते हो ईश्वर को भेंट चढ़ाने के बाद खाने की चीजे कम होने के बजाय कितनी बढ़ती हैं।" राजू इस विश्वास को दृढ़ करने हेतु वेलान को देवक नामक व्यक्ति की कथा सुनाता है जो प्रतिदिन भीख मांगा करता था और अपनी कमाई को खर्च करने के पहले देवता के चरणों में रख देता था।

प्रातः काल नहा धोकर ईश्वर के सम्मुख नतमस्तक होने का भाव तो हम सब में एक सा है अतः यह हम अपने बच्चों को भी सिखा देते हैं ताकि उनकी ईश्वर के प्रति आस्था बनी रहे। इसके विषय में राजू वेलान से कहता है, "मैं कुँए पर जाकर स्नान करता, माथे पर पवित्र भस्म मलता फिर दीवार पर टंगी देवताओं की तस्वीर के आगे कुछ देर हाथ जोड़कर ऊंचे स्वर में प्रार्थना के गीत गाता।

भारत में पीपल के पेड़ को धर्म की दृष्टि से बहुत महत्व दिया गया है फिर दक्षिण भारत में इस पवित्र पेड़ के नीचे धार्मिक मूर्तियाँ रखने का विधान भी है जिसके विषय में रचनाकार लिखता है, "एक पुराने पीपल के पेड़ के गिर्द ईंटों का चबूतरा बना था, जिसके नीचे पत्थर की मूर्तियां रखी थी । लोग अक्सर इन मूर्तियों को तेल लगाकर उनकी पूजा करते थे।" इसका अर्थ है कि मूर्ति – पूजा का प्रचलन इस समाज में भी था।

वहाँ के मंदिरों में दीवारों पर चित्रकला हुई रहती जिन पर रामायण, भागवत तथा शिव संबंधी कई दृश्य अंकित रहते और इसके साथ ही मंदिरों में भी इन देवों की मूर्तियाँ स्थापित की जाती थी । राजू गाइड का काम करते हुए इन देवों की मूर्तियों और चित्रों का परिचय यात्रियों को देते हुए कहता है, "अगर आप गौर से देखेंगे तो आपको मालूम होगा कि रामायण की सारी घटनाएँ दीवारों पर खुदी हुई हैं," आदि। मैंने

उन्हें खम्भे पर बनी पत्थर की प्राचीन मूर्ति दिखाई जिसमें शिव भगवान गंगा को अपनी जटाओं में लपेटे हुए थे।" इस समाज में हिन्दू धर्म के अंतर्गत भगवान राम, कृष्ण और शिव की भक्ति की परंपरा थी तो दूसरी ओर ईसाई धर्म भी लोग अपना रहे थे। लोगों में ऐसी धारणा भी विद्यमान थी कि ईसाई धर्म से सम्बन्धित स्कूल लोगों को ईसाई बनाने की फिराक में रहते हैं और हिन्दू धर्म का अपमान करते हैं इसलिए वे अपने बच्चे इन स्कूलों में पढ़ाने से कतराते थे और कहते थे," मैं अपने लड़के को वहाँ नहीं भेजूंगा लगता है वे लोग हमारे लड़कों को ईसाई बनाने की कोशिश करते हैं और सारा वक्त हमारे देवी देवताओं का अपमान करते हैं"। इस समाज में हिन्दू धर्म और ईसाई धर्म के लोग रहते थे और अपने–अपने विश्वास तथा धारणानुसार अपने पादरी एवं गुरू या स्वामी को सर्वशक्तिमान तथा पारिवारिक सुख–शान्ति का मसीहा समझते जैसे कि राजू के छिप जाने पर जब वह मंदिर में नहीं मिलता तो उसके भक्त उसके विषय में कहते हैं – "वे महान व्यक्ति हैं। कहीं भी जा सकते हैं। उन्हें हजारों काम हो सकते हैं। उनके सामने कुछ मिनट बैठने से ही हमारे परिवार में कितना परिर्वतन आ गया है।"

स्वामी के प्रति उस क्षेत्र के लोगों की आस्था का और दृढ़–विश्वास का पता तब चलता है जब वे उसे उपवास करने के लिए विवश कर देते हैं। उनकी मान्यता एवं विश्वास है – "हमारे स्वामी जी वैसे पहुँचे हुए आदमी हैं । वे अगर उपवास करेंगे तो बारिश ज़रूर होगी।" व्यक्ति के कृत्य ही उसे महान बनाते हैं इसलिए राजू भी उन लोगों के विश्वासनुसार सोचता है – "राजू घुटनों तक गहरे पानी में खड़ा होकर आसमान की तरफ ताकेगा। दो हफ्तों तक मंत्रों का जाप करेगा और इसी बीच व्रत रखेगा –" लोगों का यही ख्याल है कि फिर बारिश जरूर होगी।" उसे पता है कि वह वास्तव में कोई स्वामी नहीं है पर उनके इस विश्वास के सम्मुख उसे झुकना ही पड़ता है। इस प्रकार मूर्ति के साथ – साथ यह समाज संत महात्माओं को भी महत्व देता है।

मूर्ति पूजा का प्रचलन भी इस क्षेत्र के लोगों को भारत की धार्मिक आस्था से जोड़ता है। लोग मूर्ति पूजा करने के लिए उन्हें स्नान करवाते फिर तेल लगाकर उनकी पूजा करते जैसे–"एक पुराने पीपल के पेड़ के गिर्द ईंटों का चबूतरा बना था, जिसके नीचे पत्थर की मूर्तियाँ रखी थी। लोग अक्सर इन मूर्तियों को तेल लगाकर उनकी पूजा करते थे।" जिस मंदिर में आकर राजू रूका था वहाँ पर भी एक विशेष मूर्ति थी जिसकी पूजा ग्रामवासी करते थे। यह चार बॉहों वाले एक लम्बे देवता की मूर्ति थी जिसके एक हाथ में चक्र था और दूसरे हाथ में राजदण्ड था। मूर्ति का सिर बड़ें सुन्दर ढंग से तराशा गया था। मंदिरों में शिव–पार्वती, सीता–राम तथा कृष्ण लीला सम्बन्धी दृश्य भी अंकित किए गये थे जिनका ये लोग अधिक से अधिक ज्ञान रखते थे।

रीति–रिवाज : समाज में काम करने की परंपरागत परिपाटी को तत्कालीन समाज के रीति–रिवाज के अंतर्गत माना जाता है। रीति–रिवाज एक विशेष कार्य की विधि का रूप है इसलिए इस कार्य के पीछे

जाने–अनजाने, परोक्ष–प्रत्यक्ष कोई न कोई मूल मानवीय प्रयोजन रहता है। परंपरा से चले आने के कारण जनसाधारण की आस्था इनके साथ जुड़ी रहती है। वास्तव में रीति–रिवाज किसी कौम या जाति को परंपरागत रूप में मिले ऐसे प्रतीकात्मक नियम हैं जो जीवन प्रवाह को नियंत्रित करते हैं। अतः हर समाज में जन्म, विवाह तथा मृत्यु संबंधी कई रीति–रिवाज उपलब्ध होते हैं। गाइड उपन्यास में भी रीति–रिवाजों की एक अलौकिक छटा मिलती है। विवाह के संबंध में दक्षिणी भारत में यह प्रथा है कि भाई–बहन के बच्चों, चचेरे भाई–बहन के बच्चों का विवाह अधिक मान्य रहता है। इसलिए वेलान की बेटी का विवाह उसी की बहन के बेटे के साथ हुआ है। जैसे – "मेरी बेटी अपनी बहन के लड़के से ब्याही गई है। इसलिए कोई परेशानी वाली बात नहीं है।" दूसरी ओर वह अपनी छोटी बहन का विवाह अपने चेचेरे भाई के लड़के से तय करता है और राजू के पूछने पर उसे बताता है, "मेरे चचेरे भाई का बेटा बड़ा अच्छा लड़का है। शादी की तारीख भी पक्की हो गई थी।"

विवाह संस्कार एक मांगलिक कार्य है और पूरे भारत में इसे कल्याणकारी मानकर इसे सम्पन्न करने के लिए मुहूर्त निकलवाया जाता है वेलान भी इसके विषय में बताता है, ज्योतिषी से मैंने शादी का मुहूर्त भी निकलवा लिया है कि ये दिन बड़े शुभ हैं।" शादी के बाद देवी–देवता अथवा गुरू ऋषि–मुनियों का आशीर्वाद भी लिया जाता है। इसलिए वेलान अपनी बहन की शादी करवाने के बाद उसे स्वामी जी के आशीर्वाद हेतु मन्दिर में लेकर आता है जैसे कि इन पंक्तियों से पता चलता है – "देखते–देखते वेलान दूल्हा–दुल्हिन और रिश्तेदारों की भीड़ के साथ मन्दिर में आ गया।" वहाँ पर विवाह के अवसर पर कन्या को दहेज देने की भी प्रथा है वेलान भी अपनी बहन को दहेज के रूप में कपड़े–गहने आदि देता है वह स्वामी से कहता है, "हम लोगों ने यह शुभ समाचार बिरादरी को बता दिया है और जल्दी ही हमारे घर में शादी का आयोजन होगा। पैसा, कपड़ा, गहना सब तैयार है। कल सुबह मैं बाजे वालों को बुलाकर तय कर लूंगा।" अतः सारी बिरादरी को बुलाकर बाजे गाजे के साथ इस शुभ कार्य को सम्पन्न किया जाता है।

दक्षिण भारत के इस मंगल प्रदेश के समाज में लड़की के घर बार–बार जाना भी अच्छा नहीं माना जाता। इस पर प्रकाश डालते हुए वेलान कहता है, "मैं अक्सर अपनी बहन से मिलने जाता हूँ और इस बहाने अपनी बेटी से भी मिल लेता हूँ। कोई बुरा नहीं मानता।" "आखिर कोई बुरा भी क्यों मानेगा, जब तुम अपनी ही बेटी से मिलने जाते हो।"

"अपने दामाद के यहाँ बार–बार जाना अच्छा नहीं माना जाता", ग्रामीण अजनबी ने बताया। अतः इस प्रकार की प्रथा भारत के कई भागों में आज भी इस तरह चल रही है।

भारत में नई बहू के आने पर घर में कोई नई चीज़ लाने पर अथवा प्रदेश में किसी नई चीज़ के आने पर नारियल फौड़कर उसका स्वागत किया जाता है । रेल के आने पर किए जाने वाले कृत्य का वर्णन इस प्रकार है। "स्टेशन को झंडियों और बन्दनवारों से सजाया गया था। शहनाई और बैण्ड बाजे बज रहे

थे। रेल की पटरियों पर नारियल फोड़े जा रहे थे। इसी वक्त भक–भक करता हुआ एक इंजन आया, जिसके पीछे दो डिब्बे लगे थे।" इसी तरह त्यौहार अथवा उत्सव के अवसर पर भी ऐसे ही रीति–रिवाज़ देखने को मिलते हैं। विशेष अवसर पर मंदिर की सजावट का एक उदाहरण प्रस्तुत है – औरतों के जत्थे ने आकर दिन में ही मंदिर के फर्श धो–पोंछ दिए थे और उन पर आटे से विभिन्न पैटर्नों के सांतिये काढ़ दिए थे। उन्होंने हर जगह फूल और पत्तियों के बंदनवार टांग दिए थे।" इस प्रकार यह समाज अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है।

वस्त्राभूषण : वस्त्र व्यक्ति की सभ्यता, संस्कृति और मानव के स्तर को व्यक्त करने वाले होते हैं। शरीर को सजाने की दृष्टि से ही नहीं वरन् प्रकृति के अनुसार शरीर को ढकने के लिए वस्त्रों की विशेष महत्ता है। कंवारी लड़कियाँ घाघरा चोली और आभूषण पहनती जबकि विवाहिताओं में लंहगा चोली तथा सुनहरी गोटा लगी साड़ियां पहनने की प्रथा थी। पुरूष लोग, धोती और जिवा पहनते थे तथा विशेष अवसरों पर रेशमी 'जिब्बा' और जालीदार धोती पहनते थे। मर्दों में भी सोने की बालिया पहनने का प्रचलन था । इस समाज का पहनावा तथा आभूषण समस्त भारत का दर्शन प्रस्तुत करते हैं।

खान–पान :– जीवनचर्या को नियमित रूप से चलाने के लिए भोजन प्राणियों की प्रारम्भिक आवश्यकता हैं। किसी भी सभ्यता एवं समाज के रहन–सहन का प्रभाव खान–पान एवं पाकविधि पर यथेष्ट रूप से रहता है। दक्षिणी भारत में भोजन में चावल और नारियल से बने पदार्थ बड़े चाव से खाए जाते हैं। पेय पदार्थों में कॉफी बड़े चाव से पी जाती थी। 'गाइड' उपन्यास में खानपान संबंधी दिनचर्या का अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि प्रातः काल उठते ही यह लोग सुबह इडली और कॉफी से दिन का आरंभ करते हैं। चावल–रायता भी इन्हें प्रिय था जैसे कि एक उदाहरण से पता चलता है जब राजू अपने पिता को खाने के लिए बुलाने जाता तो वे कहते, "जाकर अपनी माँ से कह दो, वे मेरा इन्तजार न करें। कटोरे में मुट्ठी भर चावल और रायता रख दें । नींबू के अचार का एक ही टुकड़ा रखें।" यह लोग नीचे बैठकर ही भोजन करते और सोने के लिए चटाई का प्रयोग करते थे। काजू भी वहाँ भरपूर मात्रा में होते हैं इसलिए तले हुए काजूओं और मिठाई का प्रचलन भी विशेष था । चाय की अपेक्षा कॉफी अधिक मात्रा में लोग लेते थे। फलों मे केला अधिक चलता था गन्ने और खीरे का प्रयोग भी लोग खाने तथा एक दूसरे को उपहार देने हेतु करते । बच्चे दुकानदारों से पिपरमिंट, फल, पान तथा भुने हुए चने चाव से खरीदते थे, बर्तनों में पीतल तथा ताम्बे के बर्तन चलते थे। इस प्रकार इस क्षेत्र विशेष का खानपान विशेष होते हुए भी भारतीयता की झलक प्रस्तुत करता है।

लोकाचार एवं लोकविश्वास :– लोकाचार का अर्थ है लोक व्यवहार, जन समूह का आचार। कार्य करने की सामान्य विधियाँ लोकाचार कहलाती हैं । जबकि लोक–विश्वास परंपरागत रूप से स्वीकृत ऐसी धारणाएँ हैं जिन्हें मानव भावात्मक एकता के परिणाम स्वरूप अपने जीवन में अपनाता आया है। लोक–विश्वास अतीत की वस्तु न होकर जीवित वर्तमान की वस्तु है। इन्हें मनुष्य के विचारों और व्यवहारों पर सरलतापूर्वक

देखा जा सकता है। मनुष्य जीवन के समान इनका क्षेत्र भी व्यापक है। भारतीय संस्कृति में इनका दायरा बहुत विशाल है। पर सामान्यतः इनका विभाजन सामाजिक और धार्मिक दो रूपों में किया जा सकता है। सामाजिक लोक विश्वासों के अंतर्गत मानव और मानवीय क्रियाओं पृथ्वी एवं वनस्पति जगत्, टोना–टोटका, पशु–पक्षी तथा भूत–प्रेत सम्बन्धी लोक विश्वास आते हैं जबकि धार्मिक लोक विश्वासों से विभिन्न देवी–देवताओं तथा धार्मिक मान्यताओं का प्रसंग रहता हैं। प्रस्तुत उपन्यास चूंकि नायक के जीवन संघर्ष से जुड़ा है इसलिए इसमें सामाजिक लोक विश्वासों को इतना अवकाश नहीं मिला है। फिर भी जानवरों तथा भूत–प्रेत संबंधी कुछ विश्वास इसमें प्रसंगवश स्थान पा गए हैं। जैसे भारत के किसी भी कोने में चले जाए गाय दूध न दें तो लोगों में यह विश्वास घर कर लेता है कि गाय या भैंस को नज़र लग गई है। इसलिए राजू का पिता जब भी गाय के दूध की बाल्टी लेकर लौटते तो हमेशा कहते, "आज इस भैंस को कुछ हो गया है आधा भी दूध नहीं दिया।" तब उसकी पत्नी इस पर कहती, "हाँ हाँ मुझे मालूम है, इसका दिमाग खराब हो गया है। मुझे मालूम है क्या करने से दूध उतारेगी।" इन शब्दों के माध्यम से वह दूध हेतु नज़र उतारने का संकेत अवश्य देती है।

इसी प्रकार दक्षिणी भारत के इस समाज में चुड़ैल संबंधी अंधविश्वास भी मान्य हैं। ऐसी स्त्री जिसकी दृष्टि से हानि का भय रहता है चुड़ैल, भूतनी अथवा डाकिनी कहलाती है। प्रस्तुत उपन्यास में वेलान की बहन जब विवाह के लिए हामी नहीं भरती और वह अपने साज श्रृंगार की ओर भी ध्यान नहीं देती तो वेलान शंका प्रकट करते हुए कहता है, "वह दिन भर कोठरी में बैठी कुढ़ती रहती है। समझ में नहीं आता क्या करूँ। हो सकता है उस पर कोई चुड़ैल सवार हो गई हो। बताइए उसका क्या इलाज करूँ। इसी प्रकार जो बच्चे दूध नहीं पीते या रात भर सोते नहीं हैं उनके प्रति भी इसी प्रकार की शंकाए तथा नज़र लगने संबंधी शंकाए लोगों को व्यथित करती हैं।

भूत–प्रेत संबंधी लोक विश्वास भी पूरे भारत में प्रचलित हैं। ग्रामीण भाषा में भूत का अर्थ उस निकृष्ट अथवा दुष्ट आत्मा से समझा जाता है जो मनुष्यों को दुःख पहुँचाता है। ऐसा भी लोक विश्वास है कि अतृप्त इच्छाओं को लेकर मरने वाले प्राणी, जिसका मृत्यु कर्म उचित रूप से न किया जाए भूत बनता है। इसी प्रकार प्रेत वह कल्पित शरीर है जो मृत्यु के बाद प्राप्त होता है। यह भूत–प्रेत चाहे साक्षात् रूप में कोई अस्तित्व नहीं रखते पर इनका नाम मात्र ही व्यक्ति को भयभीत कर डालता है अतः बच्चों पर इनका विशेष प्रभाव रहता है। 'गाइड' उपन्यास में भी जब राजू रात के समय अपने पिता को खाने के लिए बुलाने जाता तो पिता अपनी मंडली को छोड़कर नहीं आते थे। घर तथा दुकान के बीच पड़ने वाली दस गज की दूरी तय करते भय से राजू का शरीर ठण्डे पसीने से तर हो जाता क्योंकि उसे लगता कि जंगली जानवर और भूत–प्रेत अंधेरे से निकलकर मुझ पर टूट पड़ेगे।" इस प्रकार यह लोकाचार और लोकविश्वास समाज की परंपरावादी सोच का चित्र तो प्रस्तुत करते ही हैं इसके साथ ही लोगों के अल्प ज्ञान का संकेत भी देते हैं पर आधुनिकतावादी सोच के साथ इनमें आने वाले परिर्वतनों को भी लक्षित करते हैं।

मानवीय भावनाएँ :– मानव इस सृष्टि की अनुपम रचना है और मानव हृदय के सुख–दुःख, मानवीय सम्बन्धों की गहनता, संवेगों का सहसम्बन्ध व्यक्ति के अतिरिक्त कोई नहीं जान सकता है। माँ सृष्टि की अद्वितीय कला है। माँ बिना कहे अपनी संतान के मनोभाव को जान लेती है वह उसके सुखद भविष्य की कामना के साथ अपने अथक प्रयासों से संतान के जीवन में खुशी लेकर आती है। प्रस्तुत उपन्यास में राज जब रोज़ी के प्रेम में पड़ जाता है तो माँ उसे इस प्रेम के भंवर से बाहर निकालने का अथक प्रयास करती है। जब राजू उसकी बात नहीं मानता तो वह अपने भाई को बुला लेती है फिर भी जब सफल नहीं हो पाती तो घर छोड़कर भाई के घर चल देती है। वह यह सोचती है कि शायद उसके रूठ जाने पर उसका पुत्र सही राह पर आ जाएगा। राजू एक पुत्र होने के नाते इन सब बातों को समझता है, माँ के प्रति चिंतित भी रहता है पर रोज़ी के प्रेम में पड़कर अनदेखी अवश्य कर देता है । राजू एक भावुक हृदय का स्वामी है इसलिए जैसे–तैसे वह रोज़ी की दमित इच्छाओं को पूरा कर उसे खुशी देना चाहता है और इस बात में वह सफल भी हो जाता है। रोज़ी उर्फ रागिनी की ओर देखा जाए तो एक ओर तो वह अपने पति को सम्मान देती है उसकी इच्छा विरूद्ध न जाकर अपनी इच्छाओं को दबा देती है पर मार्को जब उसकी परवाह नहीं करता तो वह भी उससे तिरस्कृत होकर अपना नया जीवन लक्ष्य अपना लेती है। राजू के पकड़े जाने पर वह पूरी ताकत उसे छुड़ाने में लगा देती है। मानवीय भावनाओं का पता तब भी चलता है जब राजू स्वामी के रूप में समस्त मानव जाति के सुखद भविष्य की कामना करता है। वह बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करता है। अपने भक्तों की इच्छा पूरी करने हेतु उपवास कर अपने जीवन को ताक पर लगा देता है। इसके अतिरिक्त इस उपन्यास के अन्य पात्र वेलान तथा दूसरे लोग भी स्वामी की पूरी देखभाल करते हैं उसके दिखाए गए मार्ग पर चलकर जीवन–यापन करते हैं। अतः मानवीय संवेदनाओं की दृष्टि से 'गाइड' उपन्यास मानव मनोविज्ञान के नये धरातलों को व्यक्त करता है।

9.4 सारांश :

अतः भारतीयता की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास में जिन सामाजिक, धार्मिक मान्यताओं का वर्णन हुआ है। वे पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस क्षेत्र में मनाये जाने वाले रीति–रिवाजों तथा परंपराओं का प्रचलन भारत के किसी भी क्षेत्र में पाया जाता हैं। दक्षिणी भारत के लोक विश्वास और लोकाचार भी किसी न किसी रूप में भारत के किसी भी कोने में मिल जाते हैं। अतः विविधता के बीच सबको जोड़ने वाले यह उपन्यास अपने आप में अन्यतम हैं।

9.5 अभ्यासार्थ प्रश्न :

प्र1. भारतीयता के परिप्रेक्ष्य में 'गाइड' उपन्यास का मूल्यांकन करें ।

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

प्र2. भारतीयता की अवधारणा स्पष्ट करें ।

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

————————————————————————————————

9.6 पठनीय पुस्तकें :

1. गाइड – आर. के. नारायण
2. भारतीय उपन्यास और आधुनिकता – वैभव सिंह

————::::—————

M.A Hindi | **UNIT - III** | **Lesson No. 10**
Course Code : Hin- 403 | | **Semester - IV**

'गाइड' उपन्यास का वस्तु–विन्यास

10.0 रूपरेखा

10.1 उद्देश्य
10.2 प्रस्तावना
10.3 'गाइड' उपन्यास का वस्तु–विन्यास
  10.3.1 कथावस्तु
  10.3.2 पात्र चरित्र–चित्रण
  10.3.3 परिवेश एवं वातावरण
  10.3.4 उद्देश्य
10.4 सारांश
10.5 अभ्यासार्थ प्रश्न
10.6 पठनीय पुस्तकें

10.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत पाठ के अध्ययनोपरान्त आप 'गाइड' उपन्यास के वस्तु–विन्यास को समझ सकेंगे । एक रचना में कथावस्तु, पात्र, वातावरण और उद्देश्य की क्या भूमिका रहती है, इसकी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

10.2 प्रस्तावना :

वस्तु विन्यास दो स्वतंत्र शब्दों का सुमेल है जिसमें वस्तु का अर्थ है – विचार अथवा आलोचना का विषय, उपन्यास, कहानी, नाटक आदि का कथानक, कथावस्तु । जबकि विन्यास का अर्थ है – किसी

कृति में विचारों, भावों या बिम्बों के संयोजन का काम जिससे कलात्मक सौंदर्य आता है और जिससे विचार रचना का रूप धारण करते हैं। अतः वस्तु, विन्यास का अर्थ है – उस सारी कहानी का संयोजन करना जो उपन्यास के मूल आधार या ढाँचे में होती है। अरस्तु ने वस्तु विन्यास के विषय में कहा है कि उसमें कार्य व्यापार की एकता होनी चाहिए, अपने आप में परिपूर्ण होना चाहिए और उसका आरंभ, मध्य और अंत होना चाहिए। उपन्यास के वस्तु विन्यास में उसकी कथा, पाठ, परिवेश और उद्देश्य उसके महत्वपूर्ण तत्व हैं क्योंकि किसी न किसी उद्देश्य को सम्मुख रखकर पात्रों और परिवेश के माध्यम से ही रचनाकार उपन्यास की कथा का संयोजन करता है। उपन्यास का वस्तु–विन्यास ही पाठक को अपनी ओर आकर्षित करता है। इसी के माध्यम से पाठक रचना के मर्म तक पहुँचने में सफल होता है।

10.3 'गाइड' उपन्यास का वस्तु–विन्यास

'गाइड' आर. के. नारायण कृत एक ऐसी सफलतम कृति है जिसमें उपन्यासकार ने एक ऐसे व्यक्ति के जीवन संघर्ष का वर्णन किया है जो मानवता की सेवा में अपने आपको समर्पित कर देता है चाहे गाइड के रूप में अथवा स्वामी के रूप में या कैदी के रूप में। इस उपन्यास के वस्तु विन्यास को स्पष्ट करने के लिए इसकी कथावस्तु, चरित्र, परिवेश और उद्देश्य पर विचार करना अपेक्षित है। इसी संदर्भ में इन सब पर भिन्न–भिन्न विचार किया जा रहा है।

10.3.1 कथावस्तु :

कथावस्तु उस कहानी को कहा जाता है जो उपन्यास के मूल में रहती है। 'गाइड' उन्यास की कथा के मूल में राजू नामक युवक के जीवन का संघर्ष है। उसका जन्म दक्षिणी भारत के मलगुड़ी एक ऐसे क्षेत्र के परिवार में होता है यहाँ कर्म को महत्त्व दिया जाता है। उसके पिता की छोटी सी दुकान थी जिसे झोपड़ी वाली दुकान के नाम से जाना जाता था। उसका बचपन वहीं पर इमली के पेड़ के नीचे खेलते हुए बीतने लगा। समवयस्क बच्चों के साथ लड़ाई–झगड़े एवं गाली–गलौच करते हुए सुनकर उसके पिता उसे बूढ़े मास्टर के स्कूल में पढ़ने के लिए भर्ती करवा देते हैं। वे उसे क्रिश्चियन स्कूल में इसलिए नहीं भेजते क्योंकि उनके मन में यह विचार था कि वे लोग बच्चे को क्रिश्चियन धर्म सिखाते हैं। बूढ़े मास्टर के स्कूल से वह शहर के बोर्ड स्कूल के बोर्ड तक की पढ़ाई पूरी करता है। उन्हीं दिनों मद्रास से मलगुड़ी तक रेलवे लाइन बनती है उसके घर के पास ही रेलवे स्टेशन बनता है फलतः उसके पिता को रेलवे स्टेशन पर दुकान खोलने की आज्ञा रेलवे अधिकारियों से मिल जाती है। पिता के साथ राजू जब दुकान पर आ जाता है तो उसके पिता उसे रेलवे वाली दुकान पर छोड़ स्वयं झोपड़ी वाली दुकान पर चले जाते हैं। अचानक पिता की मृत्यु के बाद वह झोपड़ी वाली दुकान बंद करके केवल स्टेशन वाली दुकान पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। दुकान करते हुए खाली समय में कई किताबें पढ़ता है जिनसे मन में नेक विचार पैदा होते और जिनमें आकर्षित करने वाला जीवन दर्शन रहता। धीरे–धीरे रेल में आने वाले यात्री जब राजू की दुकान पर आकर उससे पूछते "फलां जगह यहाँ से कितनी दूर है ?" या "फलां जगह पहुँचने के लिए किधर से होकर

जाना पड़ता है ?" .... क्या यहाँ बहुत से ऐतिहासिक स्थान है ?" मैंने सुना है कि तुम्हारी सरयु नदी यहीं किसी पहाड़ी में से निकलती है जो बड़ी खूबसूरत जगह है।" इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए और अपनी सहायता करने वाली प्रवृत्ति के कारण वह दुकानदार से गाइड बन जाता है। इस काम में वह इतना प्रसिद्ध हो जाता है कि लोग उसे 'रेलवे राजू' के नाम से पुकारने लगते हैं। आरंभ में वह गाइड के काम को अपना शौक समझता था कुछ ही महीनों में जब वह अनुभवी गाइड बन जाता है तो वह अपने को पार्ट टाईम दुकानदार और फुल टाइम टूरिस्ट गाइड समझने लगता है। वह यात्रियों को उनकी रूचि अनुसार मलगुडी के बहुत से ऐतिहासिक, प्राकृतिक सौंदर्य वाले तथा आधुनिक विकास से जुड़े दर्शनीय स्थान दिखाता । यात्रियों की इच्छानुरूप वह सारे दर्शनीय स्थल घंटों में भी दिखा सकता था और दिनों में भी। इसके साथ ही वह यात्रियों के अन्य शौक भी पूरा करता था जैसे यदि कोई हाथी देखना चाहता तो हाथी दिखाता, अगर कोई शेर देखना चाहता या उसका शिकार करना चाहता तो उसकी व्यवस्था भी करता और अगर कोई नागराज को फन फैलाये देखना चाहता तो उसका इन्तज़ाम भी करता। इसी प्रकार वह यात्रियों की मनः स्थिति को समझकर ही उन्हें गाइड करता । इसलिए वह कहता था "टूरिस्ट गाइड बनकर मैंने एक बात यह भी सीखी कि भोजन की तरह भ्रमण के मामले में भी हर आदमी की अपनी अलग रूचि होती है। कुछ लोग जल प्रपात देखना चाहते हैं, कुछ को खण्डहरों में दिलचस्पी होती है। कुछ लोग किसी देवता को पूजना चाहते हैं, तो कुछ लोग हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्लांट में दिलचस्पी रखते हैं। कुछ लोगों को मेम्पी शिखर पर बने शीशे से ढके बंगले जैसी जगह पसन्द आती है जहाँ से वे सौ मील दूर के क्षितिज को और शिखर के पास घूमते जंगली जानवरों को देख सकते हैं।" – जिन टूरिस्टो को राजू गाइड एक बार गाइड कर देता था वे यात्री आपस में एक – दूसरे से उसकी सिफारिश करते हुए एक बार जरूर कहते थे, "अगर राजू तुम्हारा गाइड हुआ तो तुम सब कुछ जान जाओगे। वह न सिर्फ तुमको हर दर्शनीय स्थान दिखा देगा, बल्कि और सब बातों में भी तुम्हारी मदद करेगा।" अतः बम्बई, मद्रास, लखनऊ और न जाने भारत के किन–किन हिस्सों में लोग उसके नाम से परिचित हो जाते हैं। राजू भी अपने ग्राहकों को उसी प्रकार भाँप लेता जैसे कोई सयाना ज़मीन देखकर बता देता है वहाँ कुँआ खोदने पर पानी निकलेगा या नहीं। टूरिस्ट गाइड का काम करते ही एक दिन राजू को मार्को नाम का यात्री मिलता है उसका लिबास ऐसे आदमी जैसा था जो फौरन किसी सुदूर अभियान पर जा रहा हो। जिस क्षण राजू उसे मिलता है उसे ऐसा लगता है कि जिन्दगी भर के लिए उसे ग्राहक मिल गया है क्योंकि एक गाइड, आखिरकार, जिन्दगी – भर ऐसे आदमी के सम्पर्क में आने की ही तलाश में रहता है जो हमेशा एक स्वामी पर्यटक के लिबास में रहना पसंद करता हो। उसके आने के कुछ दिनों के बाद उसकी पत्नी रोज़ी मलगुड़ी को देखने की इच्छा से अपने पति मार्को के पास आ जाती है। वह आते ही राजू से प्रश्न करती है, "क्या तुम मुझे ऐसा नाग दिखा सकते हो जो बांसुरी के स्वरों पर अपना फन फैलाकर नाच सके ?" राजू उसकी इस इच्छा को पूरी करते समय इस बात से परिचित हो जाता है कि वह एक अच्छी नृत्यांगना है पर अपने पति की इच्छा का मान करते हुए वह नृत्य को भुलाने का प्रयास कर रही है जबकि उसके पति को उसकी कोई फिक्र नहीं है। वह स्वयं गुफा चित्रों एवं नक्काशी का अध्ययन करने वहाँ पर आया था और सारा–सारा दिन गुफाओं में ही पड़ा रहता

था, रोज़ी होटल में रहते हुए सारा दिन उसकी प्रतीक्षा करती और इसी समय राजू से सहानुभूति प्राप्त कर वह उसके करीब आ जाती है । वह उसकी मनःस्थिति को भांपकर उसे नृत्य के अवसर प्रदान करता है क्योंकि देवदासियों के परिवार में पैदा होने के कारण नृत्य उसकी रग–रग में बसा था। नाच के जिक्र से उसकी आँखों में एक नये उल्लास की चमक आ गई और राजू उसके साथ बैठकर उसके दिवास्वप्नों में सहायता देने लगा। रोज़ी राजू के मार्गदर्शन में रोज नृत्य का अभ्यास करती, किताबें पढ़ती तथा सारा दिन नृत्य और उसके प्रेम में डूबी रहती । इन दिनों उसने अपने पति की ओर ज़्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया था क्योंकि वो चाहती थी कि मार्को उसे नाचने की आज्ञा दे दे पर मार्को को जब राजू और उसके संबंध का पता चलता है तो वह एक दिन उसे वहीं मलगुड़ी में छोड़कर उसकी तरफ अनासक्त होकर वहाँ से चला जाता है। मार्को द्वारा परित्यक्त होने पर वह राजू के पास चली जाती है और राजू की माँ के न चाहने पर भी राजू उसे नृत्य जगत् की सम्राज्ञी बना देता है जिससे नलिनी का नाम सार्वजनिक सम्पत्ति बन गया क्योंकि उसके मशहूर होने की वजह उसकी प्रतिभा थी और जनता के लिए उसकी प्रतिभा को स्वीकार करना भी आवश्यक हो गया। अब राजू दिन रात रोज़ी उर्फ नलिनी (नृत्य जगत् का नाम) के नाच प्रोग्राम तय करता । वह स्वयं बताता है कि उसके पास एक नक्शा और कैलेण्डर रहता था। मैं पहले से ही सारा प्रोग्राम तय रखता था । बाहर से आने वाले निमन्त्रणों को पढ़कर उन लोगों को तारीखें बदलने का अनुरोध करता, ताकि एक यात्रा में बहुत सी जगहों पर नलिनी के प्रोग्राम हो सकें। मेरे पास तीन महीनें पहले के प्रोग्राम बुक रहते थे।" इस प्रकार इन प्रोग्रामों में आने वाली अपार धनराशि को वह धीरे–धीरे शराब और फलैट जूए में लुटा देता है। अंततः मशीनी बनी रोज़ी का भी नृत्य से मोह भंग होने लगता है और वह उससे शिकायत करती हुई कहती कि "मुझे यह सर्कस की जिंदगी अच्छी नहीं लगती। मैंने तो और ही सपने देखे थे।" इसी बीच मार्को की पुस्तक 'दक्षिणी भारत का सांस्कृतिक इतिहास' प्रकाशित होकर रोज़ी उर्फ नलिनी के पास आती है जिस पर सहायता के लिए राजू का भी आभार व्यक्त किया गया था। राजू उसे नलिनी से बचाकर रखता है पर 'इलस्ट्रेटिड वीकल ऑफ बॉम्बे' में मार्को की तस्वीर और पुस्तक का रिव्यू पढ़कर वह उस पुस्तक को पढ़ने के लिए व्यग्र हो उठी। पर जब बाद में उसे पता चला कि वो पुस्तक राजू ने कहीं छिपाकर रख दी है वह काफी हताश होती है। तत्पश्चात् मार्को के वकील की ओर से एक पत्र आता है जिसमें रोज़ी के हस्ताक्षर बैंक में रखे गये गहनों को पाने के लिए अपेक्षित थे। उस पत्र में कहा गया था कि बैंक से गहने निकलवा कर बीमा करवा कर नलिनी को भेज दिए जाएंगे। राजू वह पत्र पढ़कर स्वयं ही रोज़ी की ओर से बैंक के फार्म पर हस्ताक्षर कर देता है। जाली हस्ताक्षरों के संदर्भ में मार्को उस पर केस कर देता है और राजू सलाखों के पीछे आ जाता है अपने इस जुर्म के लिए राजू को दो साल की सजा होती है। नलिनी एडवांस में तय किए गये सारे प्रोग्राम करके मलगुड़ी में रहने वाले लोगों से विदा लेकर मद्रास चली जाती है।

दो साल के बाद जेल से छूटने पर राजू घर न जाकर मंगला प्रदेश की ओर चला जाता है और वहां पर नदी के किनारे एक प्राचीन मंदिर में रहना शुरू कर देता है। वेलान (मंगल प्रदेश का एक ग्रामीण) उसे कोई महात्मा जानकर उसे 'स्वामी' के रूप में प्रसिद्ध कर देता है। मंगला गाँव के लोग उसके दर्शनों

के लिए आते हैं। उन लोगों द्वारा लाई गई भेंटों से राजू अपने जीवन की गाड़ी आगे खींचने लगता है। अन्ततः अपनी नई पहचान स्वामी को स्थिर करने के लिए वह दाढ़ी रख लेता है और केश बढ़ा लेता है। दूसरों की सहायता करने वाली प्रवृत्ति होने के कारण वह गांव के बच्चों के लिए मंदिर में ही पढ़ने हेतु स्कूल की व्यवस्था करता है । ग्रामवासी अपनी समस्याओं से निजात पाने हेतु स्वामी (राजू) के पास आने लगते हैं। उपन्यासकार के अनुसार, "धीरे–धीरे उसके भक्तों की संख्या बढ़ती जाती है। उसके जीवन की व्यक्तिगत सीमाएँ बेमानी हो गई थीं और उसकी सभाओं में इतने लोग जमा होते थे कि मंदिर के बरामदों और नदी के किनारे लोग जमा होते थे कि मंदिर के बरामदों और नदी के किनारे तक उन्हें बैठने की जगह न मिलती थी । वेलान और कुछ अन्य लोगों को छोड़कर राजू को अपने असंख्य भक्तों के चेहरे तक याद नहीं थे और न वह जानने की परवाह ही करता था कि वह किससे बात कर रहा है। अब वह दुनिया का बन गया था उसका प्रभाव असीम था।" वह लोगों की हर सम्भव सहायता करता था और उसके भक्तों को भी पूरी आस्था थी इसलिए वह दिन रात उनसे घिरा रहता था। कुछ वर्षों के पश्चात मंगल प्रदेश में सूखा पड़ता है । जिससे जल अभाव के कारण जानवर भी मरना शुरू हो गये। जल समस्या के कारण ग्रामीणों में झड़प होती है वेलान के भाई द्वारा राजू यह संदेश भेजता है कि जब तक लड़ाई – झगड़ा छोड़कर वे नेक नहीं बनते "मैं भूखा रहूँगा।" पर राजू की इस घोषणा का वेलान के भाई द्वारा सही सम्प्रेषण नहीं हो पाता जिसके कारण मंगलवासी यह समझ लेते हैं कि जब तक बारिश नहीं आती तब तक स्वामी जी अन्न – जल ग्रहण नहीं करेंगे। वे ग्रामीण आपस का झगड़ा भूलकर स्वामी की चिंता करते हैं वे कहते हैं, "इस मंगल प्रदेश का सौभाग्य है कि हमारे बीच स्वामी जी जैसा महान व्यक्ति मौजूद है। वह महात्मा जैसा आदमी है। हमारे स्वामी जी वैसे ही पहुँचे हुए आदमी हैं। वे अगर उपवास करेंगे तो बारिश जरूर होगी। हम लोगों पर अपने अगाध प्रेम के कारण ही उन्होंने इतनी यन्त्रणा झेलने का फैसला किया है। इससे उत्साह की लहर उमड़ पड़ी। ग्रामवासी मंदिर में आकर स्वामी की देखरेख में लग जाते हैं। पर राजू को जब सारी स्थिति स्पष्ट होती है। वह वेलान को अकेले बुलाकार अपने विगत जीवन का पूरा चित्र उसके सामने रखकर कहता है, "मैं संत नहीं हूँ। मैं भी औरों की तरह एक साधारण व्यक्ति हूँ। पर राजू के जीवन की पूरी कहानी सुनने पर भी कहता है, "स्वामी जी, पता नहीं, क्यों आपने मुझ तुच्छ दास को इतनी लम्बी कहानी सुनाई।" और वह यह कहकर स्वामी को आश्वस्त कर देता है कि उनका रहस्य उसके सीने में बन्द रहेगा। इस प्रकार न चाहते हुए भी वह विवश हो जाता है। उसी समय अखबार का एक संवाददाता सूखे की परिस्थितियों का जायजा लेने के लिए गांव में आया था तो उसे वहाँ स्वामी जी के उपवास का पता चला तो उसने उनके उपवास का समाचार हिन्दुस्तान अखबार' में 'सूखा दूर करने के लिए सन्यासी की तपस्या' शीर्षक से छपवा दिया। जिससे वह एकाएक प्रसिद्ध हो गया । आरंभ में न चाहने पर भी अंततः चौथे दिन वह उपवास करने का संकल्प कर लेता है। पत्रकार की कलम के चमत्कार से दूर–दूर से लोग वहाँ एकत्र होने लगे। स्पेशल रेलगाड़ी चलाई गई। मंगला में भीड़ इकठ्ठी हो गई। दुकानें खुल गई। इतनी भीड़ हो गई कि नियंत्रण करने के लिए पुलिस को तैनात करना पड़ा। व्रत के दसवें दिन एक अमेरिकन यात्री भी आता है वह स्वामी जी पर फिल्म बनाता है। सरकार ने स्वामी जी के स्वास्थ्य के लिए दो डॉक्टर

नियुक्त कर दिए जिन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि स्वामी जी का ब्लड प्रेशर बढ़ गया है। बदन में पेशाब का जहर पैदा होने से इसका असर गुर्दे पर पड़ रहा है। इन्हें सेलाइन और ग्लूकोज़ देने का प्रयास किया जा रहा है पर वह लगातार इंकार कर रहे हैं। उपवास के अंतिम दिन राजू वेलान का सहारा लेकर किसी प्रकार नदी के पानी में खड़ा होकर प्रार्थना करता है और वेलान को यह कहकर "वेलान, पहाड़ियों पर वर्षा हो रही है। मैं वर्षा को अपने पांवो और टांगों पर आते महसूस कर रहा हूँ .... और बेहोश हो जाता है।

इस प्रकार उपन्यासकार ने पूर्वदीप्ति, वर्णनात्मक तथा कथात्मक शैली में पूरी कथा को सरल एवं प्रभावशाली भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि पाठक के सम्मुख पूरी कथा एक चलचित्र की तरह चलती है। पाठक न केवल राजू तथा रोजी के जीवन संघर्ष को ही जान पाता है बल्कि वह उन सब परिस्थितियों से भी परिचित होता है। जो राजू को ऐसा करने के लिए विवश करती हैं।

10.3.2 पात्र चरित्र – चित्रण

उपन्यास की कथावस्तु कैसी भी हो वह किसी न किसी पात्र पर आधारित रहती है। पात्रों में सजीवता, स्वाभाविकता की अभिव्यक्ति रचना के मूलभाव तथा घटना के अनुकूल रहनी चाहिए । डॉ॰ लक्ष्मी नारायण लाल पात्रों की सृष्टि के विषय में कहते हैं, "पात्र अतीत, वर्तमान, भविष्य तथा स्वेदश–विदेश जहां के भी हों, उनकी सृष्टि में किसी प्रकार का संदेह न हो"। उपन्यास की कथावस्तु जिन पर आधारित होती है वही उसके पात्र कहलाते हैं। वस्तु विन्यास में उन पात्रों को जैसे रखा गया है। वह उनका चरित्र चित्रण है। रचनाकार को रचना के उद्देश्य तक पहुँचाने वाले साधन पात्र ही होते हैं। 'गाइड' उपन्यास के मुख्य पात्रों में राजू तथा रोज़ी आते हैं जबकि वेलान, गफ्फूर, मार्को तथा राजू की माँ गोण पात्रों में स्थान पाते हैं। पात्रों का चरित्र – चित्रण निम्नलिखित है।

राजू का चरित्र चित्रण

राजू आर. के. नारायण कृत 'गाइड' एक बहुचर्चित उपन्यास का नायक है। पहले 'टूरिस्ट गाइड' और फिर 'स्वामी' के रूप में कृति के आरंभ से लेकर अंत तक अपने अभिन्न व्यक्तित्व के कारण पाठकों को प्रभावित करता है। राजू का जन्म मलगुड़ी में एक साधारण परिवार में हुआ था। उसके पिता एक छोटे से दुकानदार थे। स्वतंत्रता पश्चात् रेलागमन के कारण जब मलगुडी में रेलवे स्टेशन बन जाता है तो उसके पिता को स्टेशन पर दुकान चलाने की आज्ञा रेलवे अधिकारियों से मिल जाती है। उसके पिता राजू को उस दुकान पर बिठाते हैं और स्वयं "झोपड़ वाली" दुकान संभालते हैं। पिता की अचानक मृत्यु के पश्चात् राजू इस कार्य को अच्छी तरह संभाल लेता है। घुमक्कड प्रवृत्ति का होने के कारण वह मलगुडी देश में घूमने आने वाले यात्रियों के लिए 'टूरिस्ट गाइड' का काम करता है और पूरे मलगुडी क्षेत्र में 'राजू गाइड' के नाम से प्रसिद्ध हो जाता है। गाइड का कार्य करते ही वह गुफा–चित्रों के अध्येता मार्कों तथा उसकी पत्नी 'रोज़ी' से मिलता है। मार्को की रोज़ी (अपनी पत्नी) के प्रति अनासक्ति राजू को उसकी ओर आसक्त करती है और वह रोज़ी से प्रेम करने लगता है। प्रेम में पड़कर ही उसका जीवन कई दिशाओं में बढ़ने लगता है और

'टूरिस्ट गाइड' के स्थान पर वह 'स्वामी' के रूप में पहले मंगला प्रदेश और फिर दक्षिणी भारत व फिर पूर्ण भारत में अपने ज्ञान के कारण प्रसिद्ध हो जाता है। गाइड से स्वामी की यात्रा में उसके व्यक्तित्व की कई विशेषताएँ पाठकों को प्रभावित करती हैं जिनका वर्णन निम्नलिखित है :

1) **व्यवसाय के प्रति समर्पित :** राजू एक बहुपक्षीय व्यक्तित्व का स्वामी है इसलिए अपनी आजीविका से जुड़े कार्य की ओर न केवल वह विशेष ध्यान ही देता है अपितु व्यवसाय संबंधी छोटी से छोटी जानकारी भी रखता है । पहले वह दुकानदार था बाद में गाइड बन जाता है। इसके विषय में वह स्वयं कहता है, "पहले मैं दुकानदारी को अपना पेशा और गाइड के काम को अपना शौक समझता था, लेकिन धीरे–धीरे मैं अपने को पार्ट टाइम दुकानदार और फुल टाइम टूरिस्ट गाइड समझने लगा।" फिर गाइड बनने के बाद उस पेशे से जुड़ी हर जानकारी रखता और यात्रियों की रूचि अनुसार उनके लिए हर प्रकार के प्रबन्ध भी करता जैसे कि इन पंक्तियों से स्पष्ट है, "यह मत समझिए कि मुझे हाथियों में कोई व्यकितगत दिलचस्पी थी । टूरिस्टों को जो चीज पसंद आती वह मुझे भी पसन्द आती थी। मेरी निजी पसन्दगी नापसन्दगी गौण चीज़ थी। अगर कोई शेर देखना चाहता था या शिकार करना चाहता था तो मैं उसका इन्तजाम करना भी जानता था। अगर कोई नागराज को फन फैलाये देखना चाहता था तो मैं उसका भी इन्तजाम कर देता था।" राजू अपने व्यवसाय में पूरी रूचि रखता था इसलिए वह कहता है कि टूस्टिटों को घुमाते – घुमाते मैं भी बहुत–सी बातें सीखता था और सीखते–सीखते कमाई करता था। इन सब बातों में मुझे बड़ा मजा आता था।

2) **कुशल मनोवैज्ञानिक :** राजू एक कुशल मनोवैज्ञानिक भी है। एक गाइड के रूप में वह यात्रियों की मनःस्थिति को सूक्ष्म दृष्टि से पहचान लेता है । लेखक ने उसकी मनोवैज्ञानिकता का परिचय इन पंक्तियों में दिया है, "किसी टूरिस्ट के आते ही मैं यह देखता था कि वह सामान के लिए कुली बुलाता है या हर चीज को हाथों से उठाता है। आँख झपकते ही मुझे इन बातों पर गौर करना पड़ता था। स्टेशन से बाहर आकर वह होटल की तरफ पैदल जाता है, टैक्सी बुलाता है या एक घोड़ेवाले इक्के के साथ सौदेबाज़ी करता है, ये बातें भी मुझे देखनी पड़ती थी। उसकी हर गतिविधि का सूक्ष्म निरीक्षण करता और कोई सुझाव न देता । फिर मैं एक अर्थ में उससे सब कुछ कबूल करवा लेता था, और उसकी रूचि को जानने की कोशिश करता था।" इसी के आधार पर राजू कहता है टूरिस्ट गाइड बनकर मैंने एक बात यह भी सीखी कि भोजन की तरह भ्रमण के मामले में भी हर आदमी की अपनी अलग रूचि होती है। अतः इसके अतिरिक्त स्वामी बन जाने पर भी वह भक्तों के हृदय के भावों को सूक्ष्मता से ताड़ लेता है इसलिए वेलान उसकी प्रशंसा में कहता है, "महाराज आपने मेरे दिल की बात कैसे भांप ली ? आप जैसे महान आदमी के लिए यह आसान बात होगी, लेकिन हम जैसे क्षुद्र लोग कभी भी दूसरों के विचारों का अनुमान नहीं लगा सकते।'' रोज़ी की नृत्य संबंधी इच्छाओं को जानने में तथा उसके हृदय में मार्को के प्रति भावों

को पढ़ने में भी राजू की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति का पता चलता है।

3) **सामंजस्य पूर्ण व्यक्तित्व :** राजू का व्यक्तित्व परिस्थितियों के अनुकूल हर स्थान पर ढल जाता है । कैसी भी स्थितियाँ क्यों न हों वह उन्हीं में अपने आप को अभ्यस्त कर लेता है। अपने इसी गुण के कारण वह नृत्यलोक में, जेल में और भक्तों में श्रद्धा का पात्र बन जाता है। जेल जो कि लोगों को भयभीत कर देती है। उसे वहाँ पर भी आनन्द की प्राप्ति होती है। जैसे कि इन पंक्तियों से पता चलता है, "बुरी जगह तो नहीं है।" राजू ने जेल की चारदीवारी की ओर सर हिलाकर इशारा करते हुए कहा, "वहाँ लोग दोस्ताना ढंग से पेश आते हैं" गाइड का कार्य करते हुए भी वह अपने – आप को यात्रियों की रूचि के अनुकूल ढाल लेता है इसके विषय में वह स्वयं स्पष्ट करता हुआ कहता है, "यह मत समझिए कि मुझे हाथियों में कोई व्यक्तिगत दिलचस्पी थी। टूरिस्टों को जो चीज़ पसन्द आती थी। वह मुझे भी पसन्द आती थी।" रोजी के सहायक, तथा प्रेमी के रूप में जब वह उसके साथ रहने लगता है तो अपने आप को उसी के अनुरूप ढाल लेता है उसकी दिनचर्या रोजी के साथ ही आरंभ होती है और उसके साथ ही खत्म। स्वामी बन जाने पर भी उसका यह गुण पाठकों को प्रभवित करता है। उपवास के चौथे दिन वह भोजन का विचार अपने मन से निकालकर अंततः जब परिस्थिति से समझौता कर लेता है तो उपन्यासकार उसके विषय में लिखता है, "इस इरादे से उसमें एक विशेष प्रकार की शक्ति आ गई। जीवन में पहली बार सम्पूर्ण भाव से वह पैसे और प्यार के बाहर अपनी शक्तियों को लगा रहा था। वह पहली बार ऐसा काम कर रहा था, जिसमें उसकी व्यक्तिगत दिलचस्पी न थी।" इस प्रकार राजू उपवास को तन मन से करने का सामंजस्य कर लेता है।

4) **निर्णायक :** राजू एक निर्णायक व्यक्तित्व के रूप में भी पाठकों को प्रभावित करता है। वह एक बार जो निर्णय ले लेता है। उस पर अडिग रहता है। जब रोज़ी मार्कों को छोड़कर उसके घर आ जाती है। तो वह समाज की परवाह न करते हुए उसे अपने घर रखता है। उसके पड़ोसी, उसकी माँ तथा मामा व कई अन्य लोग इसका विरोध करते हैं पर वह अपने इस फैसले से पीछे नहीं हटता है जैसे कि इन पंक्तियों से स्पष्ट है, "मैं बढ़कर रोज़ी के पास गया, और दोनों की हैरानी की परवाह न करते हुए मैंने उसकी गर्दन में अपनी बांहे डालकर धीमे स्वर में कहा, "इन लोगों की बात मत सुनो। ये जो चाहें इन्हें कहने दो। कह–कह कर इन्हें अपनी जबान थकाने दो। लेकिन तुम यहाँ से कहीं नहीं जाओगी, रोज़ी । मैं यहीं रहूँगा और तुम भी यहीं रहोगी। जिन लोगों को यह इन्तज़ाम पसंद नहीं है, वे खुशी से यह घर छोड़कर जा सकते हैं। "इसी प्रकार जब वह एक बार मन से उपवास का निर्णय ले लेता है तो स्वास्थ्य खराब होने पर भी वह टस से मस नहीं होता। डॉक्टरों ने अपने बुलेटिन में लिखा था कि स्वामी जी के जीवन की रक्षा जरूरी है। आग्रह करके उन्हें उपवास तोड़ने के लिए राजी करें। जीवन को खतरे में न डालें । डाक्टरों ने स्वामी के पास बैठकर जब उन्हें समझाने का प्रयास किया तो अपने निर्णय पर दृढ़ रहते हुए

उन्होंने इस पर मुस्कुरा दिया। अंततः वह बेहोश होकर गिर पड़ते हैं पर उपवास को टूटने नहीं देते।

5) **सच्चा प्रेमी :** कथानायक एक आदर्श प्रेमी के रूप में भी उभर कर सामने आता है। जब वह रोज़ी की ओर आसक्त होता है तो यह जानते हुए भी कि वह विवाहिता है उसे दिल से चाहने लगता है। वह उसकी इच्छाओं का ध्यान रखता है और उसकी इच्छानुरूप उसे भारत की सफल नर्तकी बनाता है । उसके प्रेम में पढ़कर चाहे उसकी दुकान और घर भी उसके हाथ से निकल जाते हैं पर वह इसकी परवाह नहीं करता। उसकी माँ भी उसे छोड़कर चली जाती है पर वह अपनी प्रेमिका का दीवाना ही बना रहता है। वह रोज़ी से अपने प्रेमभाव व्यक्त करते हुए कहता है, "तुम्हारी खातिर मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ। तुम्हारा नाच देखने के लिए मैं अपनी जिन्दगी भी कुर्बान कर सकता हूँ। तुम जो हुक्म दोगी, मैं करूँगा।" एक अन्य स्थान पर जब रोज़ी उसे कहती है कि मैं तुम्हारे साथ बाहर क्यों जाऊँ तो वह उत्तर देता है, "क्योंकि तुम्हारे बगैर जिन्दगी सूनी–सूनी लगती है।" "तुम इसी तरह चलो, किसी को बुरा नहीं लगेगा। भला इन्द्र धनुष को भी सजावट की जरूरत है ?" मार्को का पत्र जब रोज़ी के हस्ताक्षर करने के लिए आता है तो रोज़ी कहीं उससे अलग न हो जाए इसी भय से वह उसे पत्र न दिखाकर खुद ही हस्ताक्षर करके भेज देता है। जेल चले जाने पर भी वह किसी न किसी तरह रोज़ी का समाचार प्राप्त करता रहता है। और उसे इस बात का संतोष होता है कि वो कम से कम मार्को के पैरों में गिरी तो नहीं। इस प्रकार एक सच्चे प्रेमी के रूप में वह सदैव रोज़ी के कल्याण की कामना करता है। रोज़ी जब उसे यह बताती है कि वह देवदासियों के परिवार में पैदा हुई है जिसे निम्न वर्ग समझा जाता है तो वो वह कहता है, "तुम चाहे जिस जात या वर्ग में पैदा हुई हो, तुम उसके लिए गौरव और गर्व की चीज़ हो।" अतः प्रेम में वह जातपात एवं वर्गभाव को भी नहीं मानता।

6) **मार्गदर्शक :** राजू इस पूरे उपन्यास में एक मार्गदर्शक गाइड के रूप में पाठकों पर प्रभाव डालता है। उसका जीवन अपने तीनों पड़ावों पर गाइड, कैदी और स्वामी के रूप में गुजरा है पर तीनों स्थानों पर उसकी मार्गदर्शक प्रवृत्ति ही उसे विशेष बनाती है। एक गाइड के रूप में मलगुड़ी स्टेशन पर उतरने वाला हर यात्रा उसी से सारे दर्शनीय स्थल देखने का इच्छुक है क्योंकि वह यात्रियों की मनःस्थिति को भाँप लेता है और उनकी_इच्छानुसार ही उन्हें गाइड करता है। उन पहाड़ी स्थलों को देखकर लौटने वाला यात्री रातभर उस स्थान की तारीफें करता रहता। उसने बताया कि वहाँ पहाड़ की चोटी पर एक छोटा–सा मंदिर है। "पौराणिक कथाओं में पार्वती के यज्ञकुण्ड में कूदने की घटना लिखी है । जरूर यह वही जगह होगी।" जैसा यात्री होता और उस समय मेरा जैसा मूड उसी के अनुसार मैं ऐतिहासिक तिथियाँ बताता।" एक अच्छे गाइड की भूमिका निभाने के कारण ही यात्री उसकी प्रशंसा करते और अगर अपने पूरे परिवार के साथ न आए होते तो उन्हें साथ लाने की कस्में खाते जैसे कि इन पंक्तियों से पता चलता है, "उसे यही

अफसोस होता कि वह अपनी बीवी या बेटी को साथ लेकर नहीं आया। उनकी बातों से ऐसा लगता, मानो उन्होंने अपनी बीवी या बेटी को किसी बढ़िया चीज से वंचित कर दिया हो। यात्री कसमें खाता कि अगले साल वह अपने पूरे परिवार को साथ लेकर वहाँ आएगा।" इसी प्रकार जेल में भी वह अपने मार्गदर्शक विचारों के कारण सबका प्रिया बन जाता है जैसे कि राजू के शब्दों में "हत्यारे, लुटेरे, गला काटनेवाले, सब मेरी बाते सुनते थे और मैं बातों से उनका अवसाद दूर कर सकता था। जब कभी आराम का मौका आता तो मैं उन्हें कहानियाँ और दार्शनिक बातें सुनाता। वे मुझे बडयार (गुरू कहकर पुकारने लगे, जेल में पाँच सौ कैदी थे और मैंने उनमें से अधिकांश लोगों के साथ आत्मीयता पैदा कर ली थी। नये कैदी जेल में आकर पहले कुछ दिन उदास और क्षुब्ध रहते । मैं उन्हें समझाता, "दीवारों को भूल जाओं तो तुम सुखी रह सकोगे।" अतः जिस प्रकार वह गाइड के रूप में मलगुडी में प्रसिद्ध हो जाता है उसी प्रकार गुरू के रूप में वह जेल में भी सबका प्रिय बन जाता है। स्वामी बन जाने पर तो राजू के जीवन की कायाकल्प हो जाती है। वह एक ऐसे स्वामी के रूप में प्रसिद्धि पा जाता है जिसके दर्शन मात्र से ही लोगों के जीवन की दिशा बदल जाती है। अगर वह किसी को दो शब्द भी कह देता तो उस अमूक व्यक्ति को लगता कि उसे तो अलभय खज़ाना ही मिल गया है इसलिए बैठकर लोग (भक्त) उसका मुँह ताकते रहते कि उन्हें उसके शब्दों की बहुमूल्य मणियाँ प्राप्त होंगी। सब लोग आदरपूर्वक राजू की प्रेरणा की प्रतीक्षा करते रहते थे। उन्हें ऐसा भी लगता था कि स्वामी जी चाहे कुछ भी न कहे केवल उनकी कृपा दृष्टि भी हमारा जीवन बदल सकती है। पानी की कमी होने पर एक स्त्री उनसे प्रार्थना करती है, "न जाने दुनिया का क्या बनेगा। स्वामी जी आप हमें रास्ता दिखाइए।" मार्गदर्शन पाने हेतु उसकी सभाओं में असंख्य भक्त जमा होते थे कि मन्दिर के बरामदों और नदी के किनारे तक उन्हें बैठने की जगह न मिलती थी । रचनाकार इस विषय में लिखता है, "वह यह जानने की परवाह न करता कि वह किससे बात कर रहा है। अब वह दुनिया का बन गया था। उसका प्रभाव असीम था । वह सिर्फ भजन ही नहीं गाता था, या दार्शनिक उपदेश ही नहीं देता था, बल्कि अब बीमार लोगों को दवा–दारू भी बताता था । लोग उसके पास अपनी पैतृक सम्पत्ति के बंटवारे के झगड़े लेकर तो आते ही थे। इन कार्यों के लिए उसने दोपहर के बाद के कई घंटे निश्चित कर दिए थे।" अतः इस सबसे राजू के चरित्र के इस विशेष पक्ष का ज्ञान होता है।

7) **प्रकृति प्रेमी :–** राजू प्रकृति का भी चितेरा था। सारा बचपन उसका प्रकृति की गोद में ही गुजरा था। शायद उसके गाइड बनने के पीछे कहीं उसके मन में बसा प्रकृति प्रेम भी था। इससे उसे स्फूर्ति मिलती थी जैसे कि इन पंक्तियों से पता चलता है – "नीला आसमान, खिली हुई धूप, मकान के साये में बैठकर काम करना, ठण्डे पानी का स्पर्श, इससे मेरे भीतर एक शानदार भावना पैदा हो गई। ताज़ी खुदी हुई मिट्टी की गंध मुझे सबसे ज़्यादा खुशी देती थी।" यात्रियों को मलगुडी तथा मेप्पी शिखर का वर्णन करते हुए भी वह प्रकृति के रमणीय स्थलों का गुणगान

करता था पीक हाउस के प्रकृति दृश्य इस प्रकार है, "पीक हाउस मेम्पी की पहाड़ियों के शिखर पर बना था – सड़क यहीं पर खत्म हो जाती थी। नीचे जंगल घाटी तक फैला था, और जिस दिन आसमान साफ रहता था, धूप में चमचमाती सरयू नदी की धारा दिखा देती थी। प्राकृतिक वातावरण के प्रेमियों और जंगली पशुओं को देखने के शौकीन लोगों के लिए वह स्थान स्वर्ग के समान था।"इसी तरह मंदिर में रहते हुए भी प्रकृति के मनोरम दृश्य उसे आकर्षित करते थे जैसे–"पेड़ों में हवा की सरसराहट और उमड़ते हुए दरिया से शाम की सभा और आकर्षक बन जाती थी । राजू को यह मौसम बहुत पसंद था क्योंकि चारों और हरियाली छाई रहती थी, आसमान में बादल तरह–तरह के खेल खेलते थे। राजू खम्भेवाले हॉल में बैठा–बैठा सारा दृश्य देखा करता था।" प्रकृति प्रेमी होने के नाते ही वह जेल में भी सब्जियाँ लगाता है। उनकी देखभाल करता था और उन्हें बढ़ते हुए देखकर उसे एक विचित्र–सा सुख अनुभव होता था जैसे – मैं क्यारियों में बड़े–बड़े बैंगन, फलियाँ और गोभी उगाता था। जब छोटी–छोटी कलियाँ निकलती तो मुझे बड़ी उत्तेजना होती। उन्हें बढ़ते हुए, शक्लें अख्तियार करते, रंग बदलते और पत्तियाँ झड़ते हुए देखता ।'' अतः उसे प्रकृति के हर नज़ारे से प्रेम था फिर चाहे इमली का पेड़ होता, पहाड़ होता, नदी का किनारा या जानवर आदि वह उनमें इस तरह रम जाता कि मानो संसार का असीम सुख इसी में है।

इसके अतिरिक्त राजू में भावुकता, सत्यवादिता, स्पष्टवादी, स्वार्थी, लालची, बनावटीपन में विश्वास रखने वाले, आदर्श विचारों वाला, भाग्य पर विश्वास करने वाले युवक के रूप में भी प्रभावित करता है। जब कहीं उसे लगता है कि अब उसका काम स्पष्टवादिता पर आधारित है तो वह सीधे–सीधे बात बताता था जैसे कि रोजी ने राजू से कहा कि वह काम छोड़ देगी और अपने पति के पास चली जाएगी तो मार्को उसे अपने पास रख लेगा। तब रोज़ी को वास्तविकता का आइना दिखाते हुए कहता है, "अगर सिर्फ नाचने की बात होती तो वह तुम्हें वापस ले लेता।" वास्तव में देखा जाए तो राजू इस उपन्यास 'गाइड' का केन्द्रीय पात्र है और उपन्यास का सारा कलेवर इसी के आस–पास घूमता है।

रोज़ी उर्फ नलिनी का चरित्र – चित्रण

रोज़ी उर्फ नलिनी 'गाइड' उपन्यास की नायिका है। वह देवदासियों के परिवार से सम्बन्ध रखती है । नृत्य की घुट्टी उसे विरासत से मिली है। वह अर्थशास्त्र में एम.ए है उसका विवाह मार्को नामक एक इतिहासकार से हुआ था जो पत्थरों की नक्काशी और चित्रों का अध्ययन करता है। रोजी ने अपने मन में नृत्य की अभिलाषा को दबाए रखा था पर जब वह गाइड राजू से मिलती है तो उसकी दबी हुई इच्छाओं को हवा मिल जाती है परिणामस्वरूप वह राजू के सहयोग और मार्ग दर्शन से भारत की एक प्रसिद्ध नृत्यांगना बन जाती है पर इन सब प्रयासों में उसका वैवाहिक जीवन अस्त–व्यस्त हो जाता है उस के चरित्र की कुछ विशिष्टताएं निम्नलिखित है :

1) **सफल नर्तकी :** रोज़ी एक सफल नर्तकी है। नृत्य का अभ्यास वह बचपन से करती आई थी वह स्वयं राजू को बताती है, "मैं जब बच्ची थी उस वक्त से ही गांव के मंदिर में नाचने लगी थी। "फिर भी जब उसने नाचना शुरू किया तो उसका सारा ध्यान अपनी मुद्राओं और पग संचालन पर रहता। उसने हर नृत्य के मूल भावों को सीखा ही नहीं अपितु दिन में लगभग आठ–आठ घंटे तक अभ्यास भी किया इसलिए जब वह स्टेज पर नृत्य करती तो दर्शक मंत्र मुग्ध हो जाते थे। नृत्य में उसका जीवन इतना रच बस गया था कि नाच के ज़िक्र से उसकी आँखों में एक नये उल्लास की चमक आ गई । नृत्य में प्रवीण होने के लिए वह नृत्य, संबंधी पुस्तकें पढ़ती थी जैसे कि उसकी दिनचर्या के संबंध में उपन्यासकार ने लिखा है, "वह नृत्यशास्त्र के प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन करती। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र को पढ़ती, क्योंकि प्राचीन नाट्यकला के अध्ययन के बिना शास्त्रीय नृत्य के मूल रूप को बनाए रखना असम्भव था।" संगीत की किताबों से ज्ञान सीखने के लिए पंडितों की सहायता भी ली थी। नृत्य कला की बारीकियों और पेचीदगियों को वह जानती थी। उसके नृत्यकला संबंधी ज्ञान का परिचय निम्नलिखित पंक्तियों से मिलता है वह कहती, "जानते हो पल्लवी क्या होती है ? उसमें सबसे अधिक महत्व ताल का होता है इसमें हमेशा, एक–दो, एक–दो, नहीं बल्कि तरह–तरह के ताल होते है।" फिर वह तोड़े सुनाने लगती, "ता–का–ता–की–ता–ता–का" मुझे बड़ा कौतूहल होता। "जानते हो इसे पाँच और सात की मात्रा में बांधने के लिए कितने अभ्यास की जरूरत होती है। उसे हर नृत्य का ज्ञान था इसलिए वह राजू से कहती है, "जानते हो एक युवती की बांह पर गुदे हुए तोते के बारे में भी एक नृत्य है, किसी वक्त मैं तुम्हे दिखऊंगी अपने अभ्यास और नृत्यज्ञान के कारण दर्शक उसके नृत्य के इन्द्रजाली प्रभाव में खो जाते। अतः रोजी एकाएक नृत्य के क्षेत्र में फुलझड़ी की तरह चमकी। उसका नाम सार्वजनिक सम्पत्ति बन गया। उसके मशहूर होने की वजह उसकी प्रतिभा थी और जनता के लिए उसकी प्रतिभा को स्वीकार करना आवश्यक हो गया था।

2) **जिज्ञासु :** नलिनी उर्फ रोज़ी जिज्ञासु प्रवृत्ति की है और नृत्यज्ञान संबंधी उसकी जिज्ञासा पराकाष्ठा तक पहुँची हुई थी। नृत्य के विषय में और जानने के लिए वह नृत्यशास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन करती। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र को पढ़ती क्योंकि प्राचीन नाट्यकला के अध्ययन बिना शास्त्रीय नृत्य के मूल रूप को बनाए रखना असम्भव था।" सूत्रात्मक शैली में लिखे हुए ग्रंथों को समझने के लिए पंडित की सहायता लेती है। इस प्रकार नृत्य में तो मानो उसके प्राण बसे थे इसलिए उससे सम्बन्धित हर छोटी–बड़ी बारीकी को जानने का प्रयास करती है। यहीं नहीं मार्को ने अपनी खोज में जब उससे खोज की हुई भीति–चित्र पर संगीत की स्वरलिपियों की बात की तो रोज़ी का आनन्दोल्लास देखने वाला था। वह जिज्ञासापूर्वक कहती है।, "संगीत की स्वरलिपियां। कितनी आश्चर्यजनक चीज़ें है। तुम मुझे वह भिति – चित्र दिखाओगे। ओह यह तो शानदार बात है। मैं उन स्वरों को गाने की कोशिश करूंगी। इसके अतिरिक्त राजू के साथ

रहते हुए भी उसे मार्को के विषय में जानने की जिज्ञासा बनी रहती है। उसकी किताब आने पर वह उसके विषय में हर बात को जानने के लिए भी उत्सुक रहती है।

3) **पति के प्रति स्नेह रखने वाली :** रोज़ी अपने पति को बहुत चाहती है पर पति का लापरवाह रवैया उसे व्यथित करता है। वह सदैव उसके प्रति चिंतित रहती है जब वह राजू के प्रति आसक्त होती है तो अपने पति के बारे में भी चिंता प्रकट करती है। वह उसे मिलने के लिए गाड़ी मंगवाने के लिए राजू से कहती है पर राजू के यह कहने पर कि गाड़ी तो अब कल ही आएगी वह निराश हो जाती और कहती है, "जो भी हो, अखिरकार वह मेरा पति है। मुझे उसकी इज्जत करनी पड़ेगी। मैं उसे अकेला नहीं छोड़ सकती" । अपने पति की प्रशंसा करती हुई कहती है, "वह शरीफ है, हो सकता है वह बुरा न माने, लेकिन क्या बीबी का फर्ज़ नहीं है, कि वह अपने पति की रखवाली और मदद करे। चाहे उसका पति उससे कैसा भी सलूक करे।" यहाँ तक कि वह सदैव अपने पति को प्रसन्न रखने का प्रयास करती है। मार्को को जब रोज़ी और राजू के संबंधों का पता चलता है तो वह रोज़ी से निराश हो जाता है रोजी तब भी उसे एक अच्छी पत्नी की तरह मनाने का प्रयास करती है वह पति सुख पाने के लिए मार्को से माफी मांगती है। और स्वीकार करती है कि "न जाने क्यों मैं उसे बहुत चाहने लगी थी। मुझे लगा कि वह अगर मुझे माफ करके वापस ले ले तो मेरे लिए यही काफी होगा पर अंततः वह इससे सफल नहीं हो पाती।

4) **सामंजस्यपूर्ण :** रोज़ी का व्यक्तित्व सामंजस्यपूर्ण है वह कैसी भी परिस्थितियों में अपने आप को ढाल लेती है। उसे इस बात की परवाह भी नहीं रहती कि कोई क्या कहेगा। जब मार्को उसे छोड़कर चला जाता है तो वह चुपचाप राजू के पास आ जाती है और उसके एक कमरे वाले घर में ही अपने को ढाल लेती है। शहरी होते हुए भी गांव वालों के सारे काम सीख लेती है। इसलिए खाना बनाना, सफाई करना, कपड़े धोना आदि उसे भार नहीं लगता। उसकी यह प्रवृत्ति उसके विवाह के अवसर पर भी पाठकों को प्रभावित करती है। वह राजू को बताती है कि "जब मार्को ने मुझे पसंद कर लिया तो मेरे परिवार की सभी औरतें बहुत प्रभावित थी और वे खुशी से फूली नहीं समाती थीं कि एक इतना धनी आदमी हमारे वर्ग में शादी करने आ रहा है, और यह तय हुआ कि अगर अपने परम्परागत हुनर को छोड़ना जरूरी हो तो यह त्याग इस सम्बन्ध के मुकाबले में बड़ा नहीं है।" इसलिए वह अपने शादीशुदा जीवन को सफल बनाना चाहती है। अपने सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व के कारण ही वह एक सफल नर्तकी बन जाती है।

5) **प्रेमिका :** रोज़ी इस उपन्यास में एक प्रेमिका के रूप में भी पाठकों को प्रभावित करती है । इस रचना के आरंभ में तो लगता है कि वह प्रेमी राजू के प्रति पूर्णता समर्पित है । इसलिए वह उसे जेल में मुक्त करवाने का भी हर संभव प्रयास करती है। उसे अपने इस नये प्रेमी पर पूर्ण विश्वास था इसलिए उसकी हर बात को आँख मूंदकर मान लेती है। पर राजू के जेल चले जाने पर नाचना छोड़कर मलगुड़ी से मद्रास चली जाती है और चुप्पी साध लेती है। उसकी यह चुप्पी पाठकों को

ठीक नहीं लगती और पाठकों को यह सोचने के लिए विवश करती है कि कहीं उसने राजू को केवल सीढ़ी के रूप मे तो प्रयोग नहीं किया।

6) **गृह कार्यों में निपुण :** रोज़ी में एक अच्छी गृहिणी के भी सभी गुण हैं। हर घर को अच्छी तरह संभाल लेती है। स्त्री सुलभ इन गुणों के कारण वह परिस्थितियों से सामंजस्य कर लेती है। राजू के घर रहते हुए वह उसकी माँ के गृहकार्यों में हर संभव सहायता करती है। सुबह तीन घंटे निरन्तर अभ्यास करने के पश्चात् "वह माँ की मदद करती, सफाई करती, झाड़ू देती, कपड़े धोती और घर की हर चीज़ को करीने से सजाती। रोज़ी पाक कला में भी निपुण थी इसलिए जब वह प्रसिद्ध नर्तकी भी बन जाती है तब भी वह खाना अपने हाथों से बनाती थी रचनाकार के शब्दों में, "जिस दिन डांस का प्रोग्राम होता वह शाम से पहले ही खाना तैयार कर लेती। हम चाहते तो रसोइया रख सकते थे, लेकिन वह कहती" दो जनों के लिए रसोइये की क्या जरूरत है ? मुझे अपने स्त्री सुलभ कर्त्तव्यों को भूल नहीं जाना चाहिए।" अतः वह संगीतकला, नृत्यकला, गृहकला तथा पाक कला में निपुण थी।

7) **कृतज्ञतापूर्ण :** रोजी के लिए जब भी कोई कार्य किया जाता वह सदैव उसके प्रति कृतज्ञ रहती। वह मार्को के प्रति भी कृतज्ञता का भाव रखती थी कि उसने उस पर पूरा भरोसा किया है वह कहती थी, "जो भी हो, उसने मेरे साथ अच्छाई की है, मुझे हर किस्म का आराम और आज़ादी दी है।" रोज़ी राजू के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करती है जब वह उसे नृत्य की दुनिया में ले आता है जैसे कि इन शब्दों में पता चलता है। अपने शरीर का सारा भार मेरे ऊपर फेंकती हुई उल्लास – भरे स्वर में बोली, "कितने प्यारे हो तुम ! तुम मुझे नई जिंदगी दे रहे हो।" कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु वह किसी प्रकार की औपचारिकता का ध्यान न रखकर राजू से कहती, "मैं सात जन्मों में भी तुम्हारा कर्ज नहीं चुका सकती।" उसे लगता था कि राजू ने उसे किसी नई दुनिया से मिलवाया है इसलिए जब वह उसके साथ घूमती है तो भी उसकी आंखों में एक जिन्दादिली के साथ कृतज्ञता के भाव भरे रहते।

8) **ईमानदार :** रोज़ी इस उपन्यास में एक ईमानदार व्यक्तित्व के रूप में भी पाठकों को प्रभावित करती है। इसका पता तब चलता है जब राजू पकड़ा जाता है और उसे स्वयं सारे काम संभालने पड़ते हैं। वह नृत्य नहीं करना चाहती थी पर जिन लोगों से एडवांस लिया था उनके प्रोग्राम किये और जिनके प्रोग्राम पूरे नहीं कर पाई उनके पैसे लौटा दिए। मलगुड़ी छोडने से पहले बड़ी ईमानदारी तथा चतुराई से उसने अपने सारे कार्य पूरे किए थे। जैसे मणि उसके विषय में बताता है जाने से पहले उसने कायदे से अपने कर्जों की फेहरिस्त बनाई थी ओर उनका पूरा भुगतान किया था। यहीं नही राजू जब जेल जाने लगा तो भी उसने उसे पूछा था, "मेहरबानी करके मुझे बताओं कि तुमने कहाँ–कहाँ प्रोग्राम का वादा किया है, ताकि मैं उनके पैसे लौटा दूँ। "इस प्रकार अपनी ईमानदारी के कारण ही वह अपने नौकरों एवं परिचितों की दृष्टि" में आदरणीय थी।

9) **मद्दगार :–** ईमानदार व्यक्ति मद्दगार भी होता है। रोज़ी के चरित्र का यह पक्ष केवल राजू की सहायता के संदर्भ में ही प्रकाशित होता है। राजू पर जब केस चलता है तो जी जान से उस केस पर पैसा खर्च करके उसे मुक्त करवाती है। उसे जब पता चलता है कि राजू ने पहले ही सारे पैसे लुटा दिए हैं और अब केस लड़ने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं है तो भी वह उसे विश्वस्त करते हुए कहती है, "इसका यह मतलब नहीं कि मैं तुम्हारी मदद नहीं करूँगी। अगर मुझे अपनी अखिरी चीज़ भी गिरवी रखनी पड़े तब भी मैं तुम्हें जेल से छुड़वा लूँगी।" और इसके लिए उसने अपने हीरे के गहने बेच दिए। सब शेयरों को खरीद के भाव पर बेचकर पैसा इकठ्ठा किया और एक बड़ा वकील मंगवाकर राजू का केस लड़ा। मलगुड़ी छोड़ने से पहले वह मणि को भी अपनी मदद हेतु हज़ार रूपया देती है। ताकि वह उन पैसों से फिर से अपना कोई नया काम कर सके।

10) **समर्पित व्यक्तित्व :** रोज़ी एक समर्पित भावना से परिपूर्ण नायिका थी । उसका यह समर्पण उसकी कला के प्रति भी था और अपने प्रेम के प्रति भी। नृत्य के प्रति तो उसका समर्पण भाव देखते ही बनता है। और अपने उसी समर्पण से वह कुशल नृत्यांगना भी बनती है। वह प्रतिदिन एक साथ तीन–तीन घंटे अभ्यास करती और उसकी पेचीदगियों को समझती । ऐसा करते हुए वह अपने वातावरण के प्रति बेखबर रहती, उसका सारा ध्यान अपनी मुद्राओं और पग संचालन पर ही एकाग्र रहता था । नृत्य के लिए वह कई ग्रंथों का अध्ययन करती है। पुरानी संगीत लिपियां सीखती है। पशु–पक्षियों के आधार पर नृत्य का अभ्यास करती है । दक्षिणी भारत में वह अपने सर्प नृत्य के लिए भी जानी जाती है। गूदे हुए पक्षियों पर भी नृत्य होता है इसलिए वह कहती है – "एक युवती की बांह पर गुदे हुए तोते के बारे में भी एक नृत्य है।" नृत्य के प्रति उसका यह जुनून ही उसे पति से अलग कर देता है। उसके इस समर्पण का पता तब भी चलता है जब वह मार्को के साथ विवाह करने के लिए अपने कलाकार, संगीत एवं नृत्य के जीवन को तिलांजलि दे देती है। न केवल कला बल्कि धन का समर्पण भी वह समय आने पर करती है। राजू के केस के लिए वह अपने हीरे के आभूषण बेच देती है। खरीदे हुए शेयर भी खरीद के दाम पर बेच देती है तथा और वह सब भी जो राजू की रिहाई एवं केस के पैसे जुटाने में सहायक होता है।

11) **अगाध विश्वास करने वाली :** रोज़ी के चरित्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि वह सामने वाले पर पूर्ण विश्वास करती थी एक पल के लिए चाहे वह राजू की माँ हो या मणि भी । उसे अपने पति पर भी विश्वास था कि राजू के साथ उसके संबंधों को जानकार वह उसे क्षमा कर देगा पर ऐसा नहीं होता है। दूसरी ओर वह राजू पर पूरा विश्वास करती है। उसे यह तक पता नहीं होता कि वह उसके नृत्य प्रोग्राम कहाँ के लिए तय कर रहा है कितने पैसे ले रहा है और उन पैसों का प्रयोग कहाँ कर रहा है। राजू उसे उसके प्रोग्रामों से परिचित करवाने के लिए जब कैलेण्डर उसके कमरे में टांग देता है। तो नलिनी उर्फ रोज़ी उसे लपेटकर राजू के हाथों में थमा देती है और कहती है, "इसकी कोई जरूरत नहीं। इन तारीखों को मैं किस लिए देखू । मुझे मत

दिखाओ।" इसलिए राजू उसके अगाध विश्वास के विषय में कहता है, " वह मेरे हुक्म पर ट्रेनों में सवार होती और उतर जाती थी। पता नहीं उसने कभी यह भी गौर किया था या नहीं कि हम किस शहर में है, और कौन सी सभा या संस्था हमारा प्रोग्राम करवा रही है। हम मद्रास में हों पड़ता था मदूरै में या ऊटमण्ड जैसे पहाड़ी जगह में हो, इनसे उसे कोई फर्क नहीं, वह कभी यह जानने का प्रयास नहीं करती कि उसकी माहवार आमदन क्या है । राजू के कहने पर वह बिना देखे ही हर चेक पर दस्तखत कर देती थी। पर जब उसे अंत में पता चलता है कि इतने कार्यक्रम देने के बाद भी उसके पास कुछ भी नहीं तो वह निराश हो जाती है।

12) **पश्चाताप की भावना से परिपूर्ण :** रोज़ी एक ऐसी स्त्री भी थी जिसे अपने किए पर पश्चाताप भी था । पहले तो वह नर्तकी के जीवन को स्वीकार तो कर लेती है पर बाद में जब आंख खुलती है तो वह बहुत पश्चाताप भी करती है। उसे लगता है कि मार्को के साथ उसने सही नहीं किया है वह एक प्रकार के उपराध बोध से ग्रसित रहती है। और पश्चाताप करते हुए कहती है, "मेरे साथ यही होना चाहिए था। अगर कोई और पति होता तो वहीं मेरा गला घोंट देता । उसने महीने तक मेरे साथ रहना बर्दाश्त किया मेरी करतूतों को जानते हुए भी।" जब उसे पता चलता है कि वह राजू के हाथों की कठपुतली बन चुकी है तो भी वह बहुत अफसोस करती है और कहती है मैं इस तरह की अकर्म की जिंदगी से तंग आ गई हूँ।" अतः वह एक बार तो नाचना बंद करने की घोषणा भी कर देती है। पर राजू की मद्द के लिए वह इस जीवन को फिर स्वीकारती है और अंततः राजू का निर्णय हो जाने के पश्चात वह इस जीवन को सदा–सदा के लिए अलविदा कह देती है।

13) **प्रबन्ध पटुता :** रोज़ी एक अच्छी प्रबन्धक भी थी। कलानिपुणता के साथ–साथ वह हर कार्य को बड़े सलीके से कर लेती थी। जब–जब वह शाम को शो देने के लिए जाती थी बड़ी अच्छी तरह वह अपने खाने–पीने का प्रबन्ध भी कर लेती थी । जब तक वह पूरी तरह व्यस्त नहीं थी हर चीज़ का रख–रखाव अपने हाथों से करती थी । राजू के घर जब नृत्य संबंधी बातचीत करने के लिए दो स्कूल के अधिकारी आए थे तो उस समय रोज़ी ने जो प्रबंध किया था वह सराहनीय था, "सुबह रोज़ी ने कमरे की चीजों को करीने से संभाल दिया था और पड़ोस से गुलमोहर के फूल लाकर उसे सजा दिया था । उसने एक गुलदस्ता पीतल के गिलास में सजाकर एक कोने में रख दिया। बिस्तरों को लपेट कर बक्सों, स्टूलों और दूसरी चीजों के साथ एक कोने में सरकाकर रख दिया। पुरानी चटाई को झाड़कर उसके फटे हुए कोने अन्दर को मोड़कर छिपा दिए । उसने गरम काफ़ी के प्याले तैयार रखे।" राजू के जेल चले जाने पर उसने बड़ी दक्षता से पैसा एकत्र किया। मणि को मद्रास भेजकर एक बड़ा बकील मंगवाया। पैसा जुटाने के लिए वह फिर से नाचने लगी। वह सजिन्दों के और रेल के इन्तजाम खुद करने लगी थी। वह इतनी सशक्त थी कि उसके शो पहले से भी अच्छे चल रहे थे। जैसे कभी दक्षिणी भारत के एक कोने में, उससे अगले हफ्ते लंका में,

कभी बम्बई में और कभी दिल्ली में उसके शो होते थे। उसकी प्रबन्ध शक्ति के कारण उसका साम्राज्य सिकुड़ने की बजाय दिनों–दिन विस्तृत होता जा रहा था।" अतंतः बड़ी सावधानी से उसने सारा हिसाब किताब करके मद्रास जाकर अपना नया जीवन आरंभ कर दिया।

14) **स्वाभिमानी :** रोज़ी कृति के अंत में एक स्वाभिमानी स्त्री के रूप में भी पाठकों को प्रभावित करती है । उसका यह स्त्री सुलभ स्वाभिमान तब जागता है जब उसे राजू की ओर से धोखा मिलता है। लेखक के अनुसार उसमें एक प्रबल जीवन शक्ति थी जिसकी कीमत स्वयं उसने अभी तक कम आंकी थी। वह इतनी आत्मनिर्भर हो जाती है कि अपने सारे काम स्वयं करती है। उसके इस स्वाभिमान को देखकर राजू कहता है, "जिस तरह से वह सारा काम संभाल रही थी उसे देखकर यही लगता था कि मैं चाहे जेल में रहूँ या बाहर, उसका पति चाहे या न चाहे वह सब कुछ संभाल लेगी। उसकी जिंदगी में न मार्को के लिए जगह थी न मेरे लिए ।" स्वाभिमानी होने के कारण ही मद्रास चले जाने पर भी उसने मार्को के पैरों पर दोबारा गिरने की कोशिश नहीं की। वास्तव में स्वाभिमान के कारण मार्को के पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाती नहीं है जब वह उसे साथ लेकर नहीं जाता तो वह उसके पीछे न जाकर राजू के घर आ जाती है।

इस प्रकार रोज़ी इस उपन्यास की ऐसी नायिका है जो राजू के जीवन में उथल–पुथल मचा देती है। मृत्यु के प्रति विशेष मोह होने के कारण वह अपने पति से भी अलग हो जाती है पर जब इन्तहा हो जाती है तो फिर वह गुमनामी की दुनिया में लौट जाती है। वह एक ऐसी प्रेमिका भी है जो राजू के प्रति विशेष मोह रखती है उसे पाने के लिए वह उसके मामा और माँ के दबाव को भी सह जाती है और अंततः अपने प्रेमी को जेल से मुक्त करवाने के लिए वह अपना सब कुछ दाव पर लगा देती है। राजू द्वारा की गई गलती के कारण वह उसको सदा–सदा के लिए त्याग देती है।

वेलान

वेलान एक ग्रामीण है। वह एक भोला – भाला किसान है । वह एक उच्चकोटि का भक्त है जो अपने स्वामी के लिए कुछ भी करने को तैयार है। उसे अपने स्वामी में पूरी श्रद्धा थी इसलिए राजू जब अपने विगत जीवन के विषय में बताता है तो भी वह विश्वास न करके उसे स्वामी के रूप में ही आदर देता है।

मार्को

मार्को इस उपन्यास में रोज़ी के पति के रूप में परिचय पाता है । वह एक चित्र विज्ञानी है और मलगुड़ी में गुफाओं के अध्ययन के लिए आता है और अपनी खोज के आधार पर "दक्षिण भारत का सांस्कृतिक इतिहास" पुस्तक छपवाता है। वह एक ऐसा पात्र है जो केवल गुफाओं में ही पड़ा रहता है। उसने विवाह केवल इसलिए किया है कि उसकी पत्नी उसकी देखभाल करें। उसे यह भी ज्ञान नहीं रहता कि दूसरों के मनोभाव क्या है ? उन्हें जीवन में उसकी आवश्यकता है कि नहीं। उसे केवल इतना ही पता

है कि वह अपनी पत्नी की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है। रोजी के यह कहने पर भी कि नृत्य उसकी जिन्दगी है तो वह उसे कहती है, "क्या तुम मुझे नाचने की इजाज़त दोगे। ऐसा करने से मुझे बड़ा सुख मिलेगा"। तो उसे लगता है कि उसकी पत्नी शायद उसका मुकाबला करना चाहती है वह कहता है, "यह विद्या का क्षेत्र है, सड़क पर व्यायाम के करतब दिखाने का नहीं।" पर जब उसे पता चलता है कि रोज़ी और राजू में संबंध है तो वह कहता है, मुझे नहीं मालूम था कि उस होटल में ऐसे – ऐसे कलाप्रेमी जमा होते हैं। लोगों की नेक चलनी में विश्वास करके मैंने मूर्खता की।" और वह चुप्पी साध लेता है। अपनी पत्नी की ओर से उदासीन होते हुए उसे वही छोड़कर चला जाता है।

गफ्फूर

गफ्फूर इस उपन्यास में एक टैक्सी चालक तथा राजू का दोस्त है। वह अपने व्यवसाय में निपुण है। राजू जब रोज़ी के प्रति आकर्षित होता है तो वह राजू को ऊँच – नीच समझाने का प्रयास करता है पर राजू पर जब कोई असर नहीं होता तो वह अपना अलग रास्ता नाप लेता है। अंत में जब राजू स्वामी बन जाता है तो उसके प्रति संवेदना होती है।

राजू की माँ

राजू की माँ इस उपन्यास में एक सुघड़ गृहिणी के रूप में आती है। पढ़ी–लिखी न होने के बाद भी वह सामाजिक ऊँच – नीच का ध्यान रखती है। आतिथ्य भाव को जानने के कारण वह रोज़ी के आने पर उसका स्वागत करती है पर यह जानकर कि वह विवाहिता है उसे अपने पति के पास लौट जाने के लिए कहती है । वह अपने बेटे को गलत राह पर चलने से रोकती है पर जब वह उसकी बात नहीं मानता तो वह अपने भाई को भी बुलाती है । उसे राह पर लाने के प्रयास में वह घर छोड़कर अपने भाई के साथ चली जाती है। वह समय–समय पर राजू का व्यवसाय संबंधी तथा जीवन संबंधी मार्गदर्शन करती है। अंततः जब राजू को अदालत के कटघरे में देखकर क्रोधित हो जाती है और रोज़ी को इसका जिम्मेवार समझती और राजू को दुखी हृदय से कहती है–तुमने अपने और अपने परिचितों के माथे पर कैसा कलंक लगाया है ? जब तुम हफ्तों तक निमोनिया में पड़े थे तो मुझे डर लगता था कि कहीं तुम मर न जाओ लेकिन अब जो भुगतना पड़ रहा है, उससे तो तुम्हारी मौत ही अच्छी थी ..... । अपने पुत्र के लिए ऐसी कामना वही माँ कर सकती है जो लोकलाज को मानती हो और जिसका हृदय अति संतुष्ट हो।

अतः वस्तु विन्यास की दृष्टि से देखा जाए तो उपन्यासकार ने पात्रों की भीड़ इकट्ठी न कर केवल गिने–चुने पात्रों के माध्यम से उपन्यास के क्लेवर की रचना की है और अपने इस प्रयास में वह सफल है।

10.3.3 परिवेश एवं वातावरण

कृति के वस्तु – विन्यास में परिवेश की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है क्योंकि रचना के उद्देश्य और पात्रों के चरित्र परिवेश–वातावरण के अभाव में विकसित नहीं हो सकते। परिवेश–वातावरण से

अभिप्राय है – "चारों ओर की वे सब बातें जिनका जीवन, विकास निर्वाह आदि पर प्रभाव पड़ता है।" उपन्यास में परिवेश तो कभी महत्वपूर्ण पात्र की भूमिका निर्वाह करता है और कभी रचनाकार के उद्देश्य को सजीवता देता है। प्रस्तुत उपन्यास 'गाइड' एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें जो घटनाएँ घटी हैं उसमें परिवेश भी उत्तरदायी है। इस कृति में तीन तरह का परिवेश अपना अस्तित्व रखता है। मलगुड़ी क्षेत्र का, जेल का तथा मंगला के प्राचीन मंदिर का। राजू तथा रोज़ी के व्यक्तित्व निर्माण में इसकी भूमिका सराहनीय है। मलगुड़ी दक्षिणी भारत का एक पहाड़ी क्षेत्र है जो अपनी भौगोलिक और ऐतिहासिक संपदा के लिए यात्रियों के आकर्षण का केन्द्र है । मलगुडी मेम्पी की पहाड़ियों पर बना पीक हाउस यात्रियों को बरबस ही यात्रा के लिए विवश करता है। राजू इसी क्षेत्र की अपार सम्पदा को देखते हुए दुकान के काम को पार्ट टाइम करके 'टूरिस्ट – गाइड' का व्यवसाय कर लेता है। वह उस स्थान पर आने वाले यात्रियों में अपनी सूक्ष्म एवं स्थूल दृष्टिकोण के कारण चर्चित हो जाता है। मार्को को इस स्थान की पुरानी गुफाएँ आकर्षित करती हैं ओर वो अध्ययन हेतु, मद्रास से अपनी पत्नी सहित वहां पहुँचता है। गाइड का कार्य निभाते हुए भी राजू रोज़ी के प्रेम में पड़ जाता है। दूसरा परिवेश सेंट्रल जेल का है जहाँ पर नकली हस्ताक्षरों के जुर्म में राजू के चरित्र के कई पक्षों को उद्‌घाटित करने में सफलता प्राप्त की है। राजू ने इस स्थान को सांसारिक ईर्ष्या – द्वेष तथा शत्रुता से मुक्त माना है। राजू के अनुसार – अगर यही जेल की जिंदगी थी तो और लोग इसे क्यों नहीं अपनाते थे। जेल के नाम से ही काँप उठते थे मानों वहाँ इंसान को ज़ंजीरों में रखा जाता हो, लोहे से दागा जाता हो और सुबह से लेकर शाम तक उसे कोड़े लगाए जाते हो। कैसे मध्ययुगीन विचार थे ये ? जेल से ज़्यादा अच्छी जगह कौन–सी हो सकती थी। नियमों का पालन करने पर यहाँ बाहर की दुनियां की बजाय ज़्यादा तारीफ मिलती है। मैं दूसरे कैदियों के साथ खाना – खाता था और उन्हीं के साथ सामाजिक जीवन व्यतीत करता था। पचास एकड़ के इलाके में मैं आज़ादी से घूम – फिर सकता था । नये कैदी जेल में आकर पहले कुछ दिन उदास और क्षुब्ध रहते थे। मैं उन्हें समझाता, "दीवारों को भूल जाओ तो सुखी रह सकोगे।" मुझे उन लोगों की बात सोचकर हँसी आती थी जो जेल विचार–मात्र में आतंकित हो उठते थे। दो साल बाद जब मुझे जेल से बाहर जाना पड़ा तो आंसुओं से मेरा गला रूंध गया। मेरी ख्वाहिश हुई कि काश मैंने इतना रुपया वकील पर बर्बाद न किया होता । उस जेल में स्थायी रूप से रहने में मुझे खुशी होती।" अतः जेल का परिवेश मूल्यों की शिक्षा दबे, एक दूसरे के साथ प्रेम से रहने की शिक्षा देता है।

मंगला प्रदेश का प्राचीन मंदिर भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। मंगल ग्राम नदी के किनारे स्थित है। नदी के दूसरे छोर पर एक प्राचीन मंदिर है। जहाँ पर चार बाहों वाले एक लम्बे देवता की मूर्ति थी जिसके एक हाथ में चक्र था और दूसरे हाथ में राजदण्ड था। काफी समय से यह मंदिर उपेक्षित पड़ा था । जेल से निकलने के पश्चात् जब राजू इस जगह पहुँचता है तो वह एकाएक स्वामी बन जाता है। दूसरों की सहायता का भाव लिए राजू एक स्वामी के रूप में पूरे भारत में एकाएक प्रसिद्ध हो जाता है। लेखक ने मंदिर नुमा परिवेश चित्रित कर ग्रामीणों की आस्था का वर्णन भी किया है। इसके माध्यम से यह बताने का प्रयास

किया है कि धार्मिक स्थल तथा इन स्थलों पर रहने वाले संत महात्मा किस प्रकार लोगों का मार्गदर्शन करते हैं और उनके सुखों को विशेष महत्व देते है। ग्रामीणों की श्रद्धा उनके व्यवहार और स्वभाव के कारण एक आडम्बरी व्यक्ति भी स्वमी के पद को प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार परिवेश वातावरण की दृष्टि से गाइड उपन्यास की रचना सार्थकता लिए हुए है।

10.3.4 उद्देश्य

उद्देश्य को दृष्टि में रखकर ही उपन्यास की वस्तु रचना की जाती है। उद्देश्यपूर्ण रचना ही लेखक और पाठक के मध्य एक सेतु स्थापित करती है। 'गाइड' आर. के. नारायण कृत ऐसी कृति है जिसमें लेखक कई उद्देश्यों को एक साथ लेकर चला है। इसका मुख्य उद्देश्य है राजू के जीवन संघर्ष का वर्णन करना। एक साधारण परिवार में जन्म लेने के पश्चात् वह दुकानदारी संभालता है पर शीघ्र ही वह टूरिस्ट गाइड बन जाता है । इसी व्यवसाय में आकर वह टूरिस्ट रोज़ी की ओर आकर्षित हो जाता है। उसके सम्पर्क में आकर वह टूरिस्ट गाइड से उसे नर्तकी बनाने हेतु, उसका प्रेमी व सहायक बन जाता है । अधिक लोभ के कारण वह रोज़ी के हस्ताक्षार करने के अपराध में कारावास चला जाता है और वहाँ से छूटने पर वह स्वामी के रूप में ख्याति प्राप्त कर लेता है। इसी सारी यात्रा में वह किन–किन कठिनाईयों का सामना करता है इसका चित्रात्मक वर्णन इस रचना में किया गया है। रचना का दूसरा उद्देश्य है रोज़ी को एक सफल नृत्यांगना बनाना। इसमें लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि जन्मजात प्रतिभा को कभी दबाया नहीं जा सकता कयोंकि जैसे ही परिस्थिति थोड़ी अनुकूल होगी वह प्रतिभा स्वतः ही उभर आएगी। रोज़ी को नृत्य की घुटी अपनी माँ से मिली थी पर मार्को के साथ विवाह करवाकर वह नृत्य का परित्याग कर देती है। पर राजू के साथ मिलने पर और उससे प्रोत्साहन पाकर वह एक सफल नर्तकी बन जाती है। इसके लिए वह अपने दाम्पत्य संबंधों को भी ताक पर रख देती है।

रचनाकार का उद्देश्य पाठकों को मालगुड़ी के अप्रतिम सौंदर्य से परिचित करवाना है। दक्षिणी भारत का यह स्थान रचना में ऐसे वर्णित होता है कि पाठक उसके प्राकृतिक सौंदर्य से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते । इसलिए पढ़ने के बाद पाठक का मन भी उसे देखने के लिए लालायित हो उठता है। दक्षिण भारत के मलगुड़ी क्षेत्र की संस्कृति का वर्णन कर लेखक ने वहाँ के रीति – रिवाजों, लोक विश्वासों, खान–पान, त्योहार – उत्सवों पर प्रकाश डालकर भारत जो कि बहु संस्कृतियों का देश है उसके दक्षिणी आंचल की संस्कृति का परिचय दिया है। 'गाइड' उपन्यास के माध्यम से लेखक ने टूरिस्ट गाइड के व्यवसाय पर भी प्रकाश डाला है। यह एक ऐसा व्यवयास है जिसमें गाइड का बहुर्मुखी ज्ञानी होना आवश्यक है। अतः बहुत से पढ़े–लिखे लोग इस व्यवसाय में भी आ सकते हैं। इसके अतिरिक्त राजू और रोज़ी के प्रेम संबंधों पर प्रकाश डालते हुए विवाहेतर संबंधों पर भी प्रकाश डाला है और इसके परिणामों से भी परिचित करवाया है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने लोगों की धार्मिक आस्था पर भी प्रकाश डाला है। हमारे भारत की यह त्रासदी भी है कि भारतीय किसी भी संत – महात्मा पर ऐसे विश्वास कर लेते हैं कि मानो वही उनके जीवन के सुख–दुख के लिए जिम्मेदार हैं। राजू मंगल वासियों को बता भी देता है कि वह कोई

माहत्मा या संत नहीं है पर वे लोग उस पर ऐसी आस्था रखते हैं कि वास्तव में उसे स्वामीत्व वरण करना पड़ता है।

10.4 सारांश :

इस प्रकार वस्तु विन्यास की दृष्टि से उक्त उपन्यास के सभी तत्व मिलकर इसे सार्थकता प्रदान करते हैं। लेखक ने इस उपन्यास में एक ऐसे परिवेश को जीवंत किया है जो पात्रों को अपना विकास करने में सहायक है।

10.5 अभ्यासार्थ प्रश्न :

प्र1. वस्तु–विन्यास की दृष्टि से 'गाइड' उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए ।

——

——

——

——

——

——

——

——

प्र2. 'राजू' का चरित्र–चित्रण करें ।

——

——

——

——

——

——

——

——

प्र3. रोजी उर्फ नलिनी के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालें ।

——

——

——

——

——

——

——

——

प्र4. 'गाइड' उपन्यास के परिवेश एवं वातावरण पर टिप्पणी कीजिए ।

——

——

——

——

——

——

——

——

प्र5. 'गाइड' उपन्यास के उद्देश्य पर संक्षिप्त टिप्पणी करें ।

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

——————————————————————————————————————

10.6 पठनीय पुस्तकें :

1. 'गाइड' – आर. के. नारायण

——————:::::——————

M.A Hindi | **UNIT - III** | **Lesson No. 11**
Course Code : Hin- 403 | | **Semester - IV**

'गाइड' उपन्यास की सोद्देश्यता

11.0 रूपरेखा

11.1 उद्देश्य

112 प्रस्तावना

11.3 'गाइड' उपन्यास की सोद्देश्यता

11.4 सारांश

11.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

11.6 पठनीय पुस्तकें

11.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत पाठ के अध्ययनोपरान्त आप 'गाइड' उपन्यास की रचना के पीछे लेखक के उद्देश्य को पूर्ण रूप से समझ सकेंगे ।

11.2 प्रस्तावना

जीवन में हर प्रकार की वस्तु, स्थान, व्यक्ति के नाम का महत्व अक्षुण्ण है क्योंकि नाम ही अमूक को मुखरित करने का प्रथम साधन है फिर साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि की रचना हेतु शीर्षक की आवश्यकता होती है। शीर्षक रचना का विशिष्ट आकर्षण होता है। वह उसका केन्द्र होता है और उसके सार की सूचना देता है। अतः यह आवश्यक है कि शीर्षक संक्षिप्त एवं सार्थक हो तथा प्रमुख पात्र, घटना, मनोवृत्ति समस्या अथवा स्थान से संबद्ध हो । उपन्यास जीवन के विस्तृत फलक को प्रस्तुत करने वाली विधा है । उपन्यासकार जीवन के बृहत अनुभवों को रचना में बांधने का प्रयास करता है तो उसी उपन्यास कला को उपयुक्त शीर्षक की आवश्यकता रहती है। शीर्षक से ही रचनाकार की सूझबूझ और

उन्नत उपन्यास कला के दर्शन होते हैं। उपन्यास के शीर्षक का नाम लेने पर यदि रचना का पूर्ण परिचय एवं उद्देश्य पाठक के सम्मुख आ जाए तो रचना उद्देश्पूर्ण कहलाती है। सोद्देश्यता की दृष्टि से 'गाइड' उपन्यास का शीर्षक कितना सार्थक है ? यह प्रश्न विचारणीय है।

11.3 'गाइड' उपन्यास की सोद्देश्यता :

'गाइड' उपन्यास साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत आर॰ के॰ नारायण की सफलतम् कृति है जिस पर भारतीय सिनेमा जगत् ने 1975 में 'गाइड' नाम से फिल्म बनाई जिसने सफलता के शिखरों को चूमा है। प्रस्तुत उपन्यास का नामकरण रचनाकार ने व्यक्ति विशेष, घटना विशेष अथवा स्थान विशेष पर न करके कर्म विशेष अथवा व्यवसाय केन्द्रित रखा पर धीरे–धीरे यह शीर्षक व्यवसाय उन्मुखता से वृहदाकार होता गया और पूरी रचना की कथावस्तु का नायकत्व करता कथा नायक राजू दर्शकों को दर्शनीय स्थलों की यात्रा करवाता है वह उन्हें उन स्थानों के ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं स्थानीय महत्व से परिचित करवाता है इसलिए उस क्षेत्र में गाईड के नाम से जाना जाता है । 'राजू गाइड'। गाइड का अर्थ है – निर्देश करना, मार्ग दर्शन करना। रचना में उसका नाम ही 'गाइड' का पर्याय लगता है । उपन्यास में रोज़ी (कथा–नायिका) के प्रेम में पड़ जाने के कारण चाहे वह यह व्यवयास छोड़ देता है पर फिर भी उसकी मार्गदर्शक प्रवृत्ति रचना में इस प्रकार व्याप्त रहती है कि बहुत अधिक विचार करने पर भी पाठक इसका कोई अन्य शीर्षक सोच ही नहीं सकता। शीर्षक की सोद्देश्यता के विचारणीय बिंदू निम्नलिखित हैं :

गाइड : एक व्यवसाय के रूप में :

उक्त उपन्यास में नायक राजू मलगुड़ी (दक्षिणी भारत) में भ्रमण करने वाले सैलानियों के लिए गाइड का काम करता है और उन्हें दिखाए जाने वाले प्रत्येक स्थान का व्यौरेबार यात्री की रूचि अनुकूल पूर्ण चित्र खींच देता है। वह अपने व्यवसाय की प्रवृत्ति तथा यात्रियों की प्रवृति के विषय में कहता है – टूरिस्ट गाइड बनकर मैंने एक बात यह भी सीखी थी कि भोजन की तरह भ्रमण के मामले में भी हर आदमी की अपनी अलग रूचि होती है। कुछ लोग जल–प्रपात देखना चाहते हैं, कुछ को खण्डहरों में दिलचस्पी होती है । कुछ लोग किसी देवता को पूजना चाहते हैं, कुछ लोग हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्लांट में दिलचस्पी रखते हैं। कुछ लोगों को मेम्पी शिखर पर बने शीशों से ढके बंगले जैसी जगह पसन्द आती है जहाँ से वो सौ मील दूर के क्षितिज को और शिखर के पास घूमते जंगली जानवरों को देख सकते हैं। इनमें भी दो किस्म के लोग होते हैं। कवि स्वभाव के लोग तो प्राकृतिक सौंदर्य देखकर संतुष्ट हो जाते हैं और वापस लौटना चाहते हैं । दूसरे लोग प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द लेने के साथ–साथ वहाँ बैठकर शराब भी पीना चाहते हैं।

इन पंक्तियों में यात्रा पर आने वाले लोगों की मानसिकता का पता चलता है । एक अच्छा गाइड

वही है जो यात्रियों की इस मानसिकता को ध्यान में रखते हुए ही अपना कार्य करता है। उसे उस क्षेत्र में आने वाले सैलानियों की इस मानसिकता का पूरा पता होना चाहिए तभी वह उनका सही मार्गदर्शन कर पाता है । राजू गाईड भी इस विषय में सजग है जैसे कि निम्नलिखित पंक्तियों से पता चलता है :–

किसी टूरिस्ट के आते ही मैं यह देखता था कि वह सामान के लिए कुली बुलाता है या हर चीज़ को हाथों से उठाता था। आंख झपकते ही मुझे इन बातों पर गौर करना पड़ता था। स्टेशन से बाहर आकर वह होटल की तरफ़ पैदल जाता है, टैक्सी बुलाता है या एक घोड़ेवाले इक्के के साथ सौदेबाज़ी करता है, यह बातें भी मुझे देखनी पड़ती थी। उसकी हर गतिविधि का सूक्ष्म निरीक्षण करता और कोई सुझाव न देता और उसकी रूचि जानने की कोशिश करता था । मैं उसे बताता कि मलगुड़ी में ऐतिहासिक और प्राकृतिक सौंदर्य और आधुनिक विकास की दृष्टि से बहुत से स्थान दर्शनीय हैं वगैरह–वगैरह।

गाइड का काम करते हुए वह अच्छी भूमिका निर्वाह कर सकता है जो अनुपलब्ध वस्तुओं को भी यात्रियों के लिए उपलब्ध करवा देता है। राजू भी गाइड का काम करने के साथ–साथ यात्रियों की रूचि को ध्याान में रखते हुए हाथी के झुण्ड को पकड़ने वाले दृश्यों को दिखाने, शेर दिखाने, नागराज को दिखाने की व्यवस्था भी कर देता था क्योंकि इसके लिए हाथी पकड़ने वालों तथा सपेरों के साथ रसूख बनाए रखना पड़ता है इस का वर्णन करते हुए राजू स्वयं बताता है कि जब हाथी पकड़ने का वक्त आता था तो सिर्फ उन्हीं लोगों को अहातों के फाटकों में से गुज़रने दिया जाता था जो मेरे साथ आते थे। मैं लोगों को छोटी–छोटी टोलियों में अपने साथ ले जाता और उन्हें यह समझाते–समझाते मेरा गला बैठ जाता "जानते हो, जंगली हाथियों के झुण्ड पर महीनों पहले से निगरानी रखी जाती है ..... ।" एक सफल गाइड वही बन सकता है जो यात्री की इच्छा और रूचि को ध्यान में रखते हुए उसे स्थानों का ज्ञान देता। राजू के विषय में रचनाकार लिखता है – "यदि कोई तीर्थ यात्री की रूचि लिए होता तो उसे हर पचास मील के इलाके में एक दर्जन मन्दिर दिखा सकता था। मेप्पी शिखर से लेकर सरयू के किनारे बने अनेक पवित्र स्थानों पर उसे स्नान के लिए ले जा सकता था । यदि कोई इस स्थान की प्राकृतिक छटा को देखना चाहता तो वह उन्हें सुरम्य प्रकृति की गोदी में बिठा देता और यदि कोई वहाँ की पुरातन संस्कृति, स्थापत्य कला, मूर्ति कला, पत्थर कला को पसन्द करता तो उनको पुरानी गुफाओं की सैर करवा देता । जैसे मार्को पुरातन कला के अध्ययन हेतु आता है और राजू एक अच्छे गाइड की तरह उसे उन सभी स्थानों पर घुमाने ले जाता है फिर चाहे वहाँ रात भर भी रूकना पड़ता है।

गाइड : वैयक्तिक निर्देशन के रूप में

कथावस्तु तथा घटनाओं के संघटन की सामग्री प्रस्तुत कृति के नामकरण की वैयक्तिक मार्गदर्शन के संदर्भ में सार्थकता सिद्ध करती है। कृति का आरंभ ही राजू द्वारा बेलान को गाइड (निर्देशित करने) करने के साथ होता है। राजू से मिलने के पश्चात ही वेलान को लगता है कि उसके आशीर्वाद से ही उसके

व्यक्तिगत जीवन की मुसीबतें कम हुई हैं। दूसरी ओर अपनी बहन को सही मार्ग पर लाने का श्रेय भी वह राजू को ही देता है। उसकी बहन जो शादी से इंकार कर चुकी थी जो दिन भर कोठरी में बैठी कुढ़ती रहती थी उसे ऐसा भी लगता था कि शायद उस पर कोई चुड़ैल सवार हो गई हो जब उसने इस विषय में राजू से बात की और कहा .... "तो मैं उस लड़की का क्या इलाज करूँ श्रीमान ?" उसे यहाँ ले आओ। मैं उससे बात करूँगा" राजू ने शान से कहा । फिर जब उसकी बहन राजू से मिल लेती है उसके पश्चात उसका जीवन ही बदल जाता है वेलान उसमें आए हुए परिवर्तन के विषय में बताते हुए कहता है, "आज सुबह हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने बालों को तेल लगाकर सलीके से गूंथा था और चोटियों में फूल लगाए थे। वह खुश नज़र आ रही थी। कहने लगी, "मैंने इतने दिन आप लोगों को तंग किया। आप सब मुझे माफ कर दीजिए । मैं बड़े–बूढ़ों का कहना मानूंगी।" इस तरह से राजू के निर्देशानुसार वेलान अपने जीवन की समस्याएँ सुलझाने में सफल हो गया।

राजू कथानायिका रोज़ी को भी गाइड करता है। वह उसके मार्गदर्शन से ही एक सफल नृत्यांगना बनती है। मार्को से विवाह करने के पश्चात् जो उसकी प्रतिभा उससे खो गई थी उसको निखारने का कार्य राजू की देख रेख में ही हो पाता है। रोज़ी को गाइड करने के विषय में स्वयं राजू वेलान को बताता है – "मेरे जीवन और चेतना में रोज़ी ही एक यथार्थ रह गई थी। मेरे मन की सारी शक्तियाँ उसे अपने निकट रखने में लगी थीं, ताकि वह सारा वक्त मुस्कुराती रहे । इनमें से एक काम भी आसान नहीं था । मुझे सारा वक्त जोंक की तरह उससे चिपके रहने में बड़ी खुशी होती"

उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर गम्भीर स्वर में कसम खाई "तुम्हारी खातिर मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ। तुम्हारा नाच देखने के लिए मैं अपनी जिंदगी भी कुर्बान कर सकता हूँ। तुम जो भी हुक्म दोगी, मैं करूँगा।" वह खिल उठी। नाच के जिक्र से उसकी आँखों में एक नये उल्लास की चमक आ गई। मैं भी उसके साथ बैठकर उसके दिवास्वप्नों में सहायता देने लगा।" राजू जब उसकी नृत्य में सहायता करता तो उसकी प्रतिक्रिया के बारे में वह बताता है – नृत्य बंद करके वह मेरे पास आई और अपने शरीर का सारा भार मेरे ऊपर फेंकती हुई उल्लास भरे स्वर में बोली, "कितने प्यारे हो तुम ! तुम मुझे एक नई जिंदगी दे रहे हो।" रोज़ी को एक अच्छी नृत्यांगनां बनाने के लिए वह उसके लिए प्रोग्राम भी तय करता है, पखावज तथा अन्य वादकों का प्रबन्ध भी करता है यहाँ तक कि अपने घर में उचित जगह न होने के कारण किराये के मकान की व्यवस्था करता है। इसके अतिरिक्त उसके लिए स्थान – स्थान पर 'शो' की व्यवस्था करना और फिर उसके पश्चात् उसे सफलता तक पहुँचाना सब राजू की दिनचर्या के अंग बन जाते हैं। नृत्य करते समय दर्शकों की एवं मंच की देख–रेख भी उसी के हाथ में रहती है। इसके साथ ही वह उसे जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी गाइड करता है। रोज़ी से नलिनी बनी वह नृत्यांगना राजू का इस सबके लिए धन्यवाद करते हुए कहती, "मैं सात जन्मों में भी तुम्हारा कर्ज नहीं चुका सकती। "

प्रस्तुत रचना में राजू की माँ भी जीवन – अनुभवों के आधार पर राजू को तब – तब गाइड करती

है जब – जब उसे लगता है कि वह जीवन के सही रास्ते से भटक गया है। उदाहारणतः जब वह माँ को रोज़ी के विषय में बताता है कि वह बहुत अच्छी है और नर्तकी है तो माँ उसे सावधान करते हुए कहती है, "इन नाचने वाली लड़कियों के साथ कभी सरोकार न रखना यह सब बड़ी खराब होती हैं।" इसके अतिरिक्त अन्य कई स्थानों पर वह अपने पुत्र का मार्गदर्शन करती है पर राजू पर जब इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता तो वह अपने भाई को बुला लेती है । वह भी उसे जीवन की ऊँच–नीच से परिचित करवाने का प्रयास करता है पर रोज़ी के प्रेम के कारण उसके जीवन की दिशा ही बदल जाती है । फिर भी संन्यासी बनने पर वह इन सभी विगत घटनाओं से सीखता है । इस प्रकार इस रचना में व्यक्तिगत रूप में भी गाइड करने के दायित्व का निर्वाह हुआ है।

गाइड : भक्तों के मार्गदर्शक रूप में

सन्यास एक ऐसी अवस्था है जिसमें त्यागी और विरक्त होकर सब कार्य निष्काम भाव से किए जाते है। राजू कारावास से बाहर आकर अपने पूर्व जीवन से सन्यास लेकर जब स्वामी की प्रसिद्धि पा लेता है वहाँ पर भी वह ग्रामीणों तथा उसके प्रति श्रद्धा रखने वालों का मार्गदर्शन करके एक गाइड की भूमिका निभाता है। वेलान के जीवन की समस्याएँ सुलझ जाने पर ग्रामीणों को लगा था कि उन पर भी स्वामी की कृपा होगी इसलिए वे रोज शाम को दिन – भर खेत में काम करने के बाद घाट की सीढ़ी पर बैठ जाते और लगातार राजू की तरफ देखते रहते फिर राजू चाहे उनसे संबोधित होता या नहीं। राजू चाहे प्रारम्भ में लोभवश ही सही उनका समय – समय पर मार्ग दर्शन करता है । वह मंदिर के हाल में लड़कों को पढ़ाने की योजना बनाता है, मास्टर का प्रबन्ध करता है और मास्टर को जिम्मेदारी देते हुए कहता है, "मैं लड़कों को साक्षर और अक्लमंद देखना चाहता हूँ" स्वामी राजू की इस परोपकारिता का असर मास्टर पर भी पड़ा । उसने कहा, "मैं आपके निर्देशन में कुछ भी करने के लिए तैयार हूँ।" जनता के हित के कार्य करते हुए उनका मार्गदर्शन करते हुए उसकी ख्याति और प्रतिष्ठा इतनी बढ़ जाती है जिसकी वह स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकता था। ...... उसकी सभाओं में इतने लोग जमा होते थे कि मन्दिर के बरामदों और नदी के किनारे तक उन्हें बैठने की जगह न मिलती थी। रचनाकार ने राजू स्वामी के विषय में लिखा है :

> अब वह दुनिया का बन गया था। उसका प्रभाव असीम था वह सिर्फ भजन नहीं गाता था, या दार्शनिक उपदेश ही नहीं देता था, बल्कि अब बीमार लोगों को दवा–दारू भी बताता था। माताएँ उसके पास उन बच्चों को लेकर आती थीं जिन्हें रात को नींद नहीं आती थीं। वह उनका पेट टटोलकर एक जड़ी पीसकर खिलाने का आदेश देते हुए कहता, "अगर बच्चे को आराम न हो तो फिर मेरे पास लाना।" लोगों में यह आस्था पैदा हो गई थी कि वह जिस बच्चे के सर को अपने हाथ से सहला देता है। वह चंगा हो जाता है। खैर, लोग उसके पास अपनी पैतृक सम्पत्ति के बंटवारे के झगड़े को लेकर आते ही थे। इन कार्यों के लिए उसने दोपहर के बाद कई घंटे निश्चित कर दिए थे।"

अंततः अपने संन्यासी पन की रक्षा हेतु अपने भक्तों को अन्न और खुशियाँ देने के लिए वह बारह

दिन का उपवास करता है जिसमें वह अन्न का परित्याग कर देता है। इसके कारण लोग उसे अपने जीवन का गाइड समझते हैं। अपने उपवास की प्रतिज्ञा के लिए वह न केवल उन ग्रामीणों में अपितु पूरे देश में एकाएक प्रसिद्धि पा जाता है। तथा उस समय वह समस्त भारत का मार्गदर्शन करता है। सरकार उसका मार्गदर्शन पाकर आगे के निर्णय लेती है। फिर अतंतः वह अपने श्रद्धालुओं के लिए अपने आप को न्यौछावर कर देता है।

11.4 सारांश :

इस प्रकार शीर्षक देने में आर. के. नारायण ने 'गाइड' को अपनी कथावस्तु और रूचि के अनुकूल पाकर पूर्ण घटनाओं को इसके साथ जोड़ा है। 'गाइड' नाम देकर उपन्यासकार अपने उद्देश्य में सफल हुआ है। इस प्रकार आदि से अंत तक यह रचना किसी न किसी रूप में पाठक को इतना प्रभावित करती है कि राजू गाइड यात्री गाइड से ऊपर उठते हुए, व्यक्तिगत गाइड और वैयक्तिक गाइड से सम्पूर्ण देश का गाइड बन बैठता है। शीर्षक संक्षिप्त, कौतूहलपूर्ण, नवीन और सार्थक भी है। उपन्यास की निम्नलिखित पंक्तियाँ इसकी सार्थकता और सोद्देश्यता को स्पष्ट करने में समर्थ है – यात्री आपस में एक दूसरे से उसकी सिफारिश करते हुए एक बार जरूर कहते थे, "अगर राजू तुम्हारा गाइड हुआ तो तुम सब कुछ जान जाओगे। वह न सिर्फ तुमको हर दर्शनीय स्थान दिखा देगा, बल्कि और सब बातों में भी तुम्हारी मदद करेगा।"

11.5 अभ्यासार्थ प्रश्न :

प्र1. 'गाइड' उपन्यास के शीर्षक की सोद्देश्यता को स्पष्ट कीजिए ।

____

____

____

____

____

____

____

____

प्र2. 'गाइड' उपन्यास के उद्देश्य को किन विचारणीय बिंदूओं के सहयोगे से समझ सकते हैं। विस्तार पूर्वक चर्चा करें ।

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

प्र3. शीर्षक की सोद्देश्यता 'गाइड' उपन्यास के सन्दर्भ में स्पष्ट करें ।

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

——————————————————————————————

11.6 पठनीय पुस्तकें :

1. 'गाइड' – आर. के. नारायण

————::::————

M.A Hindi **UNIT - III** **Lesson No. 12**
Course Code : Hin- 403 **Semester - IV**

'गाइड' उपन्यास का शिल्प विधान

12.0 रूपरेखा

12.1 उद्देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 'गाइड' उपन्यास का शिल्प विधान

12.4 सारांश

12.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

12.6 पठनीय पुस्तकें

12.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत पाठ के अध्ययनोपरान्त आप 'गाइड' उपन्यास के शैल्पिक–विधान को समझ सकेंगे । किसी रचना में शिल्प–विधान की क्या भूमिका रहती है इससे भी अवगत होंगे ।

12.2 प्रस्तावना :

'शिल्प' शब्द 'शील' धातु में 'प' प्रत्यय जोड़ने से बना है जिसमें शील का अर्थ है – ध्यान करना, पूजन करना, अर्चना करना, अभ्यास करना जबकि 'प' का प्रयोग प्रायः पीने के अर्थ में होता है। अतः व्युत्पत्तिपरक अर्थ की दृष्टि से 'शिल्प' को ध्यान या अभ्यास को पीने वाले के संदर्भ में लिया जाता है। शिल्प अंग्रेज़ी के टेकनीक (Technique) का हिन्दी अनुवाद है। यदि इसका कोशपरक अर्थ देखा जाए तो – 'हाथ से तैयार करने की कला', 'दस्तकारी', 'कारीगरी' को शिल्प की संज्ञा दी गई है। वास्तव में आरंभ में मूर्तिकला और वास्तुकला के क्षेत्र में प्रयोग किया जाने वाला यह शब्द साहित्य में प्रवेश करता है तो इसका अर्थ रचना की कौशलता एवं सुन्दरता व्यक्त करने से लिए हो जाता है । ओम प्रकाश शर्मा के अनुसार,

"शिल्प विधि भी है और विधान भी। शिल्प के अंतर्गत वे सभी उपाय विधियाँ, प्रविधियाँ, तरीके क्रियाएं – प्रक्रियाएं सम्मिलित हैं जिनके द्वारा कलाकार कलात्मक सौंदर्य को सिद्ध करता है" दूसरे शब्दों में साहित्य में भाषा पर अवलम्बित कला – रूप को ही 'शिल्प' का नाम दिया गया है। इसके अंतर्गत सहित्यकार अपनी कल्पना, संवेदना तथा अनुभूति को शब्दों के कुशल प्रयोग से प्रस्तुत करता है। वस्तुतः शिल्प ही किसी उपन्यास की सफलता – असफलता का मानदंड है। यह वह साधन है जिसके द्वारा उपन्यासकार अपने विषय की खोज, जाँच – पड़ताल और विकास करता है। इसके अंतर्गत उपन्यासकार वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, प्रतीकात्मक, बिम्बग्राही, सांकेतिक, पूर्वदीप्ति आदि शिल्प विधियों का प्रयोग करते हुए रचना को सुन्दर, आकर्षक और रोचकपूर्ण बनाता है।

12.3 'गाइड' उपन्यास का शिल्प विधान :

आर. के. नारायण अंग्रेज़ी के सशक्त एवं ख्याति प्राप्त कथाकार हैं। यह उन भारतीय लेखकों में हैं जिन्हें विश्वस्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत 'The Guide' उनकी कीर्ति का आधार स्तम्भ है। रचनाकार का विचित्र शैल्पिक प्रयोग ही रचना को उत्कृष्ठ बनाता है । प्रेम पर आधारित यह उपन्यास प्रेम की परिपक्वता के साथ – साथ यथार्थ जीवन की कई वास्तविकताओं को पाठक के सम्मुख लाता है। कृति की सफलतम् अभिव्यक्ति हेतु कृतिकार ने विषयानुसार कई शिल्प विधियों की योजना की है जो रचना को गरिमा प्रदान करते हैं और रचनाकार की अभिव्यक्ति क्षमता से भी परिचित करवाते हैं। अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवादित इस उपन्यास के शिल्प को निम्नलिखित शीर्षकों में देखा जा सकता है :

वर्णनात्मक शिल्प :– इस विधि में उपन्यास में वर्णित जीवन क्षेत्र का विवरण पूर्ण ढंग से बढ़ा – चढ़ा कर किया जाता है । कथावस्तु अधिकतर दुहरी या तिहरी होती है । इस विधि की रचना में एक विशेष विचार अथवा समस्या को उठाया जाता है और फिर घटनाओं, पात्रों, संवादों तथा भाषण योजना के द्वारा उसे सरलतापूर्वक चित्रित किया जाता है। 'गाइड' उपन्यास में आर. के. नारायण ने दुहरी कथा को लिया है। एक ओर कथानायक राजू की कथा तथा दूसरी ओर रोज़ी के जीवन प्रसंगों को उठाया है। एक ओर रचनाकार ने ऐसे उच्च वर्ग को अपनी लेखनी का विषय बनाया है जो केवल 'स्व' को महत्व देते हैं। जिसके कारण उनके परिवार या आसपास कई प्रतिभाएं कुंठित हो जाती हैं इस समस्या की और भी संकेत किया है। मार्को इस उपन्यास में उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है पर वह सामाजिक रूप में नितांत अभिन्न है। जैसे कि कथानार ने लिखा है। "मार्को बिल्कुल अव्यावहारिक व्यक्ति था, नितान्त असहाय आदमी। उसे सिर्फ एक ही काम आता था, प्राचीन वस्तुओं की नकल करना और उनके बारे में लिखना। उसका दिमाग इस काम में ही रमा रहता था। जीवन की व्यावहारिक बातें उसके अनुभव और कार्य–क्षेत्र से बाहर की चीजें थीं। उनका उसे कोई ज्ञान न था। ..... मार्को करीब एक महीने तक पीक हाउस में रहा । इस बीच उसका सारा प्रबंध मेरे हाथों में था । खर्च की वह परवाह नहीं करता था उन्होंने अभी भी अपने

पास रखा था। उसने गफ्फूर की कार स्थायी रूप से किराये पर ले ली थी मानो वह उसका मालिक हो। पीक हाउस और शहर के बीच कार कम से कम एक बार रोज चक्कर लगाती थी।" पर मार्को के कारण उसकी पत्नी रोज़ी की प्रतिभा कुंठित होती है इस बात की ओर उसका लेशमात्र भी ध्यान नहीं था इसके विषय में लेखक की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं – शायद उसने शादी भी इसलिए की थी कि कोई उसकी देखभाल करे, लेकिन उसने चुनाव गलत किया था – वह लड़की तो खुद ही हमेशा सपनों में खोई रहती थी। उसका पति अगर उनकी देखभाल कर सकता तो वह ज़िन्दगी में बहुत तरक्की कर सकती थी।" एक अन्य स्थान पर लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि कैसे कथानायिका अपने अंदर के हुनर को मारकर अपने को किसी तरह उच्च समाज में फिट करती है। पर यदा–कदा अवसर आता है तो वह यह अवश्य सोचती है कि उसका यह निर्णय उचित नहीं था इसलिए वे राजू से कहती है, "मै देवदासियों के परिवार में पैदा हुई थी, जिसने परंपरा से मन्दिरों में नृत्य करने के लिए अपने को उत्सर्ग कर दिया था । माँ, मेरी दादी और उससे भी पहले उनकी माँ और दादी सभी देवदासियाँ थीं। मैं जब बच्ची थी, उस वक्त से ही गांव के मन्दिर में नाचने लगी थी ...... शादी का फैसला करने से पहले हमने कई बार आपस में बहस मुबाहिसा किया था । लेकिन मेरे परिवार की औरतें बहुत प्रभावित थीं और वे खुशी से फूली नहीं समाती थी कि एक इतना धनी आदमी हमारे वर्ग में शादी करने आ रहा है, और यह तय हुआ कि अगर अपने परंपरागत हुनर को छोड़ना जरूरी हो, तो इस त्याग इस सम्बन्ध के मुकाबले में बड़ा नहीं है।" अंततः राजू का आश्रय पाकर वह एक बहुत बड़ी नृत्यांगना बन जाती है।

दूसरी कथा राजू पर केन्द्रित है एक दुकानदार का पुत्र होकर पहले वह दुकान चलाता है फिर मलगुड़ी रेलवे स्टेशन पर काम करते हुए वह गाईड बन जाता है। इसलिए उसके विषय में यात्री यह अवश्य कहते थे, "अगर राजू तुम्हारा गाईड हुआ तो तुम सब कुछ जान जाओगे। वह न सिर्फ तुमको हर दर्शनीय स्थान दिखा देगा, बल्कि और सब बातों में भी तुम्हारी मदद करेगा।" कथाकार एक स्थान पर राजू के विषय में लिखता है कि दूसरे लोगों के काम आने और मतलब की बातों में फँसा लेना जैसे उसका स्वभाव बन गया था।" अपने इसी स्वभाव के कारण वह रोज़ी के जीवन का मार्गदर्शक बन जाता है । इसलिए जब रोज़ी उसे कहती हैं कि मेरा नाच देखकर तुम्हें भी चिढ़ होती है तो उसका उत्तर देते हुए राजू ने कहा "तुम्हारी खातिर मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ। तुम्हारा नाच देखने के लिए मैं अपनी ज़िन्दगी भी कुर्बान कर सकता हूँ। तुम जो भी हुक्म दोगी, मैं करुँगा।" वास्तव में फिर वह राजू के आश्रयत्व को पाकर भारत की एक बहुत बडी नृत्यांगना बनती है। जब नायक उसे पूर्ण रूप से पाने के लिए उसके फर्जी हस्ताक्षर करता है तो उसे जेल जाना पड़ता है। जेल से छूटते ही वह जब अपना नया जीवन आरंभ करना चाहता है तो वेलान से होने वाली उसकी मुलाकात उसे स्वामी बना देती है। जब वह वर्षा लाने के लिए बारह दिन का उपवास करता है तो वह एकाएक महान् हो जाता है। जिसके विषय में उपन्यासकार के निम्नलिखित शब्द सटीक बैठते हैं, "लोगों की एक बड़ी भीड़ महात्मा के गिर्द भक्ति भाव से खड़ी रहती थी । वे राजू

के चरणों के नीचे से जल लेकर अपने सिरों पर छिड़कते थे।" इस प्रकार राजू के जीवन में आने वाले सारे मोड़ कथाकार की लेखनी से इस प्रकार वर्णित हुए हैं कि पाठक उन्हें पढ़कर उनका विवरण जानकर अवश्य ही प्रभावित होता हैं।

विश्लेषणात्मक शिल्प :– उपन्यास रचना में विश्लेषणात्मक शिल्प का महत्वपूर्ण योगदान है। इस शिल्प में उपन्यासकार विषय – वस्तु, विचार तथा वातावरण को नये ढंग से प्रस्तुत करता है। रचनाकार असाधारण व्यक्ति की कथा बताते हुए उसके अंतर्मन में चलने वाले द्वन्द्व का विश्लेषणात्मक वर्णन करता है। मनोविज्ञान से संबंध रखने के कारण इसे मनोविश्लेषणात्मक शिल्प की संज्ञा भी दी गई है। इससे पात्रों के मन में व्याप्त भय, क्रोध, प्रेम, ईर्ष्या, स्वार्थ का सूक्ष्म वर्णन किया जाता है। 'गाइड' उपन्यास से रचनाकार ने इस विधि को अपनाकर पात्रों की मनः स्थिति का सजीव अंकन किया है। राजू को जब बलात् वेलान द्वारा स्वामी बना दिया जाता है और वे लोग उससे नैतिक उपदेश भी चाहते हैं जैसे कि वेलान कहता हैं।" हम आपकी सहबुद्धि का लाभ उठाना चाहते हैं।" बाकी लोगों ने भी वेलान का समर्थन किया । तब राजू सोचता हैं अब बचने का कोई रास्ता नहीं है। वह सर खपाकर सोचने लगा कि किस प्रसंग से शुरू करूं। क्या वह मलगुड़ी के दर्शनीय स्थानों के बारे में बात करे या कोई नैतिक उपदेश दे या बताए कि किसी जमाने में अमूक अच्छे या बुरे व्यक्ति ने अमूक काम करते समय असफलता से व्यग्र होकर ईश्वर से प्रार्थना की इत्यादि। वह उबने लगा था । लगता था अब वह केवल जेलखाने की जिन्दगी और उसके फायदों के बारे में ही अधिकारपूर्वक बातचीत कर सकता था। खास तौर पर ऐसे व्यक्ति के लिए यह विषय सर्वथा अनुकूल था, जिसे लोग गलती से साधु महात्मा समझ बैठ थे। इन पंक्तियों में लेखक ने राजू के मानसिक द्वन्द्व को चित्रित किया है। यही नहीं रचनाकार रोज़ी उर्फ नलिनी के लिए उसके मन में उठने वाली ईर्ष्या, द्वेष आदि के भावों को भी चित्रित किया है। राजू जब कारावास में आ जाता है तो वहाँ पर भी वह निरन्तर रोज़ी और उसके कार्यक्रमों के विषय में सोचता है। उस समय उसकी मनः स्थिति को लेखक ने इन शब्दों के माध्यम से व्यक्त किया है "लेकिन शुक्रवार और शनिवार को मैं काँपती हुई उँगलियों से 'हिन्दू' का अंतिम पन्ना पलटता था – अंतिम कॉलम के ऊपर हिस्से में हमेशा नलिनी की तस्वीर के साथ यह छपा रहता था कि वह किस संस्था में 'शो' दे रही है और टिकटों का दर क्या है। कभी दक्षिणी भारत के एक कोने में, उससे अगले हफ्ते लंका में कभी बम्बई में और कभी दिल्ली में उसके शो होते थे। उसका साम्राज्य सिकुड़ने के बजाय दिनोंदिन विस्तृत होता जा रहा था। यह देखकर भी जल भुन जाता था कि वह मेरे बगैर भी काम में जुटी हुई है। अब बीच के सोफे पर कौन बैठता था ? मेरी तर्जनी के संकेत के बगैर शो कैसे शुरू हो सकता था ? नाच कब बंद करना है इसका पता नलिनी को कैसे लगता था ? शायद वह लगातार नाचती रहती थी और दर्शकों में इतनी अक्ल नहीं थी कि वे उससे रूकने के लिए कहते थे। यह सोचकर मन ही मन मुझे खुशी हुई 'शो' के बाद उसकी ट्रेन ज़रूर छूट जाती होगी।"

पूर्व – दीप्ति विश्लेषणात्मक शिल्प :– इस विधि में उपन्यासकार कथा को पात्रों के अतीत की स्मृतियों के साथ जोड़कर विकसित करता है। इसमें उपन्यासकार वर्तमान से सम्बन्धित स्थिति को पात्रों के स्मृति अंशों के रूप में बढ़ता हुआ चलता जाता है। कथानायक अथवा नायिका या अन्य पात्र कथा कहते–कहते अकस्मात् प्रसंग के सूत्र को किसी विगत घटना के सूत्र से जोड़ देते हैं। जिससे कथा में गति बनी रहती है। इस विधि में कथानक निर्माण बाह्या जगत् की अपेक्षा अंतः जगत् को ध्यान में रखकर किया जाता है। असाधारण स्मृतियों को चयन किया जाता है जो व्यक्ति के मन को प्रतिपल आन्दोलित करती रहती हैं। इन अतीत की स्मृतियों के माध्यम से ही पात्रों के जीवन और उनके मनोवैज्ञानिक भावों का सम्पूर्ण चित्रण होता है। प्रस्तुत उपन्यास की शैल्पिक रचना में उपन्यासकार ने मुख्यतया पूर्व दीप्ति शिल्प को अपनाया है । उपन्यास का आरंभ राजू गाइड की जेल से रिहाई के साथ होता है और उसके वर्तमान जीवन के प्रत्येक प्रसंग को लेखक ने उसके विगत जीवन की स्मृतियों से जोड़ा है और इसी तरह पूरे उपन्यास का कलेवर विकसित होता है। राजू ने स्वामी बनने से पूर्व अपने अतीत पर जो प्रकाश डाला वह पूर्णता पूर्व–दीप्ति पर आधारित था। कथानायक के मन में चलने वाले द्वन्द्व की स्थिति को विस्तारपूर्वक दर्शाने के लिए नायक बार–बार अतीत की स्मृतियों में खो जाता है। जैसेः– जेल से छूटते ही राजू जब बाहर नदी के किनारे आकर बैठा तो वेलान आकर उसके पास बैठ जाता है और अपनी बात बताने के पश्चात् जब वह राजू के मुँह की और देखना शुरू कर देता है तो राजू विचारपूर्ण मुद्रा में अपनी ठुड्डी सहलाकर देखता कि अचानक वहाँ एक पैगम्बरी दाढ़ी तो नहीं उग आई तभी वह दो दिन पूर्व जब हज्जाम से हजामत करवाने जाता है तो उसका प्रसंग याद आ जाता है जिसमें हज्जाम यह पहचान जाता है कि वह कोई छोटे–मोटे जुर्म में ही सजा काटकर आया है जैसे कि इन शब्दों से पता चलता है – "तुम्हारे चेहरे पर साफ लिखा है कि तुम दो साला कैदी हो, जिसका मतलब यह है कि तुम हत्यारे नहीं हो।" "तुम यह कैसे कह सकते हो ?"

"क्यों, अगर तुम सात साल काट के आए होते तो तुम्हारी शक्ल दूसरी हो जाती। कत्ल अगर साबित न हो तो, जानते हो, सिर्फ सात साल की सज़ा होती है।"

अजनबी बेलान की दो एक बातों का उत्तर सही देने पर वह उसकी नज़र में ऊँचा उठ जाता है और वह राजू से स्वामी बनने की यात्रा तक, उसके पूर्व जीवन का परिचय कथाकार ने उसके अतः जगत् में चलने वाले द्वंद्व के माध्यम से दिया है । राजू अपनी अतीत की स्मृतियों के माध्यम से ही अपना जन्म, जन्मस्थान, माता–पिता, शिक्षा व्यवसाय, पहले दुकानदारी व फिर गाइड के पेशे को अपनाने के पीछे छुपी उसकी आन्तरिक खुशी व अपनी पहचान का स्रोत बताता है। इस प्रकार मार्को का गाइड बनना तथा रोज़ी से प्रेमाकर्षण होना सभी ऐसे प्रसंग है जो बाह्मा वर्तमान घटनाओं के कारण अतः विचारों के सूत्र से जुड़कर चलते हैं। जैसे राजू अपने पढ़ाई के क्रम से पाठकों को परिचित करवाते हुए सोचता हैः "हर रोज सुबह बुड्ढा मास्टर मेरी उम्र के बीस लड़कों को इकठ्ठा करके खुद एक कोने में तकिये का सहारा लेकर बैठ

जाता था और बेंत हिलाता हुआ लड़कों को डाँटता रहता था। सारी क्लासें एक साथ लगती थीं मैं सबसे छोटी क्लास में था । हम लोगों को वर्णमाला और गिनती सिखाई जाती थी । मास्टर हम लागों से वर्णमाला ऊँचे स्वर से पढ़वाता था, फिर स्लेटों पर हम लोग अक्षरों की नकल करते थे, मास्टर हर लड़के की स्लेट देखता था और बार–बार गलतियाँ करने वालों को डाँटता और बेंत मारता था।"

मार्को का गाइड बनकर उसे मैप्पी की गुफाओं का ज्ञान करवाने से लेकर रोज़ी को नलिनी बनाकर बड़ी नर्तकी बनाना फिर मार्को की पुस्तक छपने का घटनाक्रम व तत्पश्चात् रोज़ी अर्थात् नलिनी के हस्ताक्षर स्वयं करके अपनी जेल यात्रा पर सारा वृत्तान्त राजू स्मृति के आधार पर बेलान को सुनाकर अपनी विगत जीवन का परिचय देता है जैसे एक उदाहरण प्रस्तुत है जिसमें राजू अपनी शान – शौकत का परिचय देते हुए वेलान से कहता है। – "मैं आँख के इशारे मात्र से एक क्षण मैं ट्रेन पर सीटें रिजर्व करवा सकता था, जरूरी काम के लिए नियुक्त व्यक्ति को इस काम के लिए मुक्ति दिलवा सकता था । निकले हुए अफसर को उसी पुरानी जगह पर फिर नियुक्त करवा सकता था। कोऑपरेटिव सोसाइटी के चुनाव में वोट कर सकता था, कमेटी में नामजदगी कर सकता था, लोगों को नौकरी दिला सकता था, बच्चों को स्कूल में दाखिल करवा सकता था" इस प्रकार राजू के जीवन के घटनाक्रम को पाठकों के सम्मुख रखने के लिए कथाकाार ने इस शिल्प का सफल प्रयोग किया है।

प्रतीकात्मक शिल्प : रचना में जब किसी मनोद्‌गार को अभिधा – शक्ति द्वारा प्रस्तुत करना अवांछनीय प्रतीत होता है तो रचनाकार प्रतीकों की योजना करता है इस विधि के माध्यम से कथाकार पात्रों के भावों, अनुभूतियों विचारों को भिन्न–भिन्न संकेतों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। इस शिल्प विधि के द्वारा आर. के. नारायण ने कई प्राकृतिक वस्तुओं के संकेतात्मक अर्थ दिए हैं। जैसे मन्दिर के पास बहती हुई नदी संसार की निरन्तरता की ओर संकेत करती है परन्तु नदी का सूख जाना संसार रूपी नदी की नश्वरता को व्याख्यायित करता है। इसके अतिरिक्त "पूरब के आकाश में उषा की लाली थी" जिसका संकेतित अर्थ है जिस प्रकार दिन का आगमन पूर्व दिशा की ओर से हो रहा था उसी प्रकार लोगों के जीवन में अब सुखों का प्रवेश हो रहा था। इसके अतिरिक्त राजू के अंतिम वाक्य भी इसी ओर संकेत करते है जैसे – राजू ने आँखे खोली, चारों ओर दृष्टि डाली और कहा, "वेलान, पहाड़ियों पर वर्षा हो रही है। मैं वर्षा को अपने पाँवों अपनी टाँगों पर आते महसूस कर रहा हूँ ....." और यह कहकर वह निढाल होकर वहीं गिर पड़ा । इस पर उपन्यास की प्रतीकात्मक इसके अर्थ गाम्भीर्य की ओर संकेत करती है।

यदि उपन्यास के शीर्षक की ओर देखा जाए तो इसका शीर्षक भी प्रतीकात्मकता है। 'गाइड' शीर्षक न केवल राजू के व्यवसाय की ओर संकेत करता है अपितु बाद में उसका स्वामी बनकर लोगों को एक नई राह दिखना भी गाइड की प्रतीकात्मक को सार्थक करता है । इस उपन्यास में सर्प नृत्य और संपेरिन जैसे शब्दावली को भी सावधानी के प्रतीक रूप में प्रयुक्त किया है जैसे मेरे जी में आया कि मणि

से कह दूँ, "सावधान रहना तुम्हें पता भी नहीं चलेगा वह ऐसा नाच नचाएगी कि अचानक तुम्हारी हैसियत मुझ जैसी बन जाएगी। इस संपेरिन से बचकर रहना।" इसी तरह रचनाकार ने कब्रिस्तान को भी सांसारिक बस्ती कहा है जहाँ पर लोग लाश को ठिकाने लगाने हेतु आते–जाते रहते हैं और वह स्थान भी इस संसार का ही एक भाग है जैसे – आखिर हमें जाना किधर है ? उधर तो मुझे कब्रिस्तान के अलावा और कोई बस्ती दिखाई नहीं देती।" अतः कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में रचनाकार ने स्थिति एवं घटना के स्पष्टीकरण हेतु प्रतीकात्मक शिल्प अपनाया है जो रचनाकार की लेखकीय प्रतिभा का परिचायक है। प्रतीकात्मकता के अंतर्गत ही लेखक ने एक स्थान पर महात्मा बुद्ध के उपदेश का उदाहरण दिया है जैसे : "एक बार एक औरत अपने बच्चे की लाश को सीने से लगाए हुए विलाप करती हुई बुद्ध महाराज के पास पहुँची। बुद्ध ने कहा जाओ जाकर यह मालूम करों, क्या शहर में कोई घर भी है, जहाँ मौत नहीं आई । उस घर से मुट्ठी भर सरसों लाकर मुझे दो, तब मै तुम्हे मौत पर काबू पाना सिखा दूँगा।" प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने मनुष्य की असक्षमता और ईश्वर की सक्षमता का संकेत दिया है और बताना चाहा है कि मनुष्य तो ईश्वर की इच्छा को कभी टाल नहीं सकता।

बिम्बात्मक शिल्प : बिंब जिसे अंग्रेजी में 'इमेज' कहा जाता है। उसका उपयोग छाया, प्रतिच्छाया, अनुकृति आदि के रूप में होता है। बिम्ब वह चेतन स्मृतियाँ है जो विचारों की मौलिक उत्तेजना के प्रभाव में उस विचार को सम्पूर्ण या आंशिक रूप में प्रस्तुत करती हैं जिसके माध्यम से भावों को अभिव्यक्ति मिलती है । दूसरी ओर रचना को पढ़कर पाठक के मस्तिष्क में बनने वाले चित्र भी बिम्ब कहलाते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में बिम्बात्मक शिल्प को भी स्थान मिला है जैसे कि कथानायक के मन में 'देवक' का बिम्ब। उसी बिंब को ध्यान में रखकर राजू भी वेलान को कहानी सुनाता है कि देवक नामक व्यक्ति जो प्रतिदिन मंदिर के फाटक पर भीख माँगा करता था और अपनी कमाई को खर्च करने से पहले देवता के चरणों में रख देता था। क्योंकि ऐसा करने से देवता का आशीर्वाद मिलता है। वास्तव में देवक का बिंब उसकी माँ द्वारा बचपन में सुनाई जाने वाली कहानी के परिणम स्वरूप ही उसके मन में बसा था जैसे कि राजू के शब्दों में, "मैं हुक्म जारी करता, "कोई कहानी सुनाओ।" माँ फौरन कहानी शुरू कर देती, "बहुत दिन पुरानी बात है, देवक नाम का एक आदमी था ..... " रोज रात को यह नाम सुनने में आता था । देवक हीरों या संत किस्म का आदमी था । उसके कारनामों की भूमिका समाप्त होने से पहले ही मुझे नींद आ जाती।" इसी प्रकार बच्चों के मन में अंधेरा आदि की स्थिति में जंगली जानवरों और भूत प्रेतों के बिम्ब भी घर कर जाते हैं लेखक ने राजू के बचपन में मन में बसने वाले इन भावों का वर्णन भी किया है जब राजू के पिता खाना खाने नहीं आते तो माँ उसे पिता से पूछने भेजती और जब वह पूछकर लौटता तो उसकी मनः स्थिति का चित्रण इन पंक्तियों में मिल जाता है यथा – दुकान की रोशनी और हमारे घर की दहलीज़ में रखी हुई लालटेन की मद्धम लौ के बीच सिर्फ दस गज का फासला था। लेकिन वहाँ से गुज़रते वक्त मेरा शरीर ठण्डे पसीने से तर हो जाता था । मुझे लगता था कि जंगली जानवर और भूत प्रेत अंधेरे से निकलकर मुझ पर टूट पड़ेंगे।

इस प्रकार उपन्यासकार के इस उपन्यास को पढ़कर पाठक के सम्मुख भी नर्तकी, संत, स्वामी, गाइड का बिंब साकारात्मक रूप से प्रस्तुत होता है। जो रचनाकार की बिंब ग्रह्यता का परिणाम है।

भाषिक शिल्प :– भाषा अभिव्यक्ति का वह साधन है जिसके प्रयोग से व्यक्ति अपने भावों, विचारों अनुभूतियों को बोलकर लिखकर एवं संकेतिक माध्यम से व्यक्त करता है। साधारण बोलचाल की अपेक्षा साहित्य की भाषा अधिक प्रभावशाली एवं कलात्मक होती है। पद्य एवं गद्य की भाषा समय देश और परिस्थितियों के अनुसार नये–नये रूपों में ढलती चली जाती है। साहित्य के अन्य रूपों की अपेक्षा उपन्यास की भाषा जनवादी भाषा के अधिक समीप होती है। 'गाइड' आर. के. नारायण द्वारा मूलरूप से अंग्रेजी भाषा में लिखा गया है जिसका बाद में हिन्दी अनुवाद किया गया। प्रस्तुत उपन्यास की भाषा में सम्प्रेषणीयता की गुणवत्ता इतनी अधिक है कि पाठक प्रत्येक संवाद एवं वाक्य के साथ–साथ रचना के मर्म तक पहुँचने का सामर्थ्य रखता है। सरलता एवं प्रसादात्मकता के कारण पाठक को कहीं कोई कठिनाई नहीं आती। दक्षिण भारत की सांस्कृतिक परंपरा की वाहक इस रचना की भाषा में अनुवादक ने अनुवाद करते समय हिन्दी शब्दावली के अतिरिक्त अंग्रेजी और उर्दू शब्दावली का भी खुलकर प्रयोग किया है। भाषा को ग्राह्य बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग भी सराहनीय है। जैसेः 'पड़ोस' का कोई सनकी मुर्गा बांग देकर सुबह होने की घोषणा करता, "राजू को और कोई काम नहीं था इसलिए उसने तारे गिनने शुरू कर दिए', 'लेकिन किताब को छिपाना लाश को छिपाने के बराबर था' 'सांठ–गांठ करना', 'बन्दर का नाच', 'मुँह का स्वाद बदलना', 'लाश ठिकाने लगाना', 'आँखों से चिनगारियाँ फूटना' दिल को तीर की तरह भेद दिया, 'जंगली बिल्ली की तरह नज़रें गड़ाना' खुशी से फूला नहीं समाना आदि इसके साथ ही उपन्यासकार ने संकेतिक भाषा का प्रयोग भी किया है। जिससे कृति में और भी निखार आ गया है। ऐसे कई स्थल हैं जहाँ पर लेखक ने बोलचाल की भाषा को छोड़कर संकेतों के माध्यम से पात्रों की बातचीत अथवा अर्थ ग्राह्यता को विकसित किया है जब रचनाकार ने संकेत भाषा को स्थान दिया है वहाँ पर यह अंगिक सम्प्रेषण पाठकों को पात्रों के मनोभावों से भी परिचित करवाता है। जैसे रोज़ी के प्रोग्राम शुरू करते वक्त रचनाकार ने संकेत भाषा को इस प्रकार वाणी दी है – "मैं समझदारी से अपना सर हिलाता, कई बार मैं अपने हाथों से ताल देता, जब भी मेरी नजरें उसकी नजरों से टकराती तो मैं आत्मीयता जतलाने के लिए मुस्करा देता । कई बार मैं आँखों और उंगलियों के इशारें से उसके नाच की आलोचना करता था सुधारने का सुझाव देता । ..... जब तक मैं पर्दे में से झांकते हुए आदमी को इशारा नहीं करता था, तब तक कोई शो शुरू नहीं हो सकता था। ..... जब मुझे लगता कि प्रोग्राम बहुत लम्बा हो गया है तो मैं अपनी रिस्टवॉच की तरफ देखता और सर को झटका देता । नलिनी समझ जाती कि अगले डॉस के बाद प्रोग्राम खत्म होना चाहिए।" इसके अतिरिक्त अन्य कई स्थलों पर भी इस भाषा को अपनाया गया है जैसे उसने नाटकीय ढंग से अपने सीने पर मुक्का मारकर कहा, "यह रहस्य यहीं बंद रहेगा।" तथा "मंगल कहाँ है ? अजनबी ने बाँह हिलाकर नदी के ऊँचे कगार के पार की ओर इशारा किया।" और "रोज़ी आँखें झपकाती हुई चुपचाप सुनती रही उसकी

समझ में नहीं आया कि वह इन भावनाओं का क्या उत्तर दें। उसने आँखें फाड़कर और भौंहे उठाकर देखा।" आदि।

12.4 सारांश :

अतः कहा जा सकता है कि 'गाइड' उपन्यास में सफलतम् अभिव्यक्ति के लिए लेखक ने विषयानुरूप अन्य शिल्प विधियों का प्रयोग किया है जिससे इस कृति को गरिमा तो प्रदान हुई है साथ ही साथ लेखक की अभिव्यक्ति क्षमता भी हमारे समक्ष आई है ।

12.5 अभ्यासार्थ प्रश्न :

प्र1. 'गाइड' उपन्यास के शिल्प–विधान पर विस्तार पूर्वक चर्चा कीजिए ।

____

____

____

____

____

____

____

____

प्र2. 'गाइड' उपन्यास के वर्णनात्मक शिल्प पर प्रकाश डालें ।

____

____

____

____

____

——

——

——

प्र3. ‘गाइड’ उपन्यास में पूर्व–दीप्ति शिल्प विधान का प्रयोग हुआ है । सोदाहरण स्पष्ट करें ।

———

——

——

——

——

——

——

——

12.6 पठनीय पुस्तकें :

1. ‘गाइड’ – आर. के. नारायण

————:::————

M.A. HINDI

COURSE CONTRIBUTORS

- **Prof. Neelam Saraf** **Lesson 1 to 4**
  Department of Hindi
  University of Jammu,
  Jammu

- **Dr. Sunita Sharma** **Lesson 5 to 8**
  Sr. Assistant Professor
  Guru Nanak Dev University,
  Amritsar

- **Dr. Bhagwati Devi** **Lesson 9 to 12**
  Lecturer in Hindi
  Department of Hindi
  University of Jammu,
  Jammu

Content Editing / Proof Reading :

- **Dr. Pooja Sharma**
  Lecturer in Hindi
  DDE University of Jammu,

* ***All rights reserve. No. part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from the DDE University of Jammu.***
* ***The Script writer shall be responsible for the lesson / script submitted to the DDE and any plagiarism shall be his/her entire responsibility.***

njLFk f'k{kk funs'kky;

DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION

tEew fo'ofo|ky;

University of Jammu

tEew

Jammu

ikB~; lkexzh

STUDY MATERIAL

,e0 ,0 fgUnh

M.A. (HINDI)

SESSION 2019 ONWARDS

ikB~;Øe la[;k Hin-403
Course Code - Hin-403

Hkkjrh; lkfgR;

l=&prqFkZ
SEMESTER - IV
vkys[k la[;k : 1-12
Lesson No. : 1-12

Dr. Anju Thappa
Course Co-ordinator

bl ikB~; lkexzh dk jpuk LoRo@izdk'kukf/kdkj njLFk f'k{kk funs'kky;] tEew fo'ofo|ky;] tEew&180006 ds ikl lqjf{kr gSA

All copyright privileges of the Material vest with the
Directorate of Distance Education University of Jammu, Jammu - 180 006